ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • रांची • आषाढ़ शुक्ल पक्ष 07 • विक्रम संवत 2080 • रविवार, 25 जून 2023 • वर्ष-24 • अंक- 142 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' की... पेज 12 पर

NEWS इन ब्रीफ

राज्य के सभी कोर्ट में 26 जून से डे कोर्ट में होगी सुनवाई

रांची। राज्य के सभी जिले के कोर्ट का समय 26 जून से बदल जायेगा। झारखंड हाई कोर्ट ने शनिवार को पत्र जारी कर डे कोर्ट में सुनवाई शुरू करने की सूचना जारी कर दी है। डे कोर्ट में अदालत के कामकाज का समय सुबह 10:30 से लेकर शाम के पांच बजे तक निर्धारित किया गया है। फिलहाल झारखंड की निचली अदालतों में मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई हो रही थी। रांची सिविल कोर्ट सहित झारखंड के सभी जिला न्यायालयों में पांच अप्रैल से मॉर्निंग कोर्ट में मुकदमों की सुनवाई हो रही थी, जो अब डे कोर्ट में होगी।

पश्चिमी सिंहभूम में आईईडी बम बरामद

पश्चिमी सिंहभूम। जिले के तुम्बाहाका एवं सरजोमबुरु में नक्सलियों ने पुलिस को नुकसान पहुंचाने के लिए रास्ते में आईईडी बम और स्पाइक होल लगाया था, जिसे सर्च अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने बरामद कर जंगल में नष्ट कर दिया। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने सरजोमबुरु गांव में एक कैंप लगाकर ग्रामीणों का साथ भोजन किया। ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि गांव में कुछ लोग बीमार हैं। इसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने एक कैंप लगाकर बीमार लोगों का जांच उपरांत दवा मुहैया कराया गया। जांच के उपरांत गांव में दो बच्चे मलेरिया से पीड़ित मिलने पर उनका इलाज किया गया।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सीए नीरज मित्तल को भेजा गया जेल

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने टेंडर मैनेज करने के लिए कमीशन लेने और करोड़ों रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में नीरज मित्तल को गिरफ्तार किया है। ईडी ने गिरफ्तार करने के बाद शनिवार को मित्तल को रांची के ईडी के विशेष न्यायालय में पेश किया, जहां से अदालत ने नीरज को 14 दिनों के न्यायिक हिरासत में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार (जेल) भेज दिया। नीरज की पेशी ईडी के इंचार्ज कोर्ट में विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत में हुई। उल्लेखनीय है कि नीरज मित्तल चार्टर्ड एकाउंटेंट है। उसपर जेल में बंद निर्लंबित अभियंता वीरेंद्र राम के पैसों के निवेश में सहायता करने का आरोप है।

मानवाधिकार : अध्यक्ष 8 सदस्यों की नियुक्ति की अधिसूचना जारी

रांची। झारखंड के मानवाधिकार आयोग में एक अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति होगी। इसको लेकर गृह कारा आपदा प्रबंधन विभाग ने अधिसूचना जारी की है। जारी अधिसूचना में कहा गया है कि झारखंड मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष के एक रिक्त पद और सदस्य के दो रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए हाई कोर्ट के रिटायर चीफ जस्टिस, हाई कोर्ट के रिटायर या कार्यरत जज के अलावा कार्यरत रिटायर जिला जज (जिनके पास सात साल का जिला न्यायाधीश के रूप में प्राप्त योग्यता है) आवेदन कर सकते हैं।

हाईकोर्ट में समरीलाल मामले की सुनवाई 14 जुलाई को

रांची। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा और जस्टिस आनंद सेन की खंडपीठ ने शनिवार को भाजपा के कांके विधायक समरी लाल के कास्ट सर्टिफिकेट को सही करार दिए जाने के हाई कोर्ट के एकल पीठ के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर डबल बेंच में आंशिक सुनवाई हुई। शनिवार को सुनवाई के दौरान प्रार्थी सुरेश बैठा के वकील ने बहस के लिए समय देने का आग्रह किया, जिसे स्वीकार करते हुए अदालत ने 14 जुलाई को मामले की अगली सुनवाई की तिथि निर्धारित की है।

बाबाधाम : श्रावणी मेले की सुरक्षा में मुस्तैद रहेंगे 8640 जवान

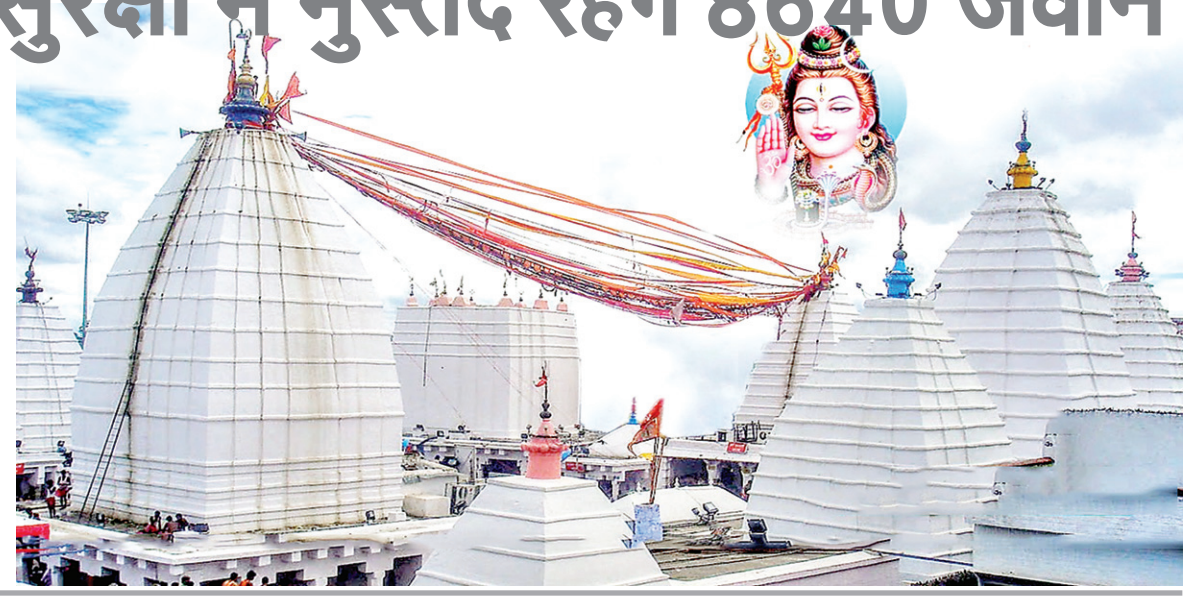

50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान

नवीन मेल संवाददाता। देवघर

देवघर श्रावणी मेला की तैयारियां जोरों पर हैं। करीब दो माह तक चलने वाले इस मेले में हाईटेक तकनीक के साथ 8640 हजार जवानों को सुरक्षा के लिए तैनात किया जायेगा। चार जुलाई से शुरू हो रहे मेले में 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के देवघर पहुंचने का अनुमान है।

मेले में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी और जवानों को दो महीने तक के लिए तैनात किया गया है। इनमें इंस्पेक्टर 120, एसआई और एएसआई 726, सशस्त्र हवलदार और आरक्षी 1080, लाठी हवलदार आरक्षी 6200, महिला लाठी बल 514, एसाल्ट ग्रुप दो, बम निरोधक दस्ता दो, आंशु गैस दस्ता दो एटीएस हिट टीम दो और श्वान दस्ता दो टीम रहेगी। साथ ही सीआईडी और विशेष शाखा के जवान भी तैनात रहेंगे। पुलिस मुख्यालय श्रावणी मेले को लेकर तैयारियां युद्ध स्तर कर रहा है। मेले में इस बार 8640 हजार सुरक्षाबलों की तैनाती होगी। राज्य के विभिन्न जिलों में तैनात जवानों के अलावा जैप और प्रशिक्षण केंद्र में तैनात जवानों को प्रतिनियुक्त किया जायेगा। यह प्रतिनियुक्ति 30 जून से एक सितंबर तक के लिए होगी। शहर के विभिन्न स्थानों में अस्थाई कंट्रोल रूम भी बनाए जा रहे हैं, जहां से पूरे शहर में लगे सीसीटीवी की मॉनिटरिंग की जाएगी। अधिक भीड़ वाली जगहों पर ड्रोन कैमरे से निगरानी की जाएगी। पुलिस के जवानों के अलावा रैफ, एनडीआरएफ के साथ साथ झारखंड जगुआर के बीडीएस टीम को भी तैनात किया जाएगा।

राज्यपाल ने देवघर में किया लोक संवाद, कहा

हर युवा को मिलेगा रोजगार

नवीन मेल संवाददाता। देवघर

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने शनिवार को जिले के मोहनपुर प्रखण्ड अंतर्गत ठाढ़ियारा पंचायत भवन में लोक संवाद किया। उन्होंने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक जिला में लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) को बढ़ावा दिए जाने से लोगों को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे, उनका जीवन स्तर आगे बढ़ेगा।

साथ ही कहा कि सरकार ने उज्ज्वला योजना के तहत फ्री कुकिंग गैस कनेक्शन दिया गया है। इस योजना से भारत का 95 फीसदी आबादी आच्छादित हो चुका है। नल-जल योजना के तहत पेयजलापूर्ति की जा रही है।

राज्यपाल ने कहा कि झारखंड प्रदेश में भी पारंपरिक खेती में रसायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इसलिए झारखंड भी शनै-शनै पूर्णरूप से ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर हो सकता है। जनसंवाद के दौरान राज्यपाल ने बिरसा हरित ग्राम योजना, बिरसा संवर्धन सिंचाई कूप निर्माण योजना, सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, सर्वजन पेंशन योजना के अलावा मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से सुयोग्य लाभुकों को लाभान्वित किया गया। साथ ही सखी मंडल की दीदियों को 24 लाख रुपये का क्रेडिट लिंकेज प्रदान किया।

सरकार का लक्ष्य हर बेघर का हो अपना घर

गोड्डा। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन शनिवार को गोड्डा जिले के सुन्दरपहाड़ी प्रखंड पहुंचे तथा यहां फुटबॉल मैदान में 'लोक संवाद कार्यक्रम' में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि उन्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 50 हजार से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है। एक महिला ने बताया कि पक्का मकान मिल जाने से बहुत खुशी हो रही है और अब मौसम की मार नहीं झेलनी पड़ती है, इस पर राज्यपाल ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक बेघर का अपना घर हो। सिर्फ घर ही नहीं, घर के साथ उन्हें पेयजल भी उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि एक सम्मानजनक जिंदगी के लिए लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। लोक संवाद में स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने भी अनुभव साझा किया। राज्यपाल ने जिले में एक लाख से अधिक महिलाओं के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा है और उनके परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हो रहा है। कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी विद्यालय, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का दर्जा प्राप्त विद्यालय की छात्राओं ने बताया कि इस विद्यालय में बड़ी संख्या में गरीब परिवार के बच्चे पढ़ते हैं। वह सभी भी भविष्य में वह शिक्षक बनकर बच्चियों को शिक्षा प्रदान करने का काम करेंगी। राज्यपाल ने संवाद में मौजूद लोगों की समस्याओं के निराकरण की बात भी कही। उन्होंने जिले के विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टाल का अवलोकन किया। साथ ही उपस्थित लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण भी किया।

कॉन्स्टेबल की हत्या में तीन आरोपी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़

हजारीबाग जिले के उरीमारी ओपी में तैनात कॉन्स्टेबल पंकज कुमार दास की हत्या का खुलासा हो गया है। हत्याकांड के पीछे उसकी पत्नी नैना देवी के प्रेम प्रसंग का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपित पत्नी और उसके प्रेमी मुन्नू पासवान सहित उसके सहयोगी ओम प्रकाश सिन्हा को गिरफ्तार किया है। तीनों आरोपितों ने अपराध स्वीकार कर लिया है। मुन्नू पासवान की निशानदेही पर पुलिस ने घटना में प्रयुक्त हथियार और बाइक बरामद कर लिया है। मृतक के पिता धीरज राम के आवेदन पर पुलिस ने तीनों आरोपितों के विरुद्ध पतरातू थाना में प्राथमिकी दर्ज किया है। रामगढ़ एसपी पियूष पांडे ने शनिवार को पुलिस मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि शुक्रवार की रात हजारीबाग जिला के उरीमारी ओपी में पदस्थापित कॉन्स्टेबल पंकज कुमार दास ड्यूटी कर घर जा रहा था। इस दौरान स्याल दस नंबर माइंस के निकट गोली मारकर उसकी हत्या कर दी गई। उन्होंने बताया कि एसडीपीओ वीरेंद्र चौधरी के नेतृत्व में टीम का गठन कर छानबीन शुरू की गई। ठोस जानकारी मिलने पर पुलिस ने उसकी पत्नी नैना देवी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में नैना देवी ने अपराध स्वीकार करते हुए प्रेमी और उसके साथी का नाम बताया। इसके बाद पुलिस ने छापेमारी कर नैना देवी के प्रेमी मुन्नू पासवान उर्फ मनोहर और उसके साथी ओम प्रकाश सिन्हा को सयाल से गिरफ्तार किया। आरोपितों के पास से दो देशी पिस्टल, एक देसी रिवाल्वर, चार जिंदा कारतूस, पांच खोखा, तीन मोबाइल और घटना में प्रयुक्त पल्सर बाइक जब्त किया है।

हेमंत सरकार में नियुक्तियों का दौर, युवाओं में जगी उम्मीद

नवीन मेल संवाददाता। रांची

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 22 जून को 2250 युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपा। इसके साथ ही आगे कई विभागों में नियुक्तियों का दौर जल्द शुरू होने वाला है। पिछले दो महीने में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बड़े पैमाने पर नियुक्ति पत्र सौंपे हैं। यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि सरकार ने चुनाव से पहले युवाओं को रोजगार देने का जो दावा किया था, सरकार उसे पूरा करने की कोशिश पूरी ईमानदारी से कर रही है। 2019 में सरकार गठन के कुछ ही महीनों बाद पूरी दुनिया कोरोना के चपेट में आ गयी थी। इस दौरान सरकार को काम करने का मौका नहीं मिल पाया। दो साल बाद कोरोना से शिकंजे से निकलने पर सरकार ने नियुक्तियों का पिटारा खोला। युवाओं को खुले हाथों नौकरी देने की प्रक्रिया शुरू हो गयी। हेमंत सोरेन ने अब तक आठ हजार से ज्यादा नियुक्ति पत्र सौंपे हैं। निजी क्षेत्रों में भी साढ़े तेरह हजार नौकरियां दिलवाई है। युवाओं में इन नियुक्तियों को लेकर खासा उत्साह है और उनमें आशा की एक किरण जगी है। 22 जून को मुख्यमंत्री ने घोषणा की थी कि सरकार बहुत जल्द 6 हजार शिक्षकों और पुलिस विभाग में बहाली करेगी।

मामला : अंकिता हत्याकांड

हाईकोर्ट ने आर्थिक मदद की मांगी जानकारी

रांची। झारखंड हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में शनिवार को दुमका में बीते साल 23 अगस्त को हुए पेट्रोल कांड में नाबालिग छात्रा अंकिता की हत्या कर दिए जाने के मामले में सुनवाई हुई। मामले में एमिकस क्यूरी रमित सत्येंद्र की ओर से कोर्ट को जानकारी दी गई कि राज्य सरकार ने विक्टिम फैमिली को अब तक की सहायता के रूप में 10 लाख रुपये की आर्थिक मदद की है। इस पर कोर्ट ने अगली सुनवाई में एमिकस क्यूरी को यह बताने को कहा है कि मृतक लड़की के परिजनों को और क्या-क्या बेनिफिट दी गई है, इसकी जानकारी दी जाए।

2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करेगा अमेजन

एजेंसी। वाशिंगटन

ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन के सीईओ एंडी जेसी ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद कहा कि कंपनी 2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है। अमेजन ने अब तक भारत में लगभग 11 बिलियन डॉलर का निवेश किया है और 2030 तक लगभग 15 बिलियन डॉलर और निवेश करने की योजना है। जेसी ने शुक्रवार को अमेरिका में पीएम मोदी से मुलाकात के बाद ट्वीट किया, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक अच्छी रही। इस दौरान 2030 तक भारत में 26 अरब डॉलर का निवेश करने की अमेजन की प्रतिबद्धता पर चर्चा हुई। अमेजन के सीईओ ने कहा, एक साथ काम करते हुए, हम स्टार्टअप का समर्थन करेंगे, नौकरियां देंगे, निर्यात को सक्षम करेंगे और व्यक्तियों और छोटे व्यवसायों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए सशक्त बनाएंगे। भारत अमेजन के लिए एक प्रमुख बाजार है, जहां उसने पिछले दशक में ई-कॉमर्स में 6.5 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है। इस साल मई में, ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन की क्लाउड आर्म अमेजन वेब सर्विसेज (एडब्ल्यूएस) ने देश में क्लाउड सर्विस के लिए बढ़ती कस्टमर की मांग को पूरा करने के लिए 2030 तक भारत में क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर में 1,05,600 करोड़ रुपये (12.7 बिलियन डॉलर) का निवेश करने की योजना की घोषणा की। इस निवेश से 2030 तक भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 1,94,700 करोड़ रुपये (23.3 बिलियन डॉलर) का योगदान होने का अनुमान है।

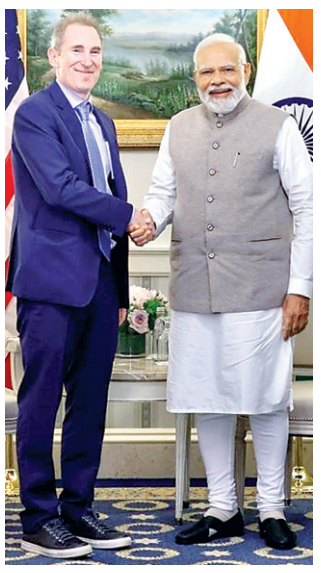

हाईकोर्ट ने टी शर्ट-टॉफी बांटने के मामले में मांगी रिपोर्ट

रांची। झारखंड हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में शनिवार को राज्य की तत्कालीन रघुवर सरकार के कार्यकाल में वर्ष 2016 में राज्य स्थापना दिवस पर टी शर्ट और टॉफी बांटने से संबंधित पंकज कुमार की जनहित याचिका पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने राज्य सरकार को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 11 अगस्त को होगी। वर्ष 2016 में स्थापना दिवस समारोह के पहले 13- 14 नवंबर को स्कूली बच्चों को बांटने के लिए साढ़े तीन करोड़ की टी शर्ट और 33 लाख रुपये की टॉफी खरीदी की गयी। उसके अगले दिन ही 15 नवंबर को राज्य भर के 10 हजार स्कूलों में बच्चों के बीच इसका वितरण कर दिया गया।

मॉनसून के आते ही बढ़ी चिंता, आवासीय स्कूलों में परेशानी अधिक

44 हजार सरकारी स्कूलों में नहीं है तड़ित चालक

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मौसम विभाग के मुताबिक झारखंड में मॉनसून प्रवेश कर चुका है। वहीं 25 जून से भारी बारिश की संभावना भी जतायी गयी है। भारी बारिश के बीच बिजली गिरने की भी बात कही गयी है। वहीं आज से राज्य के स्कूलों में पढ़ाई भी शुरू हो चुकी है। भारी बारिश और बिजली गिरने के पूवार्नुमान के बीच एक बार फिर स्कूलों की सुरक्षा को लेकर चिंता सामने आ रही है। सुरक्षा की यह चिंता आकाशीय बिजली गिरने की है। ऐसा इसलिए है क्योंकि राज्य के सरकारी स्कूलों में तड़त चालक है ही नहीं। बीते 10 सालों में राज्य के अधिकांश स्कूलों में लगे तड़ित चालक या तो काम नहीं कर रहे हैं या फिर चोरी हो चुके हैं।

बच्चों की सुरक्षा को लेकर स्कूलों में लगभग 10 साल पहले तड़त चालक लगाए गए थे। इसके बाद से स्कूलों में लगे तड़ित चालक या तो खराब हो गए या फिर चोरी हो गए हैं। आंकड़े के मुताबिक राज्य के 18 जिले में लगे 11544 तड़ित चालक चोरी हो चुके हैं। स्कूलों की ओर से चोरी गए तड़ित चालकों को लेकर एफआइआर दर्ज कराया जा चुका है। आंकड़े में देखें तो रांची से 1158, लातेहार से 100, हजारीबाग से 1324, रामगढ़ से 560, पलामू से 1700, गुमला से 342, सिमडेगा से 135, गढ़वा से 107, लोहरदगा से 162, गोड्डा से 450, जामताड़ा से 850, पाकुड़ से 400, जमशेदपुर से 910, देवघर से 508, धनबाद से 368, बोकारो से 680, साहिबगंज से 590 और चतरा से 1200 तड़ित चालक चोरी हो चुके हैं। दरअसल आसमानी बिजली गिरने का खतरा तो किसी भी स्कूल में लगा रहता है, लेकिन आवासीय स्कूलों को लेकर चिंता अधिक नजर आती है। इन स्कूलों में बच्चे रहते हैं। तड़ित चालक नहीं लगे होने की वजह से इन स्कूलों में खतरा बना रहता है।

रांची-पटना के बीच 27 से चलेगी वंदे भारत ट्रेन

नवीन मेल संवाददाता। रांची

पटना और रांची के बीच अत्याधुनिक एवं विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त हाई स्पीड 'वंदे भारत ट्रेन' का परिचालन प्रारंभ किया जा रहा है। पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेंद्र कुमार ने बताया कि 27 जून को रांची से पटना के लिए 'वंदे भारत ट्रेन' का परिचालन उद्घाटन स्पेशल ट्रेन 02439 के रूप में किया जायेगा। 28 जून से ट्रेन सं. 22349 और 22350 पटना-रांची-पटना 'वंदे भारत ट्रेन' का नियमित परिचालन किया जाएगा। ट्रेन पटना और रांची से मंगलवार को छोड़कर सप्ताह में 6 दिन चलेगी।

उन्होंने बताया कि 27 जून को ट्रेन संख्या 02439 रांची-पटना 'वंदे भारत उद्घाटन स्पेशल' रांची से सुबह 10.30 बजे खुलकर मेसरा, बरकाकाना, चरही, गया, जहानाबाद होते हुए शाम को 5.25 बजे पटना जंक्शन पहुंचेगी। 28 जून से 22349 'पटना-रांची वंदे भारत ट्रेन' पटना से सुबह 7 बजे खुलकर, 8.25 बजे गया, 9.35 बजे कोडरमा, 10.33 बजे हजारीबाग, 11.35 बजे बरकाकाना, 12.20 बजे मेसरा रूकते हुए 13.00 बजे रांची पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन सं. 22350 'रांची-पटना वंदे भारत' रांची से अपराह्न 4.15 बजे खुलकर 4.35 बजे मेसरा, 5.30 बजे बरकाकाना, 6.30 बजे हजारीबाग, 7.30 बजे कोडरमा, 8.45 बजे गया रूकते हुए रात 10.05 बजे पटना जंक्शन पहुंचेगी।

कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न हो : सुदेश

नवीन मेल संवाददाता। सिल्ली

सिल्ली प्रखंड कार्यालय समीप सोनाली लॉज में झारखंड शिक्षा परियोजना के तत्वावधान में प्रखंड स्तरीय 'रुआर स्कूल' 2023 कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि विधायक सुदेश कुमार महतो व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया । विधायक सुदेश कुमार महतो ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार सर्व शिक्षा अभियान के तहत ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालय तक लाने के लिए रुआर स्कूल अभियान चला रही है । इस अभियान के तहत गांव-गांव जाकर वैसे बच्चों को विद्यालय वापसी कराना है जो किसी कारणवश स्कूल नहीं जा रहे हैं। कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित ना इसके लिए तभी मिलकर प्रयास करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 06 से 18 वर्ष आयु वर्ग के छीजित बच्चों का विद्यालय में वापस नामांकन कराना एवं विद्यालय से जोड़कर उसका ठहराव सुनिश्चित करना है।कार्यशाला में 22 जून से 15 जुलाई तक चलने वाला कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधि, प्रबंधन समिति के पदाधिकारी सदस्य तथा स्कूल के शिक्षक पोषक क्षेत्र का भ्रमण कर स्कूल के चौखट से दूर रह रहे 6 से 18 आयु वर्ग के बच्चो को पुनः स्कूल तक लाने के मकसद से बच्चों का स्कूल में नामांकन करवाने पर जोर दिया गया। कार्यशाला में तिथिवार कार्यक्रमों के निष्पादन की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के संचालन बी पी ओ मनोज कुमार और धन्यवाद धन्यवाद ज्ञापन प्रखंड प्रसार पदाधिकारी विमल कांत झा ने किया।इस मौके पर विभिन्न पंचायतों के मुखिया, उत्क्रमित उच्च विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, बीआरपी व सीआरपी आदि उपस्थित थे।

ईदुउल अजहा व घूरती रथ मेला को लेकर बैठक आयोजित

रातू। 29 जून को होने वाली ईदउल अजहा व घूरती रथ मेला का त्योहार को लेकर शनिवार को रातू थाना परिसर मे शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी। रातू अंचल अधिकारी प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में शांति समिति के सदस्य, पंचायतो के जनप्रतिनिधि, समाज के प्रबुद्ध लोग व विभिन्न राजनीतिक दलो के गण्यमान्य लोग शामिल हुए। बैठक में बकरीद व रथ मेला का त्यौहार पूर्व की भांति शांतिपूर्ण तरीके से मनाने का निर्णय लिया गया। वही सर्व समिति से निर्णय लिया गया कि त्योहार में असामाजिक तत्वो जो आपसी सद्भाव को बिगाड़ने की कोशिश कर सकते है उसको चिन्हित कर पुलिस को सूचना दे।

तीन दिवसीय कार्यक्रम अग्रसेन भवन में आयोजित

सावन महोत्सव के पोस्टर का हुआ विमोचन

नवीन मेल संवाददाता। रांची

अग्रवाल सभा महिला समिति के तत्वावधान में 5 से 7 जुलाई तक महाराजा अग्रसेन भवन में तीन दिवसीय सावन महोत्सव का आयोजन किया गया है। सावन महोत्सव की संयोजिका अलका सरावगी ने बताया कि सावन मेले में विभिन्न राज्यों एवं शहरों की आत्मनिर्भर एवं प्रसिद्ध प्रभावशाली महिलाएं की कलाकृतियां का एक मंच पर प्रदर्शन, तथा कई सुंदर एवं आकर्षक चीजें उपलब्ध रहेगी, मेले में नवीनतम डिजाइनर की राखियां सलवार सूट, बेडशीट, कलात्मक साड़ियां, स्पेशल सामग्रियां अचार, पापड़, बड़ी, मुरब्बा, तथा अन्य कई विभिन्न सामग्रियां उपलब्ध रहेगी। सावन महोत्सव में अग्रवाल सभा का भी सहयोग है। सावन महोत्सव के प्रचार- प्रसार हेतु आज अग्रसेन भवन में सावन महोत्सव के पोस्टर का विमोचन किया गया। विमोचन के कार्यक्रम में अग्रवाल सभा के अध्यक्ष नंदकिशोर पाटोदिया, उपाध्यक्ष सज्जन पाड़िया, महोत्सव संयोजका अलका सरावगी, सह संयोजका अंशु नवेटिया एवं रीना सुरेखा, रूपा अग्रवाल, रीता केडिया, बबीता नारसरिया, मधु सर्राफ, बीना मोदी, उर्मिला पाड़िया, प्रीति पोद्दार, आदि उपस्थित थीं। उक्त जानकारी अग्रवाल सभा के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने दी।

बेड़ो में विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का हुआ आयोजन

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड कार्यालय के साभागार में शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वधान में विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बीडीओ डा प्रवीण कुमार ने विधिक कानून से संबंधित जानकारियां दी। उन्होंने कहा कि विधिक सेवा के तहत गरीब लोगों को सुलभ न्याय दिलाने का कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण विधिक सेवा से संबंधित योजना का लाभ अवश्य उठाएं। साथ ही उन्होंने प्रखंड में चल रहे विकास और जन कल्याणकारी योजना की जानकारी दीं। उन्होंने कहा कि सिर्फ योजनाएं लेना ही नहीं जानकारी भी रखना बहुत महत्वपूर्ण है।सीओ सुमंत तिर्की ने लोगों को अपने अधिकार के प्रति जागरूक होने आह्वान करते हुए सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रमुख योजनाओं सहित अन्य योजनाओं के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दीं। साथ ही विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा दिए जाने वाले कानूनी सेवाओ के बारे में बतलाया।

लापुंग प्रखंड में चार दिनों से दर्जनों घरों की बिजली हुई ठप

जीवन रक्षक दवाइयां होने लगी हैं खराब : गंगाधर

नवीन मेल संवाददाता। लापुंग

लापुंग प्रखंड के ककरिया, डाडीऔर मालगो, महुगांव सहित कई पंचायतों के दर्जनों गांवों में पिछले चार दिनों से विद्युत आपूर्ति ठप रहने के कारण जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। बिजली के अभाव में गांव के ग्रामीण त्राहिमाम कर रहे हैं। लेकिन विद्युत विभाग के पदाधिकारी और कर्मी मामले को लेकर उदासीन हैं। विद्युत विभाग के कर्मियों के अनुसार कमडारा से लापुंग ककरिया तक विद्युत ट्रांसमिशन लाइन में फॉल्ट आ गई है लेकिन 4 दिनों के बाद भी फॉल्ट खोजी नहीं जा सकती है। फॉल्ट नहीं मिलने के कारण विद्युत व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। इसे लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। समाचार लिखे जाने तक शनिवार को रात 8:00 बजे तक विद्युत आपूर्ति बहाल नहीं हो पाई थी। विभागीय पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि भी मामले को अब तक संज्ञान में नहीं ले सकते हैं। विद्युत व्यवस्था ठप होने के कारण सभी तरह के जरूरी काम, मोबाइल सेवा, इंटरनेट सेवा, कुटीर एवं लघु उद्योग पूरी तरह ठप पड़ गए हैं। मोबाइल और इंटरनेट व्यवस्था ठप होने के कारण सरकारी शिक्षक शिक्षिकाएं अपनी ऑनलाइन उपस्थिति नहीं बना पा रहे। बच्चों का पठन-पाठन ठप पड़ गया है। विद्युत व्यवस्था नहीं रहने के कारण उस पर निर्भर पेयजल आपूर्ति भी ठप हो गई है। विद्युत व्यवस्था के ठप्प रहने के के कारण अभूतपूर्व स्थिति उत्पन्न हो गई है। दर्जनों गांव अंधेरे में डूबे हैं और इस समस्या को देखने वाला कोई भी नहीं है। इससे लोगों का दैनिक कामकाज बुरी तरह प्रभावित हो गया है। काकरिया के पूर्व मुखिया और समाजसेवी गंगाधर साहु ने कहा कि लगातार चार दिनों से बिजली आपूर्ति ठप पड़ गई है। इससे लोगों के समक्ष बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है। जीवन रक्षक दवाइयां खराब होने लगी है। आपातकालीन स्थिति में काम आने वाला इनवर्टर भी दो दिन पहले ही बंद हो चुका है। समाजसेवी और विश्व हिंदू परिषद के मंत्री समीर कुमार, ककरिया के रोहित कुमार, सेमला के रूपेश पाठक, बिरमकेल नवाटोली के बुधनाथ मुंडा , गुदगुद के लाल दिलीप कुमार सिंह सहित दर्जनों लोगों ने 4 दिनों से बिजली व्यवस्था ठप रहने के कारण भारी आक्रोश प्रकट करते हुए विद्युत विभाग के अधिकारियों को जिम्मेवार ठहराया है। उन्होंने कहा कि आखिर क्या कारण है कि 4 दिनों से पूरा लापुंग अंधेरे में डूबा हुआ है और कोई भी जिम्मेवार पदाधिकारी और कर्मचारी कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है ?

रांची में हथियार के साथ दो बदमाश गिरफ्तार

रांची। कांके थाना पुलिस ने हथियार के साथ दो बदमाश को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार बदमाशों में लोअर बाजार थाना निवासी राजन उर्फ सरफराज और जगरनाथपुर थाना निवासी मो अबरार शामिल है। इनके पास से एक देशी कट्टा, दो गोली, दो मोबाईल, एक स्कूटी, तीन फर्जी आधार कार्ड, 10 हजार नकद रुपये और एक स्मार्ट वाच बरामद किया गया है। ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने शनिवार को बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि कांके थाना क्षेत्र के संग्रामपुर स्थित रिंग रोड के समीप दो बदमाश स्कूटी लेकर संदिग्ध अवस्था में हथियार के घूम रहे है। एसपी ने बताया कि सूचना के बाद कांके थाना प्रभारी अभास कुमार के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए राजन उर्फ सरफराज के पास से एक लोडेड देशी कट्टा,10 हजार नकद, एक मोबाईल और एक स्मार्ट वाच बरामद किया ।

प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को मिलेगा पांच दिनों का अवकाश

रांची। ट्रेनिंग पूरी कर लौटे प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को पांच दिनों का अवकाश मिलेगा। इस संबंध में आईजी ट्रेनिंग प्रिया दूबे ने आदेश जारी किया है। जारी आदेश में कहा गया है कि झारखंड पुलिस मेंस एसोसिएशन ने बीते 19 जून को राज्य में पीटीसी और एसपीसी प्रशिक्षण पूरी किये प्रशिक्षु पुलिसकर्मियों को पांच दिनों का अनुमति अवकाश स्वीकृत करने का अनुरोध पुलिस मुख्यालय से किया है। इसको लेकर जेएपीटीसी पदमा, सीटीटी मुसाबनी, जंगल वारफेयर स्कूल, नेतरहाट विस्थापित भवन धुर्वा, जैप-02, जैप-03, जैप-05, जैप जैप-07, जैप-08, जैप-10 में पीटीसी और एसपीसी प्रशिक्षण पूर्ण किये सभी प्रशिक्षु को उनके पैतृक जिला ईकाई में वापस होने के बाद पांच दिनों का अनुमति अवकाश स्वीकृत किया जाता है। सभी जिले के एसपी और कमांडेंट को निर्देश दिया जाता है कि अपने-अपने जिला और ईकाई में योगदान देने के बाद प्रशिक्षु आरक्षियों को अनुमति अवकाश अपने स्तर से सुविधानुसार सुनिश्चित करें।

मवेशी चोरी करने वाला आरोपी गिरफ्तार, गया जेल

रांची। लालपुर थाने की पुलिस ने मवेश चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जेल जाने वाले आरोपी का नाम अफरोज कुरैशी है और वह गुदड़ी कुरैशी मुहल्ले का रहने वाला है। बताया जा रहा है कि 23 जून को रेडियम रोड से सहदेव प्रसाद नामक व्यक्ति की तीन मवेशी चोरी हो गई थी। इस मामले में लालपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई। दर्ज प्राथमिकी के आधार पर पुलिस ने आरोपी को दबोचा लिया। पुलिस ने जिससे मवेशी चोरी की गई थी, उस गाड़ी को भी जब्त किया है। पूछताछ में आरोपी ने पुलिस के समक्ष अपना जुर्म स्वीकार किया है।

मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण को लेकर बैठक

घर-घर सर्वेक्षण करेंगे बीएलओ

नवीन मेल संवाददाता। बेड़ो

आगामी लोकसभा और विधानसभा चुनाव को लेकर चुनाव आयोग ने काम करना शुरू कर दिया है। उसी क्रम में प्रखंड सह अंचल कार्यालय के सभागार में शनिवार को मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर सीओ सुमंत तिर्की की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें निर्वाचन आयोग द्वारा प्राप्त निर्देश के आलोक में 2024 के निर्वाचन के मद्देनजर सभी बीएलओ को घर-घर सर्वेक्षण करते हुए मतदाता सूची में फोटो तथा नाम सुधार का निर्देश दिया गया। इस दौरान सीओ ने कहा कि निर्वाचन कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सभी बीएलओ तथा सुपरवाइजर को पारदर्शिता तथा निष्ठा पूर्वक समर्पित होकर गंभीरता से कार्यों का निष्पादन करने का निर्देश दिया वही सभी बीएलओ को घर-घर सत्यापन कर छूटे हुए मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में चढ़ाने का निर्देश दिया गया इसके अलावा प्रपत्र के माध्यम से 18 प्लस के युवक-युवतियों को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने का भी निर्देश दिया गया। बैठक में मतदाता सूची को दुरुस्त करने,वोटिंग प्रतिशत कैसे बढ़ाया जाए। नए मतदाताओं के नाम जोड़ने, मृत व पलायन कर गए मतदाताओं का नाम हटाने सहित त्रुटियों को दुरुस्त करने पर चर्चा की गई।

सरकार का उद्देश्य सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकित हो : बीईईओ

मांडर। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग झारखंड के द्वारा स्कूल रूआर 2023 का प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण संत अन्ना बालिका उच्च विद्यालय मांडर के सभागार में प्रखंड प्रमुख फिलिप सहाय एक्का की अध्यक्षता में की गई।कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यअतिथियोंद्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।मांडर प्रमुख ने विद्यालय में शत प्रतिशत नामांकन एवं ठहराव को ध्यान में रखते हुए सभी शिक्षकों एवं जनप्रतिनिधियों से मिलकर इस अभियान को सफल बनाने की बात कही वहीं अंचलाधिकारी विजय हेमराज खलखो ने बताया कि मुख्य रूप से समग्र शिक्षा अभियान के मुख्य लक्ष्य 6 से 18 आयु वर्ग के सभी बच्चों को विद्यालय की शिक्षा को सभी नौनिहालों से पूर्ण कराना ही इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है।विगत वर्षों में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

श्री श्याम मंदिर में भंडारे का हुआ आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। रांची

श्री श्याम मित्र मंडल द्वारा निर्मित व संचालित हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में शनिवार को 68 वां श्री श्याम भंडारा का भव्यता के साथ आयोजन किया गया। श्री श्याम भंडारे के यजमानश्री पवन केड़िया कुसुमलता अमित रेखा निरज शिल्पा मयंक कुश प्रकृत केड़िया ने अपने परिवार के साथ मंदिर में विराजमान खाटू नरेश लड्डू गोपाल शालिग्राम बजरंगबली शिव परिवार गुरुजनों को भंडारे का भोग अर्पित किया। मंडल के पहले महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया व उपमंत्री अनिल नारनोली की अगुवाई में केडिया परिवार ने भोग भजन का गायन करके खाटू नरेश की मनुहार की। आओ आओ भोग लगाओ बाबा श्याम जी रुच रुच भोग लगाओ बाबा श्याम जी के भोग भजन का गायन कर भगतजन भावविभोर होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे थे। मण्डल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी की निगरानी में भंडारे का प्रसाद मंदिर में ही बनाया गया। भोग लगे प्रसाद को विशाल भंडारे में केड़िया परिवार ने मिश्रित कर महाप्रसाद बनाया। सर्वप्रथम केड़िया परिवार ने मंदिर के आचार्य को चन्दन वंदन करके भंडारे का प्रसाद खिलाकर दक्षिणा प्रदान कर सपरिवार आशीर्वाद प्राप्त किया। आज के भंडारे में पकोड़ी की कढ़ी वेज पुलाव केसरिया जलेबी का प्रसाद बनाया गया था। अन्नपूर्णा सरावगी के द्वारा आमफल का वितरण किया गया। समाजसेवी विष्णु जालान की तरफ से सत्तू मसालेदार पानी का प्रबंध किया गया था। भंडारे का समय होते ही मंदिर परिसर भक्तों से भर गया था। हरमू रोड में भक्तों की लंबी लंबी कतारें लग गई थी। श्री गणेश जी महाराज की जय जयकारों के बीच प्रमुख यजमान पवन केड़िया एवम उनके परिवारजनों ने भंडारे का प्रसाद वितरण प्रारंभ किया। 3000 से ज्यादा भक्तों ने भंडारे का महाप्रसाद प्राप्त किया। खाटू नरेश की जय जयकारों से मंदिर परिसर के साथ साथ हरमू रोड गूंज रहा था।

यात्री से ऑटो चालक ने की लूटपाट, दो गिरफ्तार

रांची। सदर थाने की पुलिस ने यात्री से लूटपाट करने वाले ऑटो चालक और उसके भाई को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में मो सिराजुल और मो शेख अजीम शामिल है। दोनों कांटाटोली गढ़हाटोली के रहने वाले हैं। जानकारी के अनुसार गिरिडीह निवासी इम्तियाज अंसारी शुक्रवार की रात बिरसा चौक से ऑटो से कांटाटोली खादगढ़ा बस स्टैंड जाने के लिए ऑटो में बैठा था। चालक उसे इधर-उधर घुमाते हुए गढ़हाटोली ले गया और उससे 15 सौ रुपए लूट लिया। इस राशि को आरोपी ने अपने भाई को दे दिया। हो हल्ला करने के बाद आसपास में मौजूद लोग जमा हुए और भाग रहे ऑटो चालक को पकड़ लिया। उसकी जमकर धुनाई की। इसके बाद सदर थाने की पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने उसके भाई को भी पकड़ा। पूछताछ में आरोपियों ने पुलिस के समक्ष अपना जुर्म स्वीकार किया है।

मांडर प्रखंड सभागार में विविध सेवा प्राधिकार सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

मांडर। प्रखण्ड सभागार में झारखंड राज्य विविध सेवा प्राधिकार राँची के तत्वावधान में विविध सेवा सह सशक्तिकरण का एक दिवसीय प्रखण्ड स्तरीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मांडर प्रखंड कार्यालय के अधिकारी, अंचल के अधिकारी, पशुपालन विभाग के कर्मचारी, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कर्मचारी,खाद्य आपूर्ति विभाग, स्वास्थ विभाग के चिकिसक एवं अन्य स्टाफ, जेएसएलपीएस प्रभारी,बाल विकास परियोजना पदाधिकारी एवं कर्मचारीसहित अन्य विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने विभागीय विकास योजनाओं एवं जनहित में की जा रहे कार्यो की जानकारी दी।अंचलाधिकारी विजय हेमराज खलखो ने उपस्थित लाभार्थियों को विविध प्राधिकार के द्वारा ग्रामीणों के लिए निःशुल्क न्यायायिक सुविधाओं की विस्तृत जानकारी दी साथ ही सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए ज्यादे से ज्यादे उनका लाभ उठाने के लिए जागरुक होने की बात कही।बीडीओ सुलेमान मुंदरी ने बताया कि अशिक्षा एवं अंधविश्वास के कारण समाज में फैली कुरीतियों डायन बिसाही,बाल विवाह, नशापान,जादू टोनाआदि से दूर रहें और अपने समाज का विकास पर ध्यान केंद्रित करें। घरेलू विवाद, निःशुल्क कानूनी सुझाव या सहायता प्राप्त करें। आई.आई. डी. ए. सुधीर बड़ा ने भी विविध सेवा प्राधिकार के माध्यम से मिलने वाली निःशुल्क सहायता की जानकारी दिया और बिना संकोच के पीएलवी से मिल कानूनी सहायता लेने की बात कही।डालसा के सचिव राकेश रंजन कुमार ने सभी विभाग से आए पदाधिकारी , प्रतिनिधियों एवं लाभार्थियों को कहा कि सभी विभाग में आपके हित को देख कर ही विकास योजनाओं का क्रियान्वयन होता है।

नामांकन लापुंग प्रखंड मुख्यालय में स्कूल रूआर 2023 का कार्यक्रम आयोजित

सरकारी योजनाओं से होगा समाधान : लकड़ा

नवीन मेल संवाददाता। लापुंग

यदि गरीबी या किसी अन्य कारण से स्कूली छात्र-छात्राएं विद्यालय से ड्रॉपआउट होते हैं तो शिक्षक उन्हें चिन्हित करें सरकारी योजनाओं के लाभ से यदि किसी का पलायन रुकता है अथवा उसे पुनः स्कूल से जोड़ा जा सकता है तो लापुंग प्रखंड में ऐसे परिवार को सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। लेकिन यह सुनिश्चित करें कि किसी कीमत पर कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न हो। शत-प्रतिशत नामांकन बच्चों का ठहराव तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा के माध्यम से स्कूल रुआर 2023 के कार्यक्रम को सफल बनाया जाएगा। उक्त बातें लापुंग के प्रखंड विकास पदाधिकारी इमानुएल जयवीरस लकड़ा ने स्कूल रूआर 2023 कार्यक्रम को लेकर लापुंग प्रखंड मुख्यालय में आयोजित कार्यशाला के दौरान कही। इस मौके पर लापुंग के प्रखंड प्रमुख कंचन उरांव ने कहा कि पंचायत के प्रतिनिधि, विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य तथा शिक्षक शिक्षिकाएं मिलकर एक एक बच्चों का नामांकन सुनिश्चित करेंगे तो बेहतर नतीजा निकल सकता है। इस मौके पर प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सुनील कुमार केशरी व बीआरपी बबलू कुमार महतो ने स्कूल रुआर 2023 कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी और कहा कि लापुंग प्रखंड में विद्यालय के शिक्षक एक एक बच्चों का सर्वे कर 6 से 18 साल के बच्चों को चिन्हित करना तथा सभी का नामांकन विद्यालयों में कराना सुनिश्चित करें। कार्यशाला की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी इमानुएल जयवीरस लकड़ा तथा संचालन सीआरपी सुनील कुमार गुप्ता ने किया। वहीं कार्यक्रम के दौरान उप प्रमुख विश्वनाथ मुंडा, सीडीपीओ पूजा कुमारी, कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष सह पूर्व मुखिया जयंत बरला, विधायक प्रतिनिधि सुदामा महली, बीपीओ मोहम्मद इम्तियाज खलील, मुखिया सविता उरांव, मुखिया अलका तिर्की, मनोज मनबहाल होरो, उप मुखिया अरविंद सिंह, पंचायत समिति सदस्य पूनम टोप्पो, गीता खेश, राणा जितेंद्र, नीलम लकड़ा, राजेंद्र प्रसाद, शंकर खलखो, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की वार्डन प्रतिभा गुड़िया सहित कई प्रधान शिक्षकों ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इसके पूर्व दीप प्रज्वलित कर प्रखंड प्रमुख कंचन उरांव प्रखंड विकास पदाधिकारी इमानुएल जयवीरस लकड़ा विधायक प्रतिनिधि सुदामा महली, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक डॉ सुबोध कांत चौबे, मुखिया सविता उरांव तथा प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सुनील कुमार केशरी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सभी अतिथियों को पौधा देकर प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी लीलावती तिर्की, बीआरपी रेशम शाहदेव, सीआरपी मनोज कुमार साहु, मंटु कुमार साहु, चंद्रमोहन ठाकुर सहित अन्य सीआरपी बीआरपी और परियोजनाकर्मियों ने स्वागत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में लालकेश्वर यादव, एमआईएस कंप्यूटर ऑपरेटर राहुल कुमार, बीआरसी के फ्रांसिस पन्ना, होलिका कुमारी, कैलाश पाढी, सहित सभी विद्यालयों के प्रधान शिक्षकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मां विपत्तारिणी की पूजा विधिवत रूप से संपन्न

नवीन मेल संवाददाता। सिल्ली

सिल्ली मुरी क्षेत्र में शनिवार को विपत्ति को हरण करने वाली मां बिपत्तारिणी की पूजा विधिवत संपन्न हुई। छोटा मुरी के मां वैष्णवी दुर्गा मंदिर मे सुबह से ही पुजा अर्चना के लिए महिलाओं की भीड़ लगने लगी। पुरोहित अमुल्य पाण्डेय द्वारा विधिवत मां बिपत्तारिणी की पुजा की गई। इस पुजा मे कई तरह के फल फुल एवं मिठाई का भोग लगाया जाता है। पुजा सम्पन्न होने के बाद महिलाएं अपने घर के सभी सदस्यों को लाल धागा बांधती है जिससे परिवार के किसी सदस्यों पर विपत्ति ना आए। जो लोग मां विपत्तारिणी का व्रत रखती है उन्हें देवी का आशीर्वाद मिलता है और वह अपने परिवार को सभी खतरों से बचायी रखती है। किसी प्रकार कि विपत्ति नहीं आने देती है। मां विपत्तारिणी का पुजा आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष के दिन शनिवार और मंगलवार को की जाती है।

ज्ञापांक–17 / HRC–37 / 2013–2832 राँची, दिनांक–23.06.2023

झारखण्ड सरकार, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग।

प्रेस विज्ञापन

झारखण्ड राज्य मानवाधिकार आयोग में अध्यक्ष के 01 (एक) रिक्त पद एवं सदस्य के कुल–02 (दो) रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु माननीय उच्च न्यायालय के सेवानिवृत मुख्य न्यायाधीश /न्यायाधीश तथा माननीय उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त/कार्यरत न्यायाधीश अथवा कार्यरत/सेवानिवृत जिला न्यायाधीश, जिनके पास 07 (सात) वर्षों का जिला न्यायाधीश के रूप में कार्य करने का अनुभव प्राप्त हो, एवं मानवाधिकार के संबंध में ज्ञान अथवा व्यवहारिक अनुभव प्राप्त योग्य/अर्हताधारी व्यक्तियों से विहित प्रपत्र में आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। अध्यक्ष एवं सदस्यों के रिक्त पदों हेतु आवेदन अलग–अलग प्रपत्र में दिया जाना है। आवेदन पत्र में तथा लिफाफे के उपर आवेदित पद का नाम स्पष्ट रूप से अंकित किया जाना अनिवार्य है।

आवेदन हेतु विहित प्रपत्र एवं पूर्ण विवरणी विभाग की वेबसाइट www.jharkhand.gov.in/home के Press Release section पर उपलब्ध है।

इच्छुक आवेदनकर्ता उपरोक्तानुसार विहित प्रपत्र में सभी प्रविष्टियों की सूचना अंकित करते हुए अपना आवेदन गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राँची–834004 को स्पीड पोस्ट अथवा निबंधित डाक के माध्यम से दिनांक–21.07.2023 संध्या–06.00 बजे तक भेज सकते हैं।

ह०/–

(सरिता दास)

सरकार के संयुक्त सचिव।

PR 300775 Home(23-24)D

हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता की जुर्माना राशि को घटाया

नवीन मेल संवाददाता। रांची
झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने शनिवार को डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन कमेटी के सचिव राजेश ए नंदी की ओर से दायर जनहित याचिका की सुनवाई की। खंडपीठ ने तथ्य छिपाकर जनहित याचिका दाखिल करने पर याचिकाकर्ता राजेश ए नंदी पर लगाए गए एक लाख रुपये की जुर्माना राशि में से 50 हजार रुपये माफ कर दिया है। याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट से आग्रह किया गया था कि वह सेवानिवृत्त शिक्षक है। इसलिए जुमार्ना की राशि घटाई जाए। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने याचिकाकर्ता को इस केस से हटा दिया था। साथ ही उस पर एक लाख रुपये का जुमार्ना भी लगाया था। जुमार्ने की राशि याचिकाकर्ता को एडवोकेट एसोसिएशन, झारखंड हाई कोर्ट में जमा करनी थी। याचिकाकर्ता की ओर से याचिका दाखिल कर कहा गया था कि डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट की प्रॉपर्टी चैरिटेबल कार्यों हॉस्पिटल स्कूल के लिए यूज हो सकती है लेकिन छोटानागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन के द्वारा इसकी संपत्ति को हजारीबाग में अवैध रूप से बेचा जा रहा है, इसकी जांच कराई जाए। सुनवाई में कोर्ट को बताया गया था कि वर्ष 1930 में डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन एक कंपनी बन गई थी जिसका नाम डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ट्रस्ट एसोसिएशन था। वर्ष 1960 में इसकी ऐसेट एंड लायबिलिट छोटेनागपुर डायोसी ट्रस्ट एसोसिएशन मर्ज कर गया था। याचिकाकर्ता की ओर से एक सिविल सूट भी हजारीबाग सिविल कोर्ट में डाला गया था लेकिन इसकी जानकारी जनहित याचिका में याचिकाकर्ता की ओर से नहीं दी गई थी। इसके बाद कोर्ट ने याचिकाकर्ता पर नाराजगी जताते हुए उस पर एक लाख रुपये जुमार्ना लगाया था।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में होनहारों को मिला सम्मान

रांची। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा के केशव सभागार में शनिवार को मेधावी छात्र अभिनंदन सह अभिभावक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ महेश कुशवाहा और आरक्षी उपाधीक्षक, हटिया राजा मित्रा ने शैक्षणिक सत्र 2022-23 के कक्षा 10वीं एवं 12वीं में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों और उनके माता-पिता को सम्मानित किया। अतिथियों ने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाते हुए जीवन में बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। शिशु विकास मंदिर समिति के मंत्री अखिलेश्वर नाथ मिश्र ने कहा कि हमारे मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए हमारी संस्था के पुराने छात्र ही अधिकारी के रूप में उपस्थित हैं, यह खुशी की बात है। उन्होंने शिशु मंदिर की देशभर में संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

विस्थापितों की समस्याओं को लेकर भाकपा का महाधरना 27 को

नवीन मेल संवाददाता। रांची
भाकपा के राज्य सचिव महेन्द्र पाठक ने कहा कि विस्थापितों के समस्याओं के समाधान के लिए राजभवन के समक्ष भाकपा का महाधरना 27 जून को आयोजित किया गया है। पाठक ने शनिवार को पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि झारखंड के निर्माण के 23 वर्ष बीत गए लेकिन आज तक राज्य में किसानों हक और अधिकार के लिए विस्थापन नीति नहीं बना, विस्थापन आयोग की गठन भी नहीं हुआ। पुनर्वास नीति भी सरकार नहीं बना पाई। इस वजह से राज्य में किसानों का अधिकार नहीं मिल पा रहा हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में भूमि अधिग्रहण कानून 2013 लागू नहीं है। राज्य में गैरमजरूआ जमीन को लेकर जगह जगह पर लड़ाईयां चल रही है। राज्य में दर्जनों कोल ब्लॉक पावर प्लांट, डैम, सड़क और रेलवे लाइन बनाया जा रहा है। विकास के नाम पर किसानों की बहु फसली जमीन लाठी डंडे के बल पर लूटी जा रही है । चतरा, हजारीबाग ,पलामू ,गढ़वा में कई जगह पर आंदोलन चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाकपा ने सरकार से मांग की है कि राज्य में शीघ्र विस्थापन आयोग का गठन किया जाए और विस्थापन नीति बनाया जाय। गैरमजरूआ जमीन की रसीद काटना अविलंब चालू किया जाए। इन मांगों को लेकर भाकपा 27 जून को राजभवन के समक्ष महाधरना का आयोजन करेगा। इसमें भाकपा, माले, माकपा, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाइटेड सहित कई संगठनों के लोग शामिल होंगे।

सिकंदर के जादू ने रांची में मचा रहा धूम

रांची। कचहरी रोड स्थित वेंडर मार्केट के चौथे तल्ले पर बने रॉयल हाइट बैंक्वेट हॉल में जादूगर सिकंदर के शो में खूब भीड़ हो रही है। लोगों को यह शो खूब भा रहा है। शो के दौरान हैरतंगेज कारनामे और म्यूजिक के साथ जादू का खेल बहुत ही सफाई से परोसा जाता है। साथ ही शो के दौरान सामाजिक जागरूकता भी फैलायी जा रही है। शो में जादूगर सिकंदर लड़की को हवा में उड़ा देते हैं तो कभी गोरिल्ला बना देते हैं। इसके अलावा, बंद बॉक्स से कपड़े बदलकर बाहर आ जाते हैं। लोगों को यह काफी रोमांचित करता है। शो के दौरान बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, नशे से दूर रहें का नारा बुलंद किया जाता है।

सदान विकास पार्टी ने राजभवन के समक्ष दिया धरना

'हमें हक से वंचित रखने की हो रही साजिश'

नवीन मेल संवाददाता। रांची
झारखंड राज्य बने 23 साल हो गये। इतने दिनों में राज्य की सभी पार्टियों के विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री और सांसदों ने सदानों को हक और अधिकार से वंचित करने की साजिश की है। ओबीसी आरक्षण लागू किये बिना ही पंचायत चुनाव करा दिया गया। उक्त बातें सदान विकास पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने तीन सूत्री मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष धरने के दौरान कही। राज्य में 77 फीसदी सदान निवास करते हैं। सदान बहुल राज्य है, जहां 56% राज्य में ओबीसी है फिर भी सरकार उनके अधिकार का हनन कर रही है। डॉ राजेंद्र प्रसाद साहू ने कहा कि यदि सरकार और राज्यपाल हमारी मांगों पर विचार नहीं करते हैं तो प्रधान विकास पार्टी 10 दिनों के बाद राज्य में उग्र आंदोलन करेगी। राजभवन के समक्ष धरने के दौरान पार्टी के गुमला जिला अध्यक्ष सुनील कुमार भगत, रामगढ़ जिला अध्यक्ष रामेश्वर महतो, सुनील कुमार भगत, सुदेश कुमार साहू, मोहम्मद जुबेर, मोहम्मद परवेज, प्रशांत कुमार ने सभा को संबोधित किया।

विपक्षी एकता से भाजपा नेता हुए बेचैन : राजद

नवीन मेल संवाददाता। रांची
राजद के महासचिव सह प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने कहा कि बिहार में विपक्ष दलों के एकजुटता देख भाजपा नेता बेचैन हैं। विशेष रूप से झारखंड के भाजपा नेता काफी असहज और बेचैन हो रहे हैं। झारखंड से भाजपा के जनाधार खिसकते देख भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष काफी बेचैन है। कुमार ने शनिवार को भाजपा नेता दीपक प्रकाश बयान की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि भाजपा के सभी नेता दूध के धुले हैं। सौ चूहे खा कर बिल्ली चली हज को के कहावत को भाजपा नेता चरितार्थ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को बोलने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए । भाजपा नेता जिस झारखंड की धरती से बोल रहे है यहां भाजपा की जब जब सत्ता रही झारखंड को लूट खंड बनाने का काम किया। झारखंड की जनता को ठगने और धोखा देने का काम किया। कुमार के कहा कि जीरो टॉलरेंस वाली रघुवर दास के सरकार के समय 31 घोटाले हुए । इनमें मोमेंटम झारखंड में 100 करोड़, 400 करोड़ के लौह अयस्क, 18 करोड़ के कंबल घोटाले, 61 करोड़ अल्पसंख्यक छात्रवृति घोटाले, टॉफी टी शर्ट घोटाले सहित अनेक घोटाले उजागर हुए ।

चित्रपट झारखंड फिल्म फेस्टिवल के दूसरे दिन 41 फिल्मों का हुआ प्रदर्शन

नवीन मेल संवाददाता। रांची
चित्रपट झारखंड फेस्टिवल 2023 के दूसरे दिन सरला बिरला विश्वविद्यालय के प्रांगण में 41 फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। कुल 3 पर्दों पर इन फिल्मों के प्रदर्शन के दौरान तीनों प्रेक्षागृह खचाखच भरे हुए थे। लोगों ने फिल्मों की खूब प्रशंसा की और फिल्म और फिल्मों से संबंधित बातचीत से पूरा वातावरण फिल्ममय हो गया। फेस्टिवल के दूसरे दिन आयोजन में फिल्म निर्माण एवं वितरण विषय पर मुम्बई से पधारे विशेषज्ञ अशोक शरण और रुपेश कुमार एवं पुलिन मित्र, नंद कुमार सिंह तथा डॉ। सुशील कुमार अंकन ने प्रतिभागियों के साथ विशेष बातचीत की। इस विशेष सेमिनार में अपनी बातें रख कर उन्होंने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया और उनके प्रश्नों का उत्तर भी दिया। सेमीनार का संचालन राकेश रमण ने किया। फिल्म निर्माण और उससे जुड़े विषय पर इस बातचीत से उत्साहित होकर प्रतिभागियों के विशेष अनुरोध पर शाम 6:00 से रात 8:00 बजे तक अन्य विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के साथ बातचीत का यह सिलसिला चला जो कल भी जारी रहेगा।

कराटे प्रशिक्षित अपने आप में आत्मविश्वासी होते हैं : विकास

रांची। कराटे प्रशिक्षित युवा हो या अधेड़ अपने आप में आत्मविश्वासी होते हैं। यह बात पतरातू के कराटे प्रशिक्षक विकास पाठक ने कही। वे शनिवार को भवानी नगर पिर्रा के संत ज्यूस स्कूल और काठीटांड़ स्थित ग्लोबल किड्स स्कूल में कराटे का प्रशिक्षण दे रहे थे। विकास मॉडर्न मार्शल ऑर्ट्स कराटे डो फेडरेशन ऑफ इंडिया सह कराटे फेडरेशन ऑफ शोतोकॉन के तहत स्कूली बच्चों को कराटे का प्रशिक्षण देना शुरू किया है। संत ज्यूस स्कूल की प्राचार्या किरण मिश्रा ने कहा कि कराटे बच्चों के विकास का एक बेहतरीन जरिया है। इसमें बच्चे आत्मरक्षा सीखते ही हैं साथ ही वे अपने आप में इतने सक्षम हो जाते हैं कि जरूरत पड़ने पर हर असामाजिक तत्वों के खिलाफ बिना किसी सहायता के आत्मरक्षा में कराटे का प्रयोग कर सकते हैं। इससे शारीरिक रूप से बच्चे सही रहते हैं और उनमें पूर्ति भी आती है। वह कभी भी अपने को अकेला नहीं महसूर करते हैं, जिससे उन्हें डर लगे।

भेदभाव यूनिफॉर्म सिविल कोड का विरोध करेंगे आदिवासी संगठन

आज रांची में होगी बैठक, आगे की बनेगी रणनीति

नवीन मेल संवाददाता। रांची
इन दिनों समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड की जोरशोर से चर्चा चल रही है। इसका मतलब है एक ऐसा सेक्यूलर कानून जो देश के सभी नागरिकों के लिए समान रूप से लागू होता है। इसके मुताबिक अलग-अलग पंथ के लिए अलग-अलग सिविल कानून नहीं होना चाहिए। इसपर 22वें विधि आयोग ने आम जनता, सार्वजनिक संस्थानों और मान्यता प्राप्त धार्मिक संगठनों से जुड़े लोगों की राय मांगी है। इसके लिए 14 जुलाई तक का समय दिया गया है। एक पक्ष की दलील है कि इससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलेगा। धर्म के आधार पर भेदभाव रूकेगा। कानूनी प्रणाली को सरल बनाने में मदद मिलेगी। वहीं दूसरे पक्ष का मानना है कि इससे धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा। इस बीच यूनिफॉर्म सिविल कोड के विरोध में झारखंड के आदिवासी संगठन गोलबंद होने लगे हैं। 25 जून को करमटोली के पास धुमकुड़िया में एक बैठक बुलायी गयी है। इसमें विस्तार से चर्चा के साथ आगे की रणनीति बनेगी। आदिवासी जनपरिषद के प्रेमशाही मुंडा ने ईटीवी भारत से फोन पर बातचीत के दौरान बताया कि यूनिफॉर्म सिविल कोड से आदिवासियों का हक प्रभावित होगा। उनकी दलील है कि केंद्र की मोदी सरकार एक साजिश के तहत इसको लाना चाह रही है। यह इसलिए आदिवासी हित में नहीं है क्योंकि इससे आदिवासियों की जमीन की रक्षा के लिए बना सीएनटी और एसपीटी एक्ट प्रभावित होगा। उन्होंने कहा कि अगर इसको लागू किया गया तो पांचवी अनुसूची का क्या होगा। आदिवासियों के लिए बने पेसा कानून का क्या होगा। उन्होंने इसे आदिवासी विरोधी बताते हुए अपना विरोध जताया है। प्रेमशाही मुंडा ने कहा कि 25 जून को प्रस्तावित बैठक में देवकुमार धान और गीताश्री उरांव समेत कई नेता शिरकत करेंगे। इस बैठक में झारखंड के विधानसभा से पारित सरना आदिवासी धर्म कोड पर अबतक केंद्र की मुहर नहीं लगाए जाने के सवाल पर भी चर्चा होगी।आदिवासी जनपरिषद और अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद की ओर से बुलायी गई बैठक के बाबत प्रेम शाही मुंडा ने कहा कि रविवार की बैठक में स्पष्ट हो जाएगा कि हमलोग क्या करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के रूख से स्पष्ट है कि हमें सड़क पर उतरकर इसके विरोध में आंदोलन करना होगा। उनसे पूछा गया कि क्या आप भाजपा विरोधी पार्टियों से भी इसके लिए समर्थन मांगेंगे। इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हमें समर्थन मांगने की जरूरत नहीं है। अगर कोई पार्टी समर्थन करेगी तो हम उसका स्वागत करेंगे। उन्होंने कहा कि अगर उनकी बातें नहीं मानी गई तो इसका प्रभाव आगामी चुनाव पर भी दिखेगा।

श्रावणी मेले की तैयारी में जुटा प्रशासन, डीसी ने किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

देवघर । राजकीय श्रावणी मेला के दौरान श्रद्धालुओं के सुगम और सुलभ जलार्पण को लेकर उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने शनिवार को किए जा रहे विभिन्न कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान बाबा मंदिर प्रांगण के साथ क्यू कॉम्पलेक्स, उमा भवन, संस्कार मंडप, फुट ओवर ब्रिज के अलावा बाबा मंदिर आसपास के क्षेत्रों में किए जा रहे विभिन्न कार्यो का निरीक्षण कर वस्तुस्थिति का जायजा लिया। साथ ही मंदिर प्रांगण में श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर किए जा रहे विभिन्न कार्यों को लेकर संबंधित विभाग के अधिकारियों निर्देश भी दिया। श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर उपायुक्त ने मंदिर आसपास के क्षेत्रों के अलावा क्यू कॉम्पलेक्स, उमा भवन, संस्कार मंडप, फुट ओवर ब्रिज का निरीक्षण करते हुए विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यो की गुणवत्ता व कार्यों की बारीकियों को लेकर संबंधित अधिकारियों एवं कार्यपालक अभियंता को निर्देश देते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण कार्यों को प्राथमिकता देते हुए युद्धस्तर पर पूर्ण करें ताकि श्रद्धालुओं की किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। साथ ही क्यू कॉम्प्लेक्स में श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर किए जा रहे कार्यों जैसे पेयजल, विद्युत व्यवस्था, शौचालय, स्नानगृह, स्वास्थ्य शिविर और बेरिकेड के

कार्यों को तय समय अनुसार पूर्ण करने का आदेश संबंधित अधिकारियों व कार्यपालक अभियंता को दिया।

NEWS इन ब्रीफ

सड़क हादसे में एक युवक की मौत, दो घायल

गिरिडीह। धनवार थाना क्षेत्र के बरजो मोड़ के पास शुक्रवार की देररात सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, वहीं दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए. जानकारी के अनुसार धनवार थाना क्षेत्र के बरवाडीह निवासी बंधन ठाकुर के 20 वर्षीय पुत्र अरविंद ठाकुर की मौत बरजो मोड़ के पास हुए दुर्घटना में हो गई. उनके साथ दो अन्य अमन ठाकुर पत्थलडीहा निवासी और लोहरा नावाडीह मरकच्चो थाना क्षेत्र के विकास ठाकुर बुरी तरह से घायल हो गए. दोनों की हालत गंभीर बतायी जाती है. धनवार पुलिस तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर तीनों को राजधनवार रेफरल अस्पताल पहुंचाया, जहां अरविंद ठाकुर को मृत घोषित कर दिया गया, वही अमन ठाकुर व विकास ठाकुर को धनबाद रेफर कर दिया गया . जानकारी के अनुसार अरविंद ठाकुर के चचेरे भाई की शादी शुक्रवार की रात को होनी थी. शादी के क्रम में एक बाइक पर सवार होकर तीनों वरजो मोड़ की ओर आए थे. वरजो मोड के पास विपरीत दिशा से आ रहे अज्ञात वाहन की चपेट में तीनों आ गए.

दो बाइक में सीधी टक्कर तीन युवक घायल

बोकारो। फुसरो पुराना बीडीओ ऑफिस के समीप मेन रोड में शुक्रवार 23 जून की देर रात दो बाइक के बीच सीधी टक्कर में तीन युवक घायल हो गए. घायलों में फुसरो पटेल चौक निवासी 20 वर्षीय नीरज कुमार, करगली बाजार निवासी 20 वर्षीय शिवम शर्मा और पिछरी छप्परडीह निवासी 22 वर्षीय अमित महतो शामिल है. हादसे के बाद फुसरो बाजार के मोबाइल व्यवसायी विनय बरनवाल ने तीनो घायलों को सीसीएल केंद्रीय अस्पताल ढोरी पहुंचाया. जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किया. गंभीर रूप से घायल अमित महतो को बेहतर इलाज के लिए बोकारो सदर अस्पताल रेफर कर दिया. जानकारी के अनुसार एक बाइक पर सवार फुसरो पटेल चौक निवासी शिवम और नीरज अपने घर लौट रहे थे.

बालू से लदे दो ट्रैक्टर जब्त, चालक फरार

जमशेदपुर। बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र में सुवर्णरेखा नदी के कई घाटों पर बालू का अवैध उत्खनन हो रहा है. बालू का उत्खनन कर ट्रैक्टरों पर दिनदहाड़े ले जाया जा रहा है. सूचना मिलते ही थाना प्रभारी संतन कुमार तिवारी तथा अंचल अधिकारी जीतराम मुर्मू ने पुलिस बल के साथ त्वरित कार्रवाई करते हुए शनिवार को छापामारी अभियान चलाया. पुलिस ने केवला के निकट मुख्य सड़क पर अवैध बालू से लदे दो ट्रैक्टरों को जब्त किया. दोनों ट्रैक्टर के चालक ट्रैक्टर छोड़कर भागने में सफल रहे. एक सोनालिका ट्रैक्टर तथा दूसरा जॉन डीयर ट्रैक्टर है. बालू से लदे दोनों ट्रैक्टरों को थाना लाया गया है. बालू लदे दोनों ट्रैक्टर चौरंगी से बहरागोड़ा की ओर आ रहे थे. पुलिस दोनों ट्रैक्टर के मालिकों और चालक के नाम का पता लगाने में जुटी है. प्रशासन की इस कार्रवाई से बालू के अवैध कारोबारियों में हड़कंप मचा है.

वज्रपात से झुलसी बच्ची सीएचसी में इलाजरत

चाईबासा। मनोहरपुर थाना अंतर्गत बीती शुक्रवार देर शाम ग्राम पुरनापानी नवाडीह टोला की 15 वर्षीय बच्ची रीना कच्छप वज्रपात की चपेट में आने से गंभीर रूप से झुलस गई. परिजनों की लापरवाही के कारण पीड़ित बच्ची को 19 घंटे बाद मनोहरपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया. वहां स्थानीय चिकित्सकों की देख-रेख में पीड़ित बच्ची का इलाज चल रहा है. घटना के बाबत मिली जानकारी के मुताबिक पीड़ित बच्ची रीना बीती शुक्रवार शाम आम चुनने के लिए घर के समीप जंगल गई थी तभी जोर का वज्रपात हुआ और बच्ची उसकी चपेट में आ गई. इस वज्रपात में उसके शरीर का पिछला हिस्सा बुरी तरह झुलस गया है.

क्रेडो वर्ल्ड स्कूल में पेफी खेल महोत्सव शुरू

नवीन मेल संवाददाता

धनबाद। पेफी झारखंड चैप्टर द्वारा क्रेडो वर्ल्ड स्कूल आमाघाटा में 24 जून शनिवार से तीन दिवसीय खेल महोत्सव का शुभारंभ हो गया. उद्घाटन मुख्य अतिथि धनबाद विधायक राज सिन्हा, विशिष्ट अतिथि प्रवीन्ध कुमार कोषाध्यक्ष पेफी इंडिया, मिस्टर तोमर महासचिव पेफी मध्य प्रदेश चैप्टर, नवीन विश्वास संयुक्त सचिव एनके ऐफ इंडिया, मिस्टर भूपेंद्र फाउंडर मेंबर पेफी, हर्षित अग्रवाल एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर क्रेडो वर्ल्ड स्कूल, शर्मिला सिन्हा प्रिंसिपल क्रेडो वर्ल्ड स्कूल व रंजीत केसरी महासचिव धनबाद ओलंपिक संघ ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया. मौके पर मिनी मैराथन, एथलेटिक्स, कबड्डी, योगा, कराटे प्रतियोगिता एवं एंटी डोपिंग सेमिनार का भी आयोजन किया गया. मिनी मैराथन में लड़कियों में प्रथम डोली कुमारी, द्वितीय रिया कुमारी, तृतीय सोनम कुमारी, लड़कों में प्रथम राहुल कुमार महतो, द्वितीय कौशल कुमार महतो, तृतीय जीवन कुमार. लड़कों की स्पर्धा में 100 मीटर दौड़ में प्रथम शाहबाज खान, द्वितीय सुनील पासी, तृतीय सचिन कुमार साहू. 200 मीटर में प्रथम शाहबाज खान, द्वितीय सुनील पासी, तृतीय कोलीन जसुआ क्रेबे. 400 मीटर में प्रथम दिव्यांशु कुमार मिश्रा, द्वितीय आशीष कुमार साव, तृतीय प्रवीण कुमार. 800 मीटर में प्रथम राहुल कुमार महतो, द्वितीय आशीष कुमार साव, तृतीय विकास कुमार श्रीवास्तव. गोला फेंक में प्रथम दुलाल नापित, द्वितीय सुजल जायसवाल, तृतीय युवराज सिंह. लड़कियों की 100 मीटर दौड़ में प्रथम ज्योति कुमारी, द्वितीय करिश्मा प्रसाद, तृतीय अनिशा कुमारी. 200 मीटर दौड़ में प्रथम लक्ष्मी कुमारी, द्वितीय अनिता कुमारी, तृतीय ईस्टर जूलियन क्रेबे. 400 मीटर दौड़ में प्रथम लक्ष्मी कुमारी, द्वितीय कोमल कुमारी, तृतीय काजल कुमारी ठाकुर एवं 800 मीटर दौड़ में प्रथम डॉली कुमारी, द्वितीय रिया कुमारी एवं तृतीय सोनम कुमारी रही. मौके पर मनोज मिश्रा डायरेक्टर पेफी इंडिया, रेजा इस्तियाक डायरेक्टर पेफी झारखंड, आलोक चौधरी महासचिव पेफी झारखंड, अंशु सरकार पैट्रोन पेफी झारखंड, स्मिकी सरकार सीनियर वाइस प्रेसिडेंट पेफी झारखंड, मृदुल बोस अध्यक्ष, कुणाल कुमार महासचिव, डॉ. शैलेश कुमार निदेशक, अभिजीत पात्रा सीनियर वाइस प्रेसिडेंट पेफी धनबाद चैप्टर मौजूद थे.

बांग्ला भाषा उन्नयन समिति के महिला मोर्चा ने निकाला जुलूस

नवीन मेल संवाददाता

धनबाद। निरसा के बड़ा अम्बोना गांव में 24 जून शनिवार को झारखंड बांग्ला भाषा उन्नयन समिति के महिला मोर्चा ने जुलूस निकाला. जुलूस का नेतृत्व समिति के संस्थापक बेंगू ठाकुर ने किया. जुलूस में शामिल महिलाओं ने सरकारी विद्यालय में बांग्ला भाषा की पढ़ाई की मांग की. कहा कि पहले स्कूलों में बांग्ला भाषा की पढ़ाई होती थी. परंतु अलग राज्य बनने के बाद बंद कर दी गई. समिति के संस्थापक बेंगू ठाकुर ने कहा कि बांग्ला भाषियों की संख्या अधिक रहने के बावजूद स्कूलों में पठन पाठन नहीं हो रहा है. यह भाषा 26 जाति लोगों का मौलिक अधिकार है. इस अधिकार को छीनने नही देंगे. प्रखंड अध्यक्ष बबलू दास ने कहा कि निरसा क्षेत्र के 95% प्रतिशत लोगों की भाषा बांग्ला है. इसीलिए बांगला भाषा के लिए निरसा क्षेत्र से ही आंदोलन शुरू होगा. इस बार गांव-गांव प्रचार करेंगे. जो हमारी मातृभाषा के आंदोलन में योगदान करेगा, उसी को 2024 में चुनेंगे. जो योगदान नहीं करेगा, उसको गांव में घुसने नहीं देंगे. इसलिए हर गांव में महिलाओं को जागरूक किया जा रहा है. जुलूस व सभा में असीत गोराई, मुकन दास, गणेश गोराई, नगेन गोराई बाबल सुईस, रुपाली मंडल, वषार्ला गोराई, साधन मंडल, गौरी देवी, अनिल मोदक, सरस्वती देवी, पूनम सईस, ललिता मंडल, बारौनी मंडल शिबरी मंडल, अरुणा, कुंती मंडल, लीला मंडल, माथा मंडल आदि शामिल थे।

एक पारा शिक्षक के भरोसे है पाकुड़िया उत्क्रमित मवि.

नवीन मेल संवाददाता

जमशेदपुर। चाकुलिया प्रखंड की सरडीहा पंचायत स्थित पाकुड़िया उत्क्रमित मध्य विद्यालय शिक्षकों की कमी का दंश झेल रहा है. इस विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे दो साल से एक ही पारा शिक्षक के भरोसे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. पाकुड़िया प्रखंड के अंतिम छोर पर पश्चिम बंगाल से सटा हुआ गांव है. विद्यालय में शिक्षकों के पदस्थापन के मसले पर शिक्षा विभाग द्वारा कोई पहल नहीं की जा रही है. अहम सवाल यह है कि एक पारा शिक्षक के भरोसे कक्षा एक से आठवीं तक के विद्यार्थी कैसे शिक्षा प्राप्त करते होंगे. बच्चों की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर प्रश्नचिन्ह लग गया है.

विद्यालय में 35 बच्चे हैं नामांकित

इस विद्यालय में एकमात्र पारा शिक्षक मंटू चरण महतो हैं. वे प्रधानाध्यापक भी हैं. विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक की पढ़ाई होती है. विद्यालय में 35 बच्चे नामांकित हैं. इनमें कई सबर बच्चे भी हैं. शिक्षकों की कमी से विद्यालय का पठन-पाठन पर बुरा असर पड़ रहा है. एक ही कमरे में कई वर्ग के विद्यार्थियों को पढ़ाना पड़ता है. बीआरसी में आयोजित बैठक में भाग लेने के लिए जब पारा शिक्षक जाते हैं. तब स्कूल को बंद करने की नौबत आ जाती है.

सीआईएसएफ जवानों ने बच्चों संग निकाली जागरुकता रैली

बोकारो। विश्व पर्यावरण दिवस पर बोकारो थर्मल में सीआईएसएफ के जवानों ने कॉर्मेल स्कूल के बच्चों संग जागरूकता रैली निकाली। रैली को डिप्टी कमांडेट बिरेन कुमार सेठी व प्राचार्या सिस्टर मिलर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. रैली के माध्यम से लोगों से कहा गया कि अपने जन्मदिवस व शादी की सालगिरह पर पौधा अवश्य लगाएं साथ ही उसकी देखभाल भी करें. डिप्टी कंमाडेट बिरेन सेठी ने कहा कि हम सभी को पर्यावरण के प्रति चिंतित रहना चाहिए. पर्यावरण ठीक रहे इसके लिए मौसम के अनुसार पौधा लगाना और उनका देखरेख करना आवश्यक है. कार्यक्रम में प्रिंसिपल सिस्टर मिलर ने डिप्टी कमांडेंट को पौधा भेंट किया. इस दौरान सीआईएसएफ के इंस्पेक्टर प्रशांत कुमार प्रसून, अनिल कुमार, विनोद कुमार, एमके तिवारी, कपिल भैरा, राजेश कुमार शाह, ओमप्रकाश यादव, सुरेश यादव, केके सिंह, एके तिवारी, बच्चू सिंह, सीबी सिंह, एसके चौरसिया, महेंद्र कुमार, एके बेहरा आदि मौजूद थे।

भाजपा ने चलाया घर घर जनसंपर्क अभियान

नवीन मेल संवाददाता

चाईबासा। भारतीय जनता पार्टी खुंटपानी मंडल द्वारा केंद्र सरकार के नौ वर्ष पुरे होने पर शनिवार को महा जनसंपर्क अभियान चलाया गया. इस महा जनसंपर्क अभियान का नेतृत्व मंडल अध्यक्ष सुदामा हाईबुरू ने किया. उनकी उपस्थिति में होरलोर गांव के बुथ संख्या 136 में घर-घर जनसंपर्क अभियान चलाकर पत्रक वितरण किया गया और लोगों को केंद्र सरकार के समर्थन देने के लिए आग्रह करते हुए टोल फ्री नंबर पर कॉल करवाया गया. इसमें मुख्य रूप से पूर्व विधायक जवाहर लाल बानरा मौजूद थे. उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने बीते नौ वर्षों में कई जनकल्याणकारी योजनाओं की शुरूआत की है जिसका लाभ सीधे जनता को मिल रहा है. आज हम जनता के पास सीधे घर-घर जा रहे हैं और योजनाओं की वास्तविक स्थिति की जानकारी ले रहे हैं तो पता चल रहा है कि केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ लोगों को मिल रहा है. उन्होंने उम्मीद जताई कि लोग आने वाले लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी को अपना समर्थन देंगे. देश को विकसित करने के लिए नरेन्द्र मोदी का दोबारा प्रधानमंत्री बनाना आवश्यक है. इसी विश्वास के साथ केंद्र सरकार सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास का नारा लेकर काम कर रही है.

कार्य स्थगित **मुर्गा दुकानदार की गिरफ्तारी नहीं हुई तो 28 को करेंगे हड़ताल**

नगर निगम कर्मियों का कार्य बहिष्कार 27 तक

नवीन मेल संवाददाता

गिरिडीह। झारखंड लोकल बॉडीज इंप्लाइज फेडरेशन के तत्वावधान में 24 जून शनिवार को नगर निगम परिसर में संपन्न बैठक में शुक्रवार से जारी कार्य बहिष्कार को स्थगित कर दिया गया है. संघ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में 27 जून तक कार्य बहिष्कार स्थगित किया गया है. मामले में श्री सिंह ने कहा कि पुलिस कार्यवाही के लिए समय चाहिए, 27 तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई तो 28 जून से पुनः हड़ताल शुरू कर दी जाएगी. उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के आला नेताओं का जब

गिरिडीह दौरा होता है तो सफाई कर्मियों को साफ सफाई पर विशेष ध्यान देना होता है. ऐसे कार्यों से किसी को ऐतराज हो तो निगम के अधिकारियों के समक्ष विरोध जताएं. सफाई कर्मियों के साथ दुर्व्यवहार व मारपीट कहीं से जायज नहीं है.

सफाईकर्मी को दी जान मारने की धमकी

विदित हो कि 22 जून को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के गिरिडीह दौरा के क्रम में भंडारीडीह में निगमकर्मी सफाई कर रहे थे. इसी दौरान मुर्गा दुकानदार रिजवान ने सफाई कर्मियों से बदसलूकी कर मुर्गा काटने वाले हथियार दिखाकर जान मारने की धमकी दी थी. गुस्साई कर्मियों ने 23 से कार्य बहिष्कार कर दिया. प्रदेश अध्यक्ष श्री सिंह ने बताया कि मामले की जानकारी नगर निगम के उप नगर आयुक्त स्मृता कुमारी को दे दी गई है और कर्मी तत्काल काम में लग गए हैं. बैठक में श्री सिंह के अलावा संघ के जिला अध्यक्ष अजीत कुमार चंद्रा, लखन हरिजन, शब्बीर अंसारी. लखन शर्मा आदि मौजूद थे.

चाईबासा : कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय टोंटो की छात्रा की स्कूल में ही मौत

चाईबासा। टोंटो प्रखंड के लिसिया स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में लापरवाही हुई है. इसमें 8वीं की छात्रा ने दम तोड़ दिया. ग्राम मृगलीडी की छात्रा लुदूरी हेम्ब्रम (15 वर्ष) को गर्मी छुट्टी के बाद 16 जून को मां ने स्कूल पहुंचा दिया था. 17 जून की रात्रि से उसकी तबीयत खराब हुई, तबीयत खराब होने की जानकारी वार्डेन को दी गई, लेकिन वार्डेन ने इस पर कोई गम्भीरता नहीं दिखाई. परिजनों को फोन पर जानकारी देने के लिए कहने पर वार्डेन ने फोन नहीं लगने की जानकारी दी. देखतेझ्देखते छात्रा की तबीयत काफी खराब हो गई. सहेलियों द्वारा पानी पिलाना, खाना खिलाना का ध्यान रखा जा रहा था. बुधवार रात को जब हॉस्टल में ही छात्रा की तबीयत काफी खराब हो गई, तो गुरुवार को उसे अस्पताल ले जाने की तैयारी शुरू हुई. लेकिन, दोपहर एक बजे छात्रा ने वहीं दम तोड़ दिया. यह सारी जानकारी छात्रा के साथ पढ़ने वाली उसकी सहेलियों ने दी है.

धनबाद : मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के तहत हुआ बकरा-बकरी का वितरण

धनबाद। तोपचांची प्रखंड परिसर में शनिवार 24 जून को मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के तहत 10 लाभुकों के बीच विधायक मथुरा प्रसाद महतो ने बकरा-बकरी का वितरण किया. उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चला रही है. मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना बहुत ही लाभकारी है. इस योजना का लाभ उठाकर किसान अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं. सभी यूनिटों को अच्छी नस्ल का बकरा बकरी दिया गया है. अगर सही ढंग से पालन किया गया तो आमदनी में भारी वृद्धि होगी. इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी राजेश एक्का, तोपचांची प्रखंड प्रमुख आनंद महतो, 20 सूत्री अध्यक्ष विकास तिवारी, विधायक प्रतिनिधि जगदीश चौधरी,प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सहदेव महतो, रोहन महतो, प्रसिद्ध सिंह आदि मौजूद थे.

गांडेय : अज्ञात वाहन के धक्के से अधेड़ की मौत

गिरिडीह। गिरिडीह जिले के गांडेय प्रखंड के दासडीह के निकट 24 जून की अहले सुबह एक अज्ञात वाहन के धक्के से जोड़ाआम निवासी मुरलीधर पाठक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई. वे सुबह के समय टहलने निकल थे. इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहा एक अज्ञात वाहन के धक्के से उनकी मौत हो गई. हादसे की खबर पाकर उनके दोनों पुत्र घटनास्थल पर पहुंचे. घटना से आक्रोशित परिजनों और ग्रामीणों ने फरार अज्ञात वाहन चालक की गिफ्तारी की मांग को लेकर गिरिडीह-जामताड़ा मुख्य सड़क मार्ग घंटों तक जाम कर दिया. सड़क जाम के कारण यातायात की समस्या उत्पन्न हो गई. सड़क पर दोनों किनारे वाहनों की कतारें लग गई. लोग घंटों तक जाम में फंसे रहे. सड़क जाम की खबर पाकर प्रखंड विकास पदाधिकारी विजय कुमार और अंचलाधिकारी सफी आलम घटनास्थल पर पहुंचे तथा परिजनों व ग्रामीणों को समझाकर सड़क पर से हटाया. इसके बाद फिर यातायात सामान्य हुई. इसी बीच गांडेय थाना प्रभारी साकेत प्रसाद देव सदलबल घटनास्थल पर पहुंचे और मुआयना किया.

चाईबासा में दिव्यांगों का बनेगा यूडीआइडी कार्ड

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत पात्रताधारित दिव्यांग जनों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र तथा यूडीआईडी उपलब्ध कराने हेतु जिला उपायुक्त अनन्य मित्तल के निर्देश पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में 26 जून से शिविर लगाया जाएगा. सर्वप्रथम 26 जून को टोंटो प्रखंड में शिविर का आयोजन होगा. इसके बाद 28 जून को खूंटपानी, 01 जुलाई को कुमारडुंगी, 03 जुलाई को चक्रधरपुर, 04 जुलाई को बंदगांव, 05 जुलाई को सोनुआ, 08 जुलाई को तांतनगर, 11 जुलाई को जगन्नाथपुर, 12 जुलाई को मंझगांव, 13 जुलाई को गोईलकेरा, 14 जुलाई को सदर अस्पताल चाईबासा-नेत्र विभाग, 15 जुलाई को मंझारी, 18 जुलाई को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र-नोआमुंडी एवं 20 जुलाई को झींकपानी कार्यक्रम होंगे. कैंप के सफल संचालन हेतु सभी संबंधित पदाधिकारियों एवं कर्मियों को आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा महिला पर्यवेक्षिका को अपने-अपने क्षेत्र अंतर्गत लाभुकों की सूची आयोजन के पूर्व तैयार करने के निर्देश दिए गए है. विशेषकर दिव्यांगता प्रमाण पत्र से छूटे हुए जनों को सूचित किया गया है कि शिविर में आने वाले पात्रताधारित लाभुक अपने साथ फुल साइज फोटो, आधार कार्ड सहित संबंधी कागजात लेकर उपस्थित हो.

जामीरा पहाड़ पूजा आज, तैयारियां पूरी

जमशेदपुर। चाकुलिया प्रखंड के बड़ीकानपुर-कालापाथर पंचायत में 25 जून (रविवार) को अच्छी वर्षा और खुशहाली के लिए 10 मौजा के ग्रामीण जामीरा पहाड़ की पूजा करेंगे. इस पहाड़ की पूजा करने की वर्षों पुरानी परंपरा है. पूजा की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं. ग्रामीणों की मान्यता है कि पहाड़ पूजा करने से अच्छी वर्षा होती है और क्षेत्र में खुशहाली आती है. पूजा के मौके पर न्यू यंग ब्वॉयज क्लब के तत्वावधान में दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे. पुजारी सह ग्राम प्रधान पिथो मुर्मू परंपरा के मुताबिक पूजा अर्चना करेंगे. पूजा के लिए श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ेगा. विदित हो कि बड़ीकानपुर से करीब डेढ़ किलोमीटर की दूरी पैदल तय कर पूजा स्थल तक भक्त जाते हैं. पूजा स्थान पर कालापाथर गांव के साहेब राम मुर्मू द्वारा मंदिर का निर्माण कराया गया है.

मासिक लोक अदालत में 148 मामलों का निष्पादन

गिरिडीह। व्यवहार न्यायालय परिसर में शनिवार 24 जून को आयोजित मासिक लोक अदालत में कुल 148 मामलों का निष्पादन किया गया. जिला एवं सत्र न्यायाधीश बीना मिश्रा के मार्गदर्शन में आयोजित मासिक लोक अदालत में कुल 7 पीठ का गठन किया गया था. जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव सौरभ कुमार गौतम ने बताया कि मासिक लोक अदालत में कुल 7 लाख 86 हजार 755 रुपए की राशि संबंधित विभाग व पक्षकारों को दी गई. उन्होंने बताया कि इसमें सभी प्रकार के सुलहनीय आपराधिक मामलों, सिविल वाद, क्लेम वाद, एनआई एक्ट वाद, बिजली विभाग, वन विभाग, उत्पाद विभाग, श्रम विभाग, माप-तौल विभाग, टेलीफोन विभाग से संबंधित मामलों का त्वरित निष्पादन किया गया. कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी न्यायिक पदाधिकारी, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, पैनल अधिवक्ता, न्यायालय कर्मियों व पारा लीगल वालंटियर्स की महत्वपूर्ण भूमिका रही.

उपायुक्त की अध्यक्षता में खरीफ विपणन मौसम 2022-23 की समीक्षा बैठक आयोजित

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला समाहरणालय के सभागार में जिला उपायुक्त अनन्य मित्तल की अध्यक्षता में शनिवार को बैठक की गई. बैठक में खरीफ विपणन मौसम 2022-23 अंतर्गत धान अधिप्राप्ति एवं इसके एवज में किसानों को भुगतान को लेकर किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की गई. बैठक में बताया गया कि विपणन वर्ष के अंतर्गत कुल 21 लैम्पस के माध्यम से 1590 किसानों से तकरीबन 78,000 क्विंटल धान की अधिप्राप्ति हुई है. अधिप्राप्ति के एवज में शत-प्रतिशत किसानों को प्रथम किस्त की राशि का हस्तांतरण किया जा चुका है. दूसरे किस्त के तहत 116 किसानों को राशि का भुगतान किया गया है.

कलश यात्रा के साथ पांच दिवसीय महायज्ञ शुरू

ऐसे आयोजन से भक्ति की भावना का प्रसार होता है : सुनीता चौधरी

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के रामगढ़ नगर परिषद के अंतर्गत छत्तर मांडू में श्री श्री राधा कृष्णा मंदिर जीणोंद्धार मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा एवं पांच दिवसीय महायज्ञ को तहत 24 जून को कलश यात्रा का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि रामगढ़ विधानसभा की विधायक सुनीता चौधरी, विशिष्ट अतिथि रामगढ़ नगर परिषद उपाध्यक्ष मनोज कुमार महतो शामिल हुए. मौके पर सुनीता चौधरी ने कहा की क्षेत्रवासियों के सफल सुखद एवं स्वास्थ्य जीवन सुख समृद्धि की कामना करते हैं. कहा इस तरह के आयोजन से भक्तिमय का वातावरण बनता है .मौके पर धनेश्वर महतो , किशुन राम मुंडा, कमिटी के अध्यक्ष भवानी महतो, सचिव सच्चीनंद महतो, उपाध्यक्ष ईश्वर प्रसाद,कोषाध्यक्ष प्रदीप कुशवाहा, संरक्षक रामनरेश महतो, सुनील कुमार, सुभाष महतो,शंकर प्रसाद महतो, नरेश साहू,बासुदेव महतो, दिनेश कुमार, संजय कुमार, कृष्णा प्रसाद,दिनेश कुमार,पवन कुमार, संतोष कुमार, कजरू महतो, विवेक प्रसाद कुशवाहा,दीपक कुमार,रुपेश कुमार,नटवरलाल कुशवाहा, संतोष सोनी, देवनंद कुमार, गणेश कुशवाहा, अनूप यादव, दिलीप यादव सहित अन्य मौजूद थे.

प्रवासी मजदूर व उनके परिवारों को पंजीयन के लिए मिला प्रशिक्षण

नवीन मेल संवाददाता

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गंगपाचो नायक टोला में महिला मुक्ति संस्था एवं जनसाहस संस्था के एम आर सी टीम के द्वारा प्रवासी मजदूरों एवं इनके परिवारों के साथ प्रवास पूर्व प्रशिक्षण दिया गया। मौके पर क्षेत्र अधिकारी रोहित कुमार, सतेंद्र कुमार यादव, जिला समन्वयक मोनिका रानी, जे एस एफ जरीना खातून एवं जन साथी रंजीत साव के द्वारा प्रवासी मजदूरों एवं परिजनों को प्रवास पूर्व प्रशिक्षण में बताया गया की मजदूर लोग प्रवास से पूर्व अपने पंचायत में पंजीयन करवा कर निकले एवं लेबर ऑफिस हजारीबाग में उन्हें पंजीकृत होना आवश्यक है। वहीं क्षेत्र अधिकारी रोहित कुमार ने पंजीयन करवाने से लाभ के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रवास के बाद कैसे सुरक्षित रह सकते है, कार्य स्थल पर कैसे सुरक्षित रहना है तथा कार्य के दौरान क्या करना है।उन्होंने जनसाहस मजदूर हेल्प लाइन नंबर 18002000211 के बारे में बताया और महिला हेल्पलाइन नंबर 180030002852 महिलाओं से संबंधित या शोषण के विरुद्ध महिला हेल्पलाइन नंबर में कॉल कर सकते हैं।बताया जन साहस मजदूर हेल्पलाइन नंबर मजदूरों के लिए अत्यधिक मददगार है। अन्य वक्ताओं ने बीओसीडब्लू कार्ड, बाल श्रम श्रम कार्ड, आयुष्मान कार्ड, आभा कार्ड, सामाजिक सुरक्षा योजनाओ के बारे में जानकारी दी ।

रामगढ़ में पल्स पोलियो अभियान के प्रति विद्यार्थियों को किया गया जागरूक

रामगढ़। रामगढ़ जिला अंतर्गत 5 साल तक के शत प्रतिशत बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने के मद्देनजर उपायुक्त रामगढ़ माधवी मिश्रा द्वारा द्वारा दिए गए निर्देश के आलोक में जिला शिक्षा अधीक्षक संजीत कुमार के निर्देश पर शनिवार को विभिन्न सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा बच्चों को पल्स पोलियो अभियान के प्रति जागरूक किया गया। मौके पर सभी को 2 जुलाई से 4 जुलाई तक चलने वाले पल्स पोलियो अभियान के संबंध में जानकारी देने के क्रम में बच्चों से अपने अभिभावकों एवं आसपास के अन्य लोगों को पल्स पोलियो अभियान के प्रति जानकारी देने की अपील की गई। गौरतलब है कि पल्स पोलियो अभियान 2 जुलाई से 4 जुलाई तक चलेगा। इस दौरान 2 जुलाई को अभिभावक बूथ पर जाकर अपने बच्चों को पोलियो की खुराक पिला सकते हैं वही 3 एवं 4 जुलाई को सहिया एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के द्वारा घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का कार्य किया जाएगा।

जेएनवी प्रवेश परीक्षा में सफल सोनाली को गौतम कुमार ने दी बधाई

बरकट्ठा। विधानसभा के युवा नेता गौतम कुमार ने बरकट्ठा छठ गेट समीप के निवासी संजय दास की द्वितीय पुत्री सोनाली को जवाहर नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर उनके घर पहुंच कर बधाई दी तथा छात्रा के उज्जवल भविष्य की शुभकामना की।कहा कि बरकट्ठा की बेटियां तरह-तरह की सफलता का परचम लहरा रही है।विदित हो कि संजय दास की बड़ी बेटी भी नवोदय की परीक्षा पहले पास कर चुकी है और उसी विद्यालय में अध्ययनरत है।इस अवसर पर गौतम कुमार ने सोनाली को अपने साथियों के साथ मिठाई खिलाकर बधाई दी।गौतम कुमार ने कहा कि संजय जी अपने बच्चों के बेहतर शिक्षा के लिए हमेशा जागरूक रहे हैं।वहीं बधाई देने वाले में पिताम्बर नायक, विक्की गुप्ता ,अशोक गुप्ता,बासुदेव मोदी,पप्पु गुप्ता, सुबोध सोनी, कमलेश गुप्ता, शुभम सोनी, शिव कुमार मेहता मौजूद थे।

हजारीबाग में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हजारीबाग । भारत सरकार के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय के तत्वावधान में डीवीसी हजारीबाग में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इसमें सांख्यिकी के जनक डॉ. प्रो. पीसी महालनोबिस की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर और दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । कार्यक्रम में अतिथि के रूप में विनोबा भावे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुबोध सिंह शिवगीत, डीवीसी के निदेशक व उप निदेशक क्रमवार डॉ संजय कुमार व डॉ जीतेंद्र झा, बैंक ऑफ इंडिया की हिंदी अधिकारी इंद्रा सिंह, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक सह पर्यावरणविद् डॉ मनोज कुमार ने दफ्तरों ने हिन्दी में काम करने पर जोर दिया । इससे पहले राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय हजारीबाग के वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी सह कार्यालय प्रभारी सूरज कुमार, के.वी.शेखर और जयदेव कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया । वहीं राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्रशिक्षु छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया । कार्यालय प्रभारी सूरज कुमार ने स्वागत भाषण दिया गया ।

धूमधाम से निकाली गयी साईं बाबा की पालकी यात्रा

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। शहर के राधा कृष्ण कॉलोनी स्थित आनंद साई दरबार 13 वां तीन दिवसीय स्थापना दिवस समारोह साई बाबा की पालकी यात्रा के साथ 24 जून को आरंभ हुआ। पालकी यात्रा से पूर्व पुजारी द्वारा साई बाबा की विधिवत पूजा अर्चना की गई। उसके पश्चात मंदिर परिसर से गाजे बाजे के साथ साइ बाबा की पालकी यात्रा आरंभ हुई। पालकी यात्रा झंडा चौक, चट्टी बाजार, लोहार टोला, सुभाष चौक, मेन रोड होते हुए वापस मंदिर परिसर पहुंचकर संपन्न हुई। पालकी यात्रा के दौरान श्रद्धालु साई बाबा के मधुर भजन गाते बढ़ते चल रहे थे। जिससे शहर का वातावरण भक्तिमय हो गया था। साई बाबा की पालकी यात्रा का शहर के विभिन्न स्थानो पर स्वागत किया गया। वहीं, पालकी यात्रा के गुरूद्वारा साहिब पहुंचने पर गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से पालकी यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं का शीतल पेयजल के साथ स्वागत किया गया। आनंद साई दरबार से आयोजित साई बाबा की पालकी यात्रा के दौरान साई बाबा का वेष धारण किये पूर्व विधायक जयुमा शर्मा के पुत्र विमल शर्मा लोगों के बीच आकर्षण का केंद्र बने रहे। वहीं, आनंद साई दरबार के 13वें स्थापना दिवस समारोह को लेकर मंदिर का रंग रोगण कराया गया है। साथ ही मंदिर की आकर्षक विद्युत बल्बों से सजावट की गई है। जिससे मंदिर की भव्यता देखते ही बन रही है। स्थापना दिवस समारोह के तहत दूसरे दिन 25 जून को मंदिर में विशेष पूजन का आयोजन किया जाएगा। जबकि 26 जून को अटूट भंडारे के साथ स्थापना दिवस समारोह का समापन होगा। साई बाबा की पालकी यात्रा में झारखंड सेवा समिति के अध्यक्ष अमित सिन्हा, झारखंड वैश्य समाज के केंद्रीय अध्यक्ष नंदकिशोर गुप्ता उर्फ नंदू बाबू,अजीत जायसवाल, प्रो संजय सिंह, संतोष सिन्हा, विजय मेवाड़, जितेंद्र प्रसाद डब्लू, मुन्ना सिन्हा, राजेश साव, विनोद साव, अरविंद अग्रवाल, जीतू अग्रवाल, आनंद सिन्हा, संजय दांगी, बादल, सन्नी सिन्हा, आनंद सिंह, उत्तम, नवनीत कुमार, मनोज मंडल, अजय कुमार,बसंत कुमार,कैलाश चंद्र साह, आयुष कुमार गुप्ता,सुरेश प्रसाद, मौजन कुमार, सलमान, अशोक कुमार महतो,अनूप विश्वकर्मा, दीपक सहित अनेक श्रद्धालु शामिल हुए।

प्रशिक्षण प्राप्त कर वापस लौटे जिप उपाध्यक्ष

बेहतर मॉडल किया जायेगा लागू : किसुन

नवीन मेल संवाददाता

बरही । विगत 19 जून से 25 जून तक हैदराबाद में हो रहे पांच दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर जिप उपाध्यक्ष किसुन यादव अपने प्रदेश लौट चुके है, देर रात तक अपने गृह क्षेत्र लौटने की संभावना है. दूरभाष पर उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान पंचायती राज योजना से संबंधित कई महत्पूर्ण जानकारियां मिली. पंचायत को कैसे सुदृढ़ और सशक्त बनाया जाए, योजनाएं कैसी होनी चाहिए, उसे मूर्त रूप कैसे दिया जाए, कोष कहां से और कैसे उपलब्ध हों आदि जैसे कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई. पंचायत में विभिन्न मॉडलो को विकसित करने, आने वाले समस्याओं को समाधान करने संबंधित विभिन्न तकनीति और गैर तकनीकी जानकारियां दी गई. जिसका हजारीबाग जिला के पंचायती संस्थाओं के लिए उपयोग करने का प्रयास किया जायेगा. उन्होंने बताया कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से जनप्रतिनिधियों को नई शक्ति और ऊर्जा मिलती है. सरकार के इस पहल के लिए उन्होंने राज्य सरकार का अभार जताया. प्रशिक्षण के क्रम में बतौर प्रशिक्षक मुख्य रूप से डॉ ए रमेश शक्तिवेल, मोनिश जैन, त्रिलोकी कर्ण जैसे विशेषज्ञों के मार्गदर्शन मिले है. जिसे वह क्षेत्र में हर संभव धरातल पर प्रयोग करने का प्रयास करेगे.

गैड़ा निवासी अशोक ठाकुर का पुणे में सड़क हादसे में मौत, परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गैड़ा के ग्राम ठाकुर टोला निवासी अशोक ठाकुर 21वर्ष, पिता जेतलाल ठाकुर की मौत सड़क दुर्घटना में हो गई। विदित हो कि अशोक ठाकुर महाराष्ट्र के पुणे में रहकर ट्रेलर गाड़ी में खालासी का काम करता था। जिसकी बीते शुक्रवार सुबह लोनावाला में सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई। घटना की सूचना परिजन एवं गांव वालों को मिलने पर क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। वहीं परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। गांव वालों ने बताया कि अशोक ठाकुर काफी सीधा-साधा मृदुल स्वभाव का लड़का था।पहले गैड़ा में साउंड ऑपरेटर का काम करता था जो लगभग एक माह पहले महाराष्ट्र काम करने के लिए गया था ।घटना की सूचना पाते ही उप मुखिया चंद्रदीप पांडेय मृतक के घर जाकर शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया । उन्होंने प्रशासन से गरीब परिवार को मुआवजा देने की मांग की।मौके पर सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

बरही में रेलवे ट्रैक पर मिला विक्षिप्त का शव

बरही । उज्जैन रेलवे ट्रैक से एक विक्षिप्त का लाश बरामद हुआ है. जानकारी देते हुए इंस्पेक्टर रोहित कुमार सिंह ने बताया कि घटना शनिवार की दोपहर की है. शव ग्रामीणों के द्वारा देखी गई. जिसकी सूचना पर वह दल बल के साथ पहुंकर शव को कब्जे में लेकर हजारीबाग पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया. शव की पहचान नहीं हो सकी है, मृतक की उम्र 50 वर्ष के करीब है. शव शीत गृह में सुरक्षित रखा गया है.

अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी के 61वें जन्मदिन पर कर्मियों ने उत्साहपूर्वक लिया हिस्सा

अदाणी फाउंडेशन के स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं को मिला सम्मान

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी के 61वें जन्मदिन के अवसर पर शनिवार को मटवारी स्थित शिवांस क्लीनिक में कंपनी द्वारा आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया और 36 लोगों ने रक्तदान किया। इस रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने का भी अभियान चलाया गया। शिविर का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना था। इस मौके पर रक्तदान को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर किया गया। इस अवसर पर सदर अस्पताल से जुड़े चिकित्सा कर्मियों ने बताया कि कई लोग रक्तदान करने से कतराते हैं, जबकि इससे कोई हानि नहीं होती बल्कि कई प्रकार के लाभ होते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति को हमेशा रक्तदान करते रहना चाहिए। रक्त के अभाव में जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे मरीज को समय रहते रक्त मिल जाने से उसकी जान बच जाती है। इससे बड़ा जीवन में पुण्य का कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता। इसके साथ ही रक्तदान करने से ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल भी नियंत्रित रहता है। रक्तदान के बाद सभी रक्त दाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। रक्तदान शिविर को सफल बनाने में शेख भिखारी मेडिकल

रक्तदान शिविर में 36 अधिकारियों ने किया रक्तदान

कॉलेज के ब्लड बैंक प्रभारी डॉक्टर नीरज कुमार, टेक्नीशियन आर खैरी और वॉलंटरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष निर्मल जैन आदि का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर गोंदलपुरा खनन परियोजना के प्रमुख धर्मेंद्र दूबे, जीएम आलोक कुमार, डीजीएम संजय कुमार, कुमार विवेक, वरीय प्रबंधन भीखम सिंह, आशीष कुमार, राहुल राज समेत बड़ी संख्या में अधिकारी और कर्मचारी मौजूद थे।

राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम को लेकर चलाया कुष्ठ रोगी

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत दिनांक 15/06/2023 से 28/06/2023 तक कुष्ठ रोग खोजी अभियान चलाया जाना है। जिसके लिए रामगढ़ जिले के 1215 टोला को चिन्हित कर 201 सुपरवाइजर एवं 1157 सहियाओं के साथ 1157 टीम बनाये गए हैं। इसी क्रम में शनिवार को जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ सविता वर्मा और उनकी टीम द्वारा चितरपुर, कोठार एवं मुरामकला में कुष्ठ रोगी खोजो अभियान चलाया गया। साथ ही मौके पर डॉ वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज मे कुष्ठ रोग को लेकर फैले भ्रांतियों को दूर करना एवं प्रत्येक प्रखंड के माइक्रोप्लान

के अनुसार साहिया के माध्यम से घर-घर खोज अभियान किया जाना है। वहीं, उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में कुष्ठ रोग कोई अभिशाप नही है बल्कि समुचित उपचार से ठीक होने वाला बीमारी है। साथ ही उन्होने सभी से अपील करते हुए कहा कि यदि किसी व्यक्ति को अपने शरीर या किसी अन्य के शरीर पर लाल रंग का दाग दिखे तो उसकी जांच आवश्य कराये। जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में इसका मुफ्त जांच, मुफ्त इलाज, मुफ्त दवाओं के साथ प्रोत्साहन राशि व अन्य सामग्रियां भी दी जाती हैं। ज्ञात हो कि इस अभियान के तहत अब तक कुल 411 संदिग्ध लोगो मे 14 लोगो के कुष्ठ से पीड़ित होने की पहचान की गई गई और वे सभी इलाजरत हैं ।

आरोप

बाबा साहब स्मारक निर्माण स्थल को लेकर विवाद

दो पक्ष आमने-सामने, मामला पहुंचा थाना व अंचल

स्थल जांच की दिए गए है आदेश, उचित कारवाई होगी : सीओ

नवीन मेल संवाददाता

बरही । करियातपुर के ग्रामीणों ने इंस्पेक्टर सह थाना प्रभारी के नाम आवेदन देकर भीम आर्मी के कुछ सदस्यों पर शांति सौहार्द बिगाड़ने का आरोप लगाया गया है. दिए आवेदन में बताया गया कि भीम आर्मी सेना के लक्ष्मण रविदास, राहुल कुमार, सुनील रविदास, जितेंद्र रविदास, अनिल रविदास, हेमंत रविदास और पारस शरण देव ने करियातापुर दुर्गा के बगल के मैदान में बाबा साहब का स्मारक बनाया जा रहा है. 21 जून को इन लोगो की अगुवाई में उक्त स्थल पर स्मारक के शिलान्यास किया कर सौहार्द बिगाड़ने का काम किया गया है. आरोप लगाया गया कि उक्त स्थल सरकारी जमीन है जिस पर दुर्गा पूजा एवं अन्य कार्यक्रमों में मेला इत्यादि का आयोजन किया जाता है. ऐसे में भविष्य में होने वाले भीड़ भाड़ में बाबा साहब की प्रतिमा के साथ अपमान की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है. जिससे स्थापित होने से भविष्य में दो समुदाय के बीच टकराव की संभावना हो सकती है. इसे लेकर करियातपुर वासियों में रोष है. आवेदन देकर उचित कार्यवाही करने की मांग की गई है. आवेदन में चंदन कुमार, संतोष प्रजापति आदि के हस्ताक्षर है. आवेदन की प्रति सांसद प्रतिनिधि और जिला परिषद सदस्य को भी दिया गया है. क्या कहते है मुखिया: स्थानीय मुखिया मनोज कुमार ने बताया कि मामला सरकारी जमीन से संबंधित है इसकी सूचना अंचलाधिकारी को ग्रामीणों के द्वारा दी गई है. सीओ से नियम संगत कार्रवाई करने की अपील की जाती है.

क्या कहते है सीओ : मामले के संबंध में सीओ अरविंद देवाशीष टोप्पो ने बताया कि मामला सरकारी जमीन की है. ऐसे में किसी भी संरचना के लिए अनुमति आवश्यक होते हैं. बाबा साहब का स्मारक बनाना अच्छी बात है परंतु बिना अनुमति की सरकारी जमीन का अतिक्रमण अनुचित है. जांच उपरांत उचित कार्रवाई की जाएगी.

पाकरटांड़ प्रखण्ड कार्यालय में प्रखंड स्तरीय स्कूल रुआर कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षक स्वयं को पहचान कर करें दायित्वों का निर्वहन : जोसिमा खाखा

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। पाकरटांड़ प्रखंड कार्यालय में प्रखंड स्तरीय स्कूल रुआर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जिप सदस्य जोसिमा खाखा व विशिष्ट अतिथि प्रमुख रजत लकड़ा ने दीप जला कर किया। अपने संबोधन में जोसिमा खाखा ने कहा कि सरकार सभी बच्चों को शिक्षित करना चाहती है। शिक्षा से भटके बच्चों को स्कूल तक लाने में शिक्षकों की अहम भूमिका रहेगी। ताकि बच्चे शिक्षित होकर समाज के विकास में अग्रसर हो सके। जो बच्चे विद्यालय छोड़ चुके हैं, अथवा विद्यालय में नामांकन नहीं कराए हैं। वैसे बच्चों को वापस स्कूल लाने और उन्हें शिक्षित करना इस रुआर कार्यक्रम का उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के तहत ड्राप आउट एकबच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना शिक्षकों के लिए एक चुनौती है। उन्होंने कहा कि आप सभी शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी पूर्वक निभाएं। गांव के गरीब से गरीब बच्चों को स्कूल से जोड़ें और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दें। इतनी सुविधा के बावजूद आज भी हमारे क्षेत्र के बच्चे काफी पिछड़े हुए हैं। इस अभिशाप को दूर करना है। यह तभी सम्भव है जब सभी शिक्षक अपने कर्तव्य को बखूबी निभाएं। सरकारी स्कूल में शिक्षा के प्रति जो नेगेटीव सोंच लोगो में घर कर गई है, उसे पॉजिटिव सोंच में बदलना है। मौके पर प्रमुख रजत लकड़ा, बीडीओ शक्तिकुंज, बीईओ आदि उपस्थित थे।

बोलबा में स्कूल रुआर 2023 को लेकर कार्यशाला का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

बोलबा। प्रखंड कार्यालय सभागार मे स्कूल रू आर 2023 को लेकर कार्यशाला का किया गया आयोजन ।इस मौके पर जिला परिषद सदस्य अनिता सोरेंग, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी उषा मिंज, अंचल अधिकारी बलिराम माँझी ,समसेरा मुखिया सुरजन बडाईक,मालसाडा मुखिया बिनोद बडाईक ,पिडियापोश मुखिया शान्ति देवी,कादोपानी मुखिया शशिकला तिर्की एवम बेहरीनबासा पंचायत के मुखिया स्नेहलता केरकेट्टा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उदघाटन किया । इस मौके पर कहा गया कि प्रखण्ड क्षेत्र के अनामाकित एव छीजित बच्चो को नजदीक के विद्यालय मे नामांकन कराना सबकी जिम्मेवारी है । सभी पंचायत प्रतिनिधियों से सहयोग की अपील की गई । इसके साथ ही सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के बारे मे विस्तृत जानकारी दी गयी। बच्चो को विद्यालय मे नामांकन कराने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य ,पी डि एस दुकानदार ,ए एन एम , सहिया को भी जोडने की की बात कही गई । इसके साथ प्रत्येक गाँव बस्ती में समिति का गठन कर अनामाकित एवं छिजित बच्चो को ढूढने के बाद उन्हें हर हाल में नामांकन कराने की बात कही गई । प्रखण्ड कार्यक्रम पदाधिकारी मनमोहन गोस्वामी ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद दिया ।उन्होंने स्कूल रूआर 2023 कार्यक्रम के बारे मे विस्तृत रूप से जानकारी देते हुए कहा कि बीस दिन का कार्यक्रम है जो 26 जून से शुरू किया जायगा। उन्होंने बच्चो के नामांकन के साथ ठहराव भी अनिवार्य है ।इसके बाद सभी लोगों ने ईमानदारी पूर्वक काम करने का शपथ शपथ लिया गया ।शिक्षक सुरेश महतो एवं प्रफुल्ल तिर्की ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सी आर पी विश्वा सिंह ने किया।

बानो प्रखंड में स्कूल रूआर- 2023 कार्यक्रम आयोजित

बानो। प्रखंड कार्यालय बानों में रूआर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में जिला परिषद सदस्य बिरजो कंडुलना , प्रखंड प्रमुख सुधीर डांग, प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ,प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी रूथ अनीता जीवन को बुके देखकर सम्मानित किया गया ।स्मिथ कुमार सोनी ने रूआर कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी ने जो बच्चे विद्यालय छोड़ चुके हैं उन्हें पुनः वापस लाने के लिए पुरजोर कोशिश करने का निर्देश दिया। मुख्य अतिथियों ने भी बारी -बारी से अपना विचार देते हुए शिक्षकों का पूर्णरूपेण सहयोग करने की बातें कहीं। इस कार्यक्रम के दौरान जिला परिषद सदस्य ने कहा कि मैं सभी जनप्रतिनिधियों मुखिया ,वार्ड सदस्य आदि को पत्र लिखकर इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर शिक्षकों का सहयोग करने की अपील की साथ ही साथ उन्होंने विद्यालय में स्थित समस्याओं के निराकरण के संबंध में भी बातें की। इसी कार्यक्रम के दौरान प्रयास कार्यक्रम के संबंध में विस्तृत ढंग से केदारनाथ सिंह के द्वारा जानकारी साझा की गई और एफ एल एन कार्यक्रम के तहत चलने वाले कार्यक्रम के बारे में ओम प्रकाश ओहदार ने जी 20 और एफएलएन के पारस्परिक संबंध के बारे में विस्तृत जानकारियां दी। इस कार्यक्रम में बीपीओ निर्मला लिंडा ने विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए निर्देश दिए ।अंत में मनोज भगत ने सभी अतिथियों एवं प्रभारी प्रधानाध्याप का धन्यवाद ज्ञापन दिया ।कार्यक्रम में शिव शंकर सिंह ,परमानंद ओहदार, प्रेम प्यारेलाल, प्रेम किशोर नायक ,मुरारी साहू ,संध्या सिंह सहित प्रखण्ड केबिभिन्न विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मौजूद थे।

परसा में मना महारानी दुर्गावती बलिदान दिवस

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा/बोलबा। बोलबा प्रखंड के अवगा परसा गांव में शनिवार को गोंडवाना महारानी दुर्गावती बलिदान दिवस का आयोजन किया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में पूर्व मंत्री एनोस एक्का उनके पुत्र झापा जिला युवा अध्यक्ष संदेश एक्का, केंद्रीय समिति सदस्य विरसा मांझी एवं अन्य उपस्थित रहे। सर्वप्रथम रिबन काटकर इस कार्यक्रम की शुरूआत की जिसके बाद महारानी दुर्गावती के तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित की। मौके पर उन्होंने कहा गोंडवाना साम्राज्य की वीरांगना महारानी दुर्गावती का नाम इतिहास में अमर है उन्हें अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए जिस प्रकार अपने राज्य को बचाया है और इस देश में अपना एक अलग पहचान छोड़ी है वह किसी से छुपा हुआ नहीं है ।रानी दुर्गावती हमारे देश की वो वीरांगना है, जिन्होंने अपने राज्य की रक्षा के लिए मुगलों से युद्ध कर वीरगति को प्राप्त हो गई. वे बहुत ही बहादुर और साहसी महिला थीं, जिन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद न केवल उनका राज्य संभाला बल्कि राज्य की रक्षा के लिए कई लड़ाईयां भी लड़ी ।हमारे देश के इतिहास की बात की जाये तो बहादुरी और वीरता में कई राजाओं के नाम सामने आते है, लेकिन इतिहास में एक शक्सियत ऐसी भी है जोकि अपने पराक्रम के लिए जानी जाती है वे हैं रानी दुर्गावती। रानी दुर्गावती अपने पति की मृत्यु के बाद गोंडवाना राज्य की उत्तराधिकारी बनीं, और उन्होंने लगभग 15 साल तक गोंडवाना में शासन किया ।इतना ही नहीं रानी दुर्गावती ने मुगल शासक अकबर के आगे कभी भी घुटने नहीं टेके थे। इस वीर महिला योद्धा ने तीन बार मुगल सेना को हराया था और अपने अंतिम समय में मुगलों के सामने घुटने टेकने के जगह इन्होंने अपनी कटार से अपनी हत्या कर ली थी।

भाजपा ने चलाया घर-घर जनसंपर्क अभियान

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। भारतीय जनता पार्टी सिमडेगा नगर मंडल अध्यक्ष सत्यनारायण प्रसाद के नेतृत्व में शनिवार को सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 9 वर्षों का कार्यकाल सेवा सुशासन और गरीब कल्याण साल मानते हुए भाजपा कार्यकताओं ने सिमडेगा नगर क्षेत्र मे डोर टू डोर जाकर लोगों को पंपलेट बांटते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 9 वर्षों के कार्यकाल में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के बारे में बताया गया। जिला मंत्री तुलसी कुमार साहू ने बताया कि गरीब कल्याण के क्षेत्र में किए गए कार्यों के बारे में घर-घर जनसंपर्क कर विस्तार पूर्वक आम जनता को जानकारी दी गई जैसे पीएम आवास, उत्तर पूर्वी राज्यों का ऐतिहासिक विकास ,बुनियादी ढांचे का अभूतपूर्व विकास ,सांस्कृतिक विरासत का नया युग, अंतोदय का मूल मंत्र , समृद्ध किसान, महिला सशक्तिकरण, निरोगी जीवन सबका अधिकार ,भारत की अमृत पीढ़ी, मध्यम वर्ग जीवन, आसान सशक्त भारत इत्यादि किए गए कार्यों को लेकर जनसंपर्क कर आम जनता को बताया गया । इस जनसंपर्क अभियान में जिला मंत्री तुलसी कुमार साहू नगर अध्यक्ष सतनारायण प्रसाद पूर्व जिला अध्यक्ष संजय ठाकुर भाजपा नेता संजय शर्मा, सुमित सिंह ,जिला कोषाध्यक्ष अनूप प्रसाद पूर्व प्रत्याशी श्रद्धानंद बेसरा सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने डोर टू डोर जाकर जनसंपर्क अभियान को चलाया।

मारपीट के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

बोलबा। बोलबा पुलिस ने मारपीट के आरोपी को गिरफ्तार करते हुए शनिवार को सिमडेगा जेल भेज दिया। इस संबंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी अरुनिस रोशन ने बताया कि पिछले मई महीने में अलिंगुड पहारटोली गांव में गांव के ही सहदेव सिंह नामक व्यक्ति को उसके भतीजे बलराम सिंह द्वारा मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया था। इधर घायल अवस्था में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जिसके बाद सहदेव सिंह के लिखित आवेदन के आधार पर बोला थाना में कांड संख्या 7/23 धारा 307 के तहत मामला दर्ज किया गया था और इसी मामले में आरोपी बलराम सिंह को गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया।

महारानी दुर्गावती बलिदान दिवस पर भाजपा ने किया श्रद्धांजलि अर्पित

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। गोंडवाना महारानी दुर्गावती बलिदान दिवस के मौके पर शनिवार को भाजपा सिमडेगा द्वारा अल्बर्ट एक्का स्टेडियम समीप बने महारानी दुर्गावती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की मौके पर पूर्व मंत्री रही विमला प्रधान ने कहा कि गोंडवाना महारानी दुर्गावती का इतिहास पूरे विश्व में प्रसिद्ध है जिन्होंने मुगल साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ कर उन्हें घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था। उनकी जीवनी आने वाले पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करते रहेगी। अंतिम सांस तक सर्वधर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर अपने लोगों की रक्षा किया जो कि युवा योग तक उसका नाम अमर रहेगी मौके पर मुख्य रूप से नगर अध्यक्ष सत्यनारायण प्रसाद जिला उपाध्यक्ष सतीश पांडे जिला मंत्री शकुंतला देवी युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष अजय सिंह श्रद्धानंद बेसरा रुकमणि देवी नीरज बड़ाईक उत्तम केरकेट्टा नीरज बड़ाईक राकेश सिंह देवकीनंदन साय जिला मीडिया प्रभारी कृष्णा ठाकुर आदि मौजूद रहे।

जनता दरबार में वन पट्टा व परिसंपत्तियों का वितरण

नवीन मेल संवाददाता

जलडेगा । प्रखण्ड मुख्यालय में जनता दरबार सह परिसम्पति वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि विधायक नमन बिक्सल कोंगाड़ी उपस्थित हुए।विधायक ने कहा कि लोकतांत्रिक देश के लिए यह सबसे सुंदर पल होता है जब जनता के दरबार में लोगों की समस्याओं को सुना जाता है ।साथ ही साथ लोकतंत्र मजबूत होता है ।आज कल्याणकारी योजना को आम जनता तक पहुंचे, इसलिए आज जनता दरबार कार्यक्रम किया गया है कार्यक्रम के दौरान 14 व्यक्तियों के बीच व्यक्तिगत वन पट्टा वितरण किया गया ।साथ ही साथ परिसम्पति का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम में जलडेगा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी,अंचल अधिकारी, सभी विभाग के पदाधिकारी मौजूद थे साथ ही साथ सभी विभाग का स्टॉल लगा हुआ था। विधायक ने कहा विधानसभा क्षेत्र के सभी प्रखण्डों में हर माह जनता दरबार करेंगे। कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि मोहम्मद समी आलम, रावेल लकड़ा, अर्जुन होरो, प्रखण्ड अध्यक्ष सुशील जड़िया, गैब्रियल समद, सुनील सुरीन,अमर समद,क्लेमेंट टेटे, सुरेश द्वीवेदी, फूलकेरिया डांग, प्रखण्ड प्रमुख जोसेफ लुगुन, जिला परिषद सदस्य रोजालिया शान्ता कण्डुलना, शिशिर डांग,लाझरुस समद,पंकज साहू, सभी पंचायत के मुखिया, पंचायत समिति सदस्य आदि उपस्थित थे।

सांप काटने के बाद झाड़-फूक के चक्कर में महिला की मौत

जलडेगा। ओडगा ओपी क्षेत्र के टोनिया बुचा टोली निवासी सुकरमानी बाघेला, पति सोमा बाघेला, उम्र 45 वर्ष की मौत सांप काटने से हो गई। घटना शुक्रवार रात की है, बताया गया सांप काटने के बाद काफी देर तक झाड़-फूक की गई बाद में स्थिति बिगड़ने पर सुबह हास्पिटल ले जाने के दौरान महिला की मौत हो गई। मृतिका के पति ने बताया कि रात को वो जमीन पर बिस्तर बनाकर सोए थे, इस दौरान जहरीले करैंत सांप ने उसकी पत्नी को डस लिया। इधर घटना की जानकारी के बाद जलडेगा अंचल अधिकारी डॉ खगेन महतो ने पीड़ित परिवार को आर्थिक सहयोग देकर शव का पोस्टमार्टम कराने के लिए प्रेरित किया। अंचल अधिकारी ने कहा की पोस्टमार्टम के बाद प्रावधान के अनुसार पीड़ित परिवार को चार लाख रुपए मुआवजा दिया जाएगा। इस दौरान जलडेगा प्रमुख, जिला परिषद सदस्य, बीस सूत्री अध्यक्ष, विधायक प्रतिनिधि ने भी अस्पताल जाकर पीड़ित परिवार से मिलकर उन्हें ढांढस बंधाया।

स्वागत | कोलेबिरा के सेलसोया गांव में झारखंडपार्टी ने समस्याओं को लेकर की बैठक

समस्याओं को दूर करना पहली प्राथमिकता : एनोस

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा/कोलेबिरा। कोलेबिरा प्रखंड के सेलसोया गांव में शनिवार को झारखंड पार्टी की ग्रामीणों की समस्याओं को लेकर एक बैठक का आयोजन किया। मौके पर पूर्व मंत्री एनोस एक्का झारखंड पार्टी युवा जिला अध्यक्ष संदेश एक्का मुख्य रूप से उपस्थित रहे। मौके पर ग्रामीणों ने पूर्व मंत्री का स्वागत किया जिसके बाद उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड पार्टी क्षेत्र की समस्याओं को प्राथमिकता पर दूर करने का प्रयास कर रही है। आप सभी समाज में संगठित रह कर अपने हक अधिकार के लिए आगे बढ़े झारखंड पार्टी आपका सहयोग करेगी। मौके पर ग्रामीणों ने बिजली पानी सड़क प्रधानमंत्री आवास वृद्धा पेंशन राशन कार्ड एवं कई अन्य प्रकार की समस्याओं को लेकर बातें रखी जिस पर उन्होंने कहा कि आपकी समस्याओं को बारी-बारी से दूर करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जो सरकार चल रही है और उसके क्षेत्र में जो जनप्रतिनिधि हैं उनकी उदासीन रवैया के कारण कोलेबिरा विधानसभा क्षेत्र के ऐसे जगह है जहां पर विकास की किरणें नहीं पहुंच रही है यह दुखद है। उनका के मेरे मंत्रिमंडल कार्यकाल के दौरान इस क्षेत्र में कई ऐसे विकास कार्य हुए हैं परंतु वर्तमान समय में लोग अपने जनप्रतिनिधि को चुनकर ठगा महसूस कर रहे हैं इसलिए आप आगामी चुनाव में संदेश एक्का का सहयोग करते हुए झारखंड पार्टी को मजबूत करें क्षेत्र का सभी समस्याओं को दूर की जाएगी। मौके पर सुनील जोजो, मनकुश कण्डुलना, सीरिल डांग अंजार डुंगडुंग, फिलिप डांग सेवन संमद विलियम जोजो अजीत संमद एवं झारखंड पार्टी की ओर से अमन खेस,रसाल खलखो ,अंकित सुरीन नुवेल हैरेंज चिराग बाड़ा जोसेफ डुंगडुंग उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी केंद्रों पर भी अब गैस चूल्हे पर पोषाहार बनेगा, धुएं से मिलेगी निजातः जोसिमा खाखा

सिमडेगा। जिप सदस्य जोसिमा खाखा ने प्रखंड की 150 आंगनबाड़ी सेविकाओं को निशुल्क में गैस चूल्हा और सिलेंडर दिया। उन्होंने कहा कि अब आंगनबाड़ी केंद्रों पर गैस चूल्हे पर पोषाहार बनेगा। इससे सेविका व सहायिका को धुएं से निजात मिलेगी। उन्होंने सेविकाओं को गैस चूल्हे के उपयोग के समय बरती जाने वाली सावधानी के बारे में भी बताया। जोसिमा ने कहा कि लकड़ी जलाकर पोषाहार बनाने के समय निकलने वाले धुएं से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। इससे निजात के लिए गैस चूल्हा का उपयोग जरुरी है। उन्होंने कहा कि शेष आंगनबाड़ी केंद्रों में भी जल्द गैस चूल्हा व सिलेंडर का वितरण किया जाएगा। उन्होंने सेविकाओं को भी कई निर्देश दिए। साथ ही मेन्यू के अनुसार ही भोजन बनाने की बात कही। जोसिमा ने कहा कि सेविकाएँ अपने बच्चो की तरह आँगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों की देखभाल करें। उन्होंने पोषणयुक्त भोजन खिलाएं। बच्चों को ककहरा की ज्ञान दें। केंद्र में साफ सफाई पर ध्यान दें। मौके पर प्रमुख रजत लकड़ा, बीडीओ शक्तिकुंज, पंसस प्रतिमा कुजूर, सीडीपीओ आदि उपस्थित थे।

किसानों को 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर धान के उन्नत बीज उपलब्ध

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर (गढ़वा)। कृषि, पशुपालन व सहकारिता विभाग झारखण्ड सरकार एवं बिरसा बीज उत्पादन विनियम, वितरण व फसल विस्तार योजना के तहत भोजपुर पैक्स में उपलब्ध कराया गया धान का बीज किसानों के बीच 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर वितरण किया गया। इस अवसर पर पंचायत के मुखिया ओमप्रकाश उरांव ने कहा कि सरकार द्वारा किसानों को 50 प्रतिशत अनुदानित मूल्य पर धान का उन्नत बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसान सरकार की इस योजना का लाभ उठाकर खेती करें। उन्होंने कहा कि समय पर धान का बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। पैक्स अध्यक्ष सुदेश्वर विश्वकर्मा ने कहा कि किसानों को हाइब्रिड धान 50 प्रतिशत अनुदान पर आवश्यकतानुसार दिया जा रहा है। पैक्स से धान बीज लेने के लिये आधार कार्ड और जमीन के रसीद का छाया प्रति लाना जरूरी है। मौके पर एसी मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष अनिल पासवान, उप मुखिया मनीष यादव, पैक्स सचिव शिव प्रसाद यादव, समाजसेवी नागेन्द्र पासवान, जय कुमार यादव, रामकेश यादव, बालेश्वर यादव, राज कुमार यादव, मनोहर यादव, हरि राम, सूरज सिंह सहित अन्य किसान उपस्थित थे।

पुलिस सेवा लक्ष्य के तहत हैंडबॉल का वितरण

डंडा (गढ़वा)। झारखंड पुलिस सेवा ही लक्ष्य के तहत शनिवार को एएसआई शैलेंद्र सिंह के द्वारा डंडा प्रखंड के कोरटा उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के बीच हैंडबॉल बॉल स्किपिंग रोप, टॉफी इत्यादि का वितरण किया गया। एसआई शैलेंद्र सिंह ने बताया कि कुछ दिन पहले मेरा डंडा थाना में पोस्टिंग हुआ है। इससे पहले मैं मेराल थाना में मुंशी के पद पर कार्यरत था। विभागीय कार्य के बाद जो मेरे पास टाइम मिल पाता है हमने झारखंड पुलिस सेवा ही लक्ष्य के तहत जहां भी जाता हूं बच्चों के बीच पठन-पाठन का सामग्री सहयोग के रूप में वितरण करता हूं। साथ ही बच्चों को व्यायाम योगा कराता हूं। क्लास के माध्यम से बच्चों को ध्यान से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता हूं। यह एक छोटा सा प्रयास लगातार जारी रहेगा।

मुखिया ने उपविकास आयुक्त को ज्ञापन सौंपा

नवीन मेल संवाददाता

केतार (गढ़वा)। जिले के केतार पंचायत के मुखिया प्रमोद कुमार ने उपविकास आयुक्त राजेश कुमार राय को ज्ञापन सौंपकर पंचायत के विभिन्न समस्याओं को लेकर अवगत कराया। आवेदन में उल्लेख किया है कि केतार बाजार में जलजमाव होने से लोगों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। वहीं आवागमन बाधित हो रहा है। राहगीरों को पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। इसको लेकर कपूरी गेट से राजकीय मध्य विद्यालय एवं रामबिलास विश्वकर्मा के घर से पण्डा नदी तक नाला निर्माण कराने की मांग की है। साथ ही पंचायत में पेयजल के लिए चापाकल का अधिष्ठापन, नावाडीह में पण्डा नदी किनारे गार्डवाल का निर्माण, केतार बाजार एवं कपूरी गेट के समीप हाई मास्क लाइट की अधिष्ठापन, पण्डा नदी में जल स्तर को बनाये रखने के लिए बियर स्किम का निर्माण, पंचायत सचिवालय के समीप निर्मित गोदाम का जीर्णोद्धार,सामुदायिक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर की पदस्थापना, पंचायत सचिव की पदस्थापना, किसानों के द्वारा 2018 -19-20 का फसल बीमा का भुगतान, पशुपालकों को पशु निर्माण हेतु पशु शेड स्वीकृति दिलाने की मांग की है।

झामुमो के अनुमंडल अध्यक्ष बने हरेंद्र

मेराल (गढ़वा)। झारखंड मुक्ति मोर्चा के गढ़वा जिला अध्यक्ष तनवीर आलम खान के द्वारा मेराल प्रखंड के हासनदाग निवासी मुखिया पति हरेंद्र चौधरी को गढ़वा जिला अनुमंडल अध्यक्ष के पद पर जिम्मेदारी सौंपी गयी है। हरेंद्र चौधरी को पार्टी के अनुमंडल अध्यक्ष बनाए जाने पर झामुमो के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ उनके पंचायत के लोगों ने बधाई दिया है। बधाई देने वालों में मुबारक अंसारी, अनिल चौधरी, रंजीत कुमार चौबे, द्वारिका चौधरी, राजेंद्र चौधरी, कोमल चौधरी, प्रणय चौबे, गुलबास अंसारी, कमल किशोर चौबे, रमेश चंद्रवंशी, शिवदत्त चौधरी, मानिकचंद चौधरी, संजय विश्वकर्मा, गुपू चौधरी, मुकेश कुमार ठाकुर, अर्जुन रजक, लालमनी साव, कौशर अंसारी, मानदेव बैठा, उषा कुमारी, डोली देवी, तेतरी देवी इत्यादि का नाम शामिल है। इधर हरेंद्र चौधरी ने कहा कि पार्टी के द्वारा हम जैसे छोटे कार्यकर्ता पर विश्वास करते हुए बड़ी जिम्मेवारी सौंपी गई है। उस पर खरा उतरते हुए निष्ठा के साथ पार्टी संगठन को मजबूत करने का काम करूंगा। साथ ही सभी तबके के लोगों को पार्टी में जोड़ा जाएगा। उन्होंने मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर, जिला अध्यक्ष तनवीर आलम खान, सचिव मनोज ठाकुर, बीस सूत्री उपाध्यक्ष नितेश सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया है।

मंत्री पहुंचे जनता के द्वार, गांव गांव पहुंचकर सुनी जन समस्या

क्षेत्र में कोई भी कार्य नहीं रहेगा अधूरा : मंत्री मिथिलेश

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर जनता के द्वार पर पहुंचे। मंत्री ने शनिवार को मेराल प्रखंड के चेचरिया पंचायत के विभिन्न गांवों में पहुंचकर ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। साथ ही जन समस्याओं का ऑन द स्पॉट निष्पादन भी कराया। ग्रामीणों ने राजस्व कर्मचारी रमेश पांडेय के विरुद्ध जमकर शिकायत की। मंत्री ने अविलंब कर्मचारी को हटाने का निर्देश दिया।

मंत्री श्री ठाकुर मेराल प्रखंड के अंतर्गत चेचरिया पंचायत के प्राथमिक विद्यालय बाजूडीह, ग्राम बोकेया में लगन ठाकुर के घर के समीप, उमवि खोलरा, शिव मंदिर परिसर, अटौला, पंचायत भवन चेचरिया तथा ग्राम छपरवार खुर्द में दुर्गा मंडप के समीप कार्यक्रम आयोजित कर जनता से रूबरू हुए। मंत्री ने जनसमस्याओं को सुना एवं ऑन द स्पॉट निष्पादन भी कराया। इस दौरान लोगों ने सड़क, पेयजल की समस्या सुनाई। मंत्री श्री ठाकुर ने तत्काल खराब पड़े चापाकल व जल मीनार दुरुस्त कराते हुए चार दिनों के अंदर जलापूर्ति प्रारंभ कराने का निर्देश दिया। इस दौरान ग्रामीणों ने कई स्थानों पर छठ घाट, चबूतरा, नाली, अनाथ पेंशन, प्रजापति टोला पर मिट्टी-मोरम पथ निर्माण, राप्रावि बाजुडीह में शौचालय, मंदिर के समीप नाली निर्माण, प्रावि बोकेया में पेयजल की समस्या आदि से ग्रामीणों ने मंत्री को रु-ब-रू कराया। चेचरिया में अर्चना देवी ने अपने पति के हत्यारों के खिलाफ ढाई साल बीत जाने के बाद भी कार्रवाई नहीं होने की शिकायत की। मंत्री श्री ठाकुर ने सभी समस्याओं को सूचीबद्ध कराते हुए संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को तत्काल इन सभी समस्याओं के निदान का निर्देश दिया।

मौके पर मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि अब क्षेत्र में कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहेगा। मैंने जो वादा किया था उसे एक-एक कर पूरा कर रहा हूं। क्षेत्र में बड़ी से लेकर छोटी सभी विकास कार्यों को किया जा रहा है। कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति राशन, पेंशन से वंचित नहीं रहेगा। मंत्री ने कहा कि हर घर में नल के माध्यम से स्वच्छ पेयजल पहुंचाने की योजना पर तेजी से कार्य हो रहा है। बहुत जल्द सभी घरों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा। फिलहाल पेयजल की जो समस्या है उसे अविलंब दूर किया जाएगा। मंत्री ने कहा कि यदि दृढ़ संकल्प और मजबूत इच्छाशक्ति हो तो कोई भी समस्या बड़ी नहीं है। सभी गांव की हर समस्या का निदान होगा। आज तक गढ़वा के लोग अपनी मूलभूत समस्याओं के निदान के लिए तरस रहे थे। मैंने गढ़वा की एक-एक समस्या को करीब से देखा है। मैं जनता के घर तक जाकर उनकी समस्याओं का निदान कर रहा हूं। आने वाले समय में किसी भी गांव में कोई समस्या न रहे, इसके लिए वे पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि अब तक पूर्व के जनप्रतिनिधियों ने जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर उन्हें उछलने का काम किया है। परंतु अब जनप्रतिनिधि एवं विकास कार्य का मीनिंग बदल चुका है। हर कार्य सही मायने में शत प्रतिशत धरातल पर उतारा जा रहा है। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि वे जन भावनाओं के साथ खेलने का नहीं बल्कि जन समस्याओं को दूर करने का कार्य करते हैं। मौके पर मुख्य रूप से पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता प्रदीप सिंह, जेई सिकंदर कुमार, बीडीओ रामप्रवेश साव, सीओ निकिता बाला, झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता धीरज दुबे, जिला अध्यक्ष तनवीर आलम, सचिव मनोज ठाकुर, हरीलाल चौधरी, संतोष चौधरी, शंभू चौधरी, रविंद्र चौधरी, देव कलिया देवी, मंजू देवी, प्रभा देवी, गीता देवी, मीना देवी, गंगा राम, राजेश्वर चौधरी, अमित कुमार ठाकुर, मुनेश्वर ठाकुर, अशोक विश्वकर्मा, धर्मेंद्र पाल, ऋषि पाल, अयोध्या पाल धनवंत पाल, सत्यदेव सिंह, लाल बिहारी प्रजापति, अशोक प्रजापति, मोहन राम, मंगर राम, दिलीप सिंह, गुना प्रजापति सहित काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

संक्षिप्त

भालू ने वृद्ध को किया घायल

भंडरिया (गढ़वा)। भंडरिया थाना क्षेत्र के हेसातु गांव में शनिवार को लगभग 11 बजे दिन में एक जंगली भालू ने हेसातु गांव के ही चमरु कोरवा पिता स्व. लहरु कोरवा उम्र 59वर्ष को हमला कर गंभीर रुप से घायल कर दिया। घायल चमरु कोरवा को तत्काल उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भंडरिया लाया गया। जहां चिकित्सा कर्मियों के द्वारा प्राथमिक उपचार के घायल की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गढ़वा रेफर कर दिया गया है। घायल चमरु कोरवा के सिर का पिछले हिस्से का आधा भाग को भालू ने नोच कर जख्मी कर दिया है। जिससे घायल की स्थिति गंभीर बनी हुई है। केतार पैक्स अध्यक्ष चुनाव में दो प्रत्याशियों ने नाम वापस केतार (गढ़वा)। श्री बंशीधर नगर प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी सह केतार निर्वाचन पदाधिकारी मनोज कुमार गुप्ता के शनिवार को बताया कि केतार पैक्स प्रबन्धन समिति गठन हेतु अध्यक्ष पद के लिए दो उम्मीदवार मिथलेश कुमार गुप्ता और रवि कुमार रवि चुनाव मैदान में रह गए है। जबकि अमर नाथ जयसवाल और नीतीश कुमार ने अपना नामांकन वापस ले लिया है। केतार पैक्स के अध्यक्ष पद के लिए दोनों उम्मीदवार का चुनाव चिन्ह आवंटन कर दिया गया है। जिसमे मिथलेश कुमार गुप्ता को छतरी छाप तथा रवि कुमार रवि को उगता हुआ सूर्य छाप मिला है। चुनाव चिन्ह मिलते ही दोनों उम्मीदवार चुनाव प्रचार में लग गए है। आगामी चार जुलाई को केतार पैक्स चुनाव का मतदान कराया जाएगा और उसी दिन मतगणना कर प्रत्याशी की घोषणा की जाएगी। केतार पैक्स अध्यक्ष के चुनाव चिन्ह मिलते ही चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है।

गाली गलौज, धमकी व जाति सूचक शब्द का लगाया आरोप

चिनिया (गढ़वा)। थाना क्षेत्र के सिगसिगा कला गांव निवासी रामकीसुन कोरवा ने चिनीयां थाने में आवेदन देकर गांव के बाल देव यादव वगैरह पर आरोप लगाया है कि हमे धमकी जाति सूचक शब्द तथा गाली गलौज किया गया है। बताते चलें कि शुक्रवार को गांव के कुछ लोगों द्वारा बालू लदा ट्रैक्टर पकड़ कर चिनिया पुलिस को सूचित किया था। जिसे चिनिया पुलिस द्वारा ट्रैक्टर को जब्त कर चिनिया थाना लाया गया। जिला खनन पदाधिकारी गढ़वा के द्वारा ट्रैक्टर मालिक अजय प्रसाद यादव एवं चालक पर प्राथमिकी दर्ज कि गयी। वहीं इसी मामले में दूसरे पक्ष के रामकिशुन कोरवा द्वारा चिनीयां थाने में आवेदन देकर कहा गया है कि पीएम आवास बनाने के बाद बचे हुए बालु को ट्रैक्टर से सरना स्थल पर लेकर जा रहा था। जिसे रास्ते में बलदेव यादव वगैरह रोककर गाली गलौज एवं धमकी दिया तथा जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया गया। इस संबंध में पूछे जाने पर चिनिया थाना प्रभारी राजबल्लभ कुमार ने बताया कि आवेदन के आलोक में मामले की प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। दोनों मामले प्रकाश में आया है। प्राथमिकी दर्ज की गई है। तथा विधि संगत कार्रवाई की जा रही है।

बकरीद और घूरती रथ को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

नवीन मेल संवाददाता। कैरो त्योहार ईद उल अजहा व घूरती रथ को लेकर शनिवार को थाना परिसर में अंचलधिकारी कमलेश उरांव,बी डी ओ पवन कुमार महतो,थाना प्रभारी संखनाद उरांव के संयुक्त अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक हुई। मौके पर आपस में मिल जुल कर शांति पूर्वक ढंग से त्योहार मनाने का निर्णय लिया गया। मौके पर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी पवन कुमार महतो ने कहा कि पर्व त्योहार से आपसी प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा मिलता है। थाना प्रभारी संखनाथ उरांव ने कहा कि किसी प्रकार के अफवाह पर ध्यान देने की जरूरत नही है। अफवाह फैलाने वाले को बख्शा नही जाएगा। उनपर नियम संगत करवाई की जाएगी। उप प्रमुख मधुलिका रानी ने कहा बकरीद व घूरती रथ को देखते हुए क्षेत्र शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस प्रसाशन लगातार गस्ती करे,किसी प्रकार का कोई अनहोनी होने पर प्रसाशन को खबर करे कानून को कभी भी अपने हाथ मे न लें। मौके पर प्रखण्ड बिस सूत्री उपाध्यक्ष बुधवा उराँव,नाजिर आलम खान,विशेश्वर प्रसाद दीन, सुरजमोहन साहू,बजरंग उराँव,अनिल पांडेय,महताब आलम,जमील समीरुदीन अंसारी, आदि उपस्थित थे।

बीडीओ ने योजनाओं को पूरा करने का दिया निर्देश

बीडीओ ने की हर घर नल योजना पर बैठक

सेन्हा-लोहरदगा। प्रखंड कार्यालय स्थित सभागार में पंचायत सचिव और रोजगार सेवकों के साथ बीडीओ की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित हुआ। आयोजित समीक्षा बैठक में प्रखंड क्षेत्र में संचालित विकास योजनाओं का समीक्षा किया गया। वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा द्वारा मनरेगा, दीदीबाड़ी, प्रधानमंत्री आवास सहित अन्य योजना का समीक्षा करते हुए अपूर्ण योजनाओं को 15 दिन के अन्दर पूरा करने निर्देश दिया। साथ ही बिरसा हरित ग्राम योजना के अन्तर्गत आमबगवानी का लक्ष्य पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। मौके पर बीपीओ निलेन्द्र कुमार,जेई संजीत कुमार, तनु कुमारी, पंचायत सचिव महिपाल उरां व,आनन्द सिंह,भैया भगत,रोजगार सेवक, सहित अन्य उपस्थित थे।

नवीन मेल संवाददाता। सेन्हा-लोहरदगा

सेन्हा एवं तोड़ार पंचायत में मुख्यमंत्री जल नल योजना का विस्तार को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक सम्पन्न बीडीओ ने प्रत्येक पंचायत में शुद्ध पेयजल की होगी व्यवस्था पर डाला प्रकाश। सेन्हा प्रखंड के पंचायत सेन्हा एवं तोड़ार पंचायत के मुखिया जल सहिया के साथ प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा घर घर जल नल योजना का विस्तार करने को लेकर बैठक शनिवार को सम्पन्न हुआ। बैठक में बीडीओ अशोक कुमार चोपड़ा ने कहा की सेन्हा एवं बरही में पुर्व से पेयजल आपूर्ति हो रहा था लेकिन अब बंद है इस गांवो में भी घर घर जल नल योजना की व्यवस्था किया जायगा इसके लिए नया जलमीनार बनाने पाइप लाइन लगाने को लेकर चर्चा हुआ। साथ ही बीडीओ अशोक कुमार चोपड़ा ने जल सहिया एवं मुखियाओं को पुर्व में संचालित पेयजल का कनेक्शन लेने वाले की सूची बैंक खाता और रोकड़ पंजी को दिखाने को कहा गया। साथ ही मुखिया तथा जल सहिया से जायजा लेते हुए कहा की जलमीनार कहाँ कहाँ आवश्यकता है उस स्थल का पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कनीय अभियंता से मिलकर स्थल चयन कर प्रखंड कार्यलय को अवगत कराए। उन्होंने कं प्रत्येक पंचायत में घर घर नल लगाने का सर्वे करने का निर्देश दिया।

ट्रांसफार्मर 6 महीने से खराब उपभोक्ताओं में आक्रोश

डंडई (गढ़वा)। प्रखंड क्षेत्र स्थित तसरार गांव के भौराह टोला पर लगा ट्रांसफार्मर पिछले 6 माह से खराब होकर पड़ा है। वहां के ग्रामीणों को बिजली नहीं मिल पा रहा है। उमस भरी गर्मी में वे सभी रात गुजारने को विवश हैं। मामले को लेकर खासकर बिजली उपभोक्ताओं में आक्रोश व्याप्त है। बिजली उपभोक्ता रामचंद्र राम, गौतम कुमार, जुनैद अंसारी, राजेश तिवारी, संतोष विश्वकर्मा, जमीर उद्दीन अंसारी इत्यादि लोगों ने बताया कि हम लोगों के टोले पर लगा ट्रांसफार्मर सिर्फ शोभा बनकर रह गया है। उक्त ट्रांसफार्मर को खराब हुए 6 महीनों से भी अधिक दिन का समय बीत गया लेकिन अभी तक उसकी मरम्मती नहीं हो पाई है। उपभोक्ताओं ने बिजली कर्मियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि प्रखंड के पावर हाउस में जितने भी लाइनमैन हैं उनके द्वारा जानबूझकर हम लोगों के टोले का ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मामले को लेकर हम सभी कई बार विभाग के सहायक अभियंता के पास लिखित शिकायत कर मामले की जानकारी दिये। लेकिन आज तक उनके द्वारा भी कोई पहल नहीं किया गया। यहां तक की खराब पड़े ट्रांसफार्मर की मरम्मत कराने की बात तो दूर उनके द्वारा उल्टे में हम लोगों के ऊपर केस दर्ज कराने की धमकी भी दी जाती है। उपभोक्ताओं ने जानकारी देते हुए बताया कि हम लोगों के घर में कई तरह के तकनीक उपकरण पड़े हैं लेकिन बिजली के अभाव में उसका उपयोग हम सभी नहीं कर पा रहे हैं। पूरा गर्मी के मौसम में हम सभी अपने-अपने घर के बाहर चारपाई निकालकर रात गुजारने का काम किये। मोबाइल को चार्ज कराने में भी हम लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी इस घर तो कभी उस घर में हम सभी 6 महीने से अपना-अपना मोबाइल चार्ज कराने का काम कर रहे हैं। इस बीच हम सभी में कई लोगों की मोबाइल भी चोरी हो गई है। उपभोक्ताओं ने कहा कि सप्ताह दिन के अंदर अगर विभाग की ओर से ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं कराया जाता है तो बेहतर होता कि उक्त ट्रांसफार्मर को विभाग अपने पास ले जाता। इस दौरान विभागीय पदाधिकारी व कर्मियों पर संदेह जताते हुए उपभोक्ताओं ने कहा कि प्रखंड के सुदूरवर्ती पंचायत का टोला होने के कारण काश उक्त लोगों के द्वारा हम लोगों के ट्रांसफार्मर को ठीक नहीं किया जा रहा है।

आस्था

चिंता से विनाश होता है, जबकि चिंतन से विकास होता है

मानव को तीनों ऋण से मुक्त होना चाहिए : जीयर स्वामी

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। मनुष्य को चिंता नहीं चिंतन करनी चाहिए। चिंता से विनाश होता है, जबकि चिंतन से विकास होता है। चिंता ह्रास का कारण बनता है और कोई परिणाम नहीं दे पाता है। जीयर स्वामी ने सुखदेव जी की जन्मोपरांत तप के लिए वन गमन प्रसंग की चर्चा करते हुए कहा कि संन्यासी चार प्रकार के होते हैं, कुटीचक, बहुदक, हंस और परमहंस । कुटीचक संयासी गृहस्थ जीवन के अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन के बाद घर में रहते हुए निर्लिप्त रहते हैं। बहुदक भी कुटीचक के समान होते हैं। हंस संन्यासी दुनिया को नश्वर मान दुनिया में रहते हैं। जैसे-कमल, पानी में रहते हुए भी जल के प्रभाव से मुक्त रहता है। परमहंस सन्यासी दुनिया के किसी विषय वस्तु से सरोकार नहीं रखता। बल्कि स्थित प्रज्ञ की स्थिति में रहता है।

उन्होंने कहा कि हर काल में समाज संचालन के नियम-कायदे विभिन्न ऋषियों एवं शासकों द्वारा निर्धारित किए जाते रहे हैं। जैसे मुगलकाल, अंग्रेजी शासन और स्वतंत्रोत्तर भारत के कानून आदि। इसी तरह ऋषियों द्वारा भी त्रेता, सत्युग, द्वापर और कलयुग में नीति निर्धारण किये गये हैं

जिन्हें स्मृति कहते हैं।

कलियुग में पराशर स्मृति मान्य है।

पराशर स्मृति के अनुसार सभी वर्ण के लोग अपने अनुकूलता के अनुसार जीविकोपार्जन करने के लिए स्वतंत्र हैं। स्वामीजी ने कहा कि मनुष्य जन्म के साथ ही तीन ऋणों मातृ-पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण से युक्त होता है। मातृ-पितृ ऋण से उऋण (ऋणमुक्त) होने के लिए माता-पिता की जीवनपर्यन्त सम्यक प्रकार से सेवा और मृत्योपरांत श्राद्ध एवं पिंडदान से मुक्ति मिलती है। यज्ञ, पूजा एवं भंडारा से देव ऋण से मुक्ति मिलती है। जबकि सद्ग्रंथों के नियमित अध्ययन से ऋषि ऋण से व्यक्ति उऋण होता है। तीनों ऋणों से उऋण होनेवाला ही पुत्र कहलाने का हकदार है। उन्होंने कहा कि तीनों ऋण से मुक्ति पाने वाला परम धाम को सहज ही प्राप्त कर लेता है। स्वामी जी ने कहा कि कलियुग की आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष, द्वापर की आयु 8 लाख 64 हजार, त्रेता की 12 लाख 96 हजार और सतयुग की आयु 17 लाख 28 हजार वर्ष है। कलियुग में अभी 6 हजार वर्ष ही बीता है। उन्होंने कहा कि संत और ईश्वर से कुछ भी छुपाना नहीं चाहिए बल्कि आर्तभाव से स्पष्ट करनी चाहिए। विभीषण ने अपने को राक्षस कुल में जन्मा दशानन का भाई बताया और प्रभु ने उन्हें सहर्ष स्वीकार किया।

एक नजर इधर भी

भारत के समृद्धशालियों व प्रतिभाओं का पलायन क्यों?

धनाढ्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। ऐसे क्या कारण है कि लोगों को देश की बजाय विदेश की धरती रहने, जीने, व्यापार करने, शिक्षा एवं रोजगार के लिये अधिक सुविधाजनक लगती है, नये बनते भारत के लिये यह चिन्तन-मंथन का कारण बनना चाहिए। हेनले प्राइवेट वेल्थ माइग्रेशन रिपोर्ट 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 6,500 हाई- नेट-वर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनआई) के 2023 में भारत से बाहर जाने की संभावना है, पिछले वर्ष की तुलना में यह करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे। रिपोर्ट के अनुसार, उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है, और जैसे-जैसे जीवन स्तर में सुधार जारी है, यह अधिक संख्या में धनवान व्यक्तियों के भारत वापस आने का अनुमान लगाता है। लेकिन प्रश्न है कि भारत के करोड़पति आखिर नये बनते भारत एवं उसकी चिकित्सा, शिक्षा, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक उज्ज्वलता के बावजूद क्यों विदेश जा रहे हैं? वैसे तो यह हर किसी का व्यक्तिगत अधिकार और चाहत हो सकती है कि वह कहां बसना और कैसी जीवनशैली चाहता है? लेकिन हाई नेटवर्थ वाले (अति समृद्ध) हमारे देशवासियों के देश छोड़ कर कहीं और बसने की तैयारी की ताजा रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है। दुनियाभर में धन और निवेश प्रवासन के रुझान को ट्रैक करने वाली कंपनी की सालाना रिपोर्ट में अति समृद्ध भारतीयों का अपना सब-कुछ समेट कर हमेशा के लिए भारत से जुदा हो जाने का अनुमान अनेक प्रश्न खड़े करता है, सरकार को इन प्रश्नों पर गौर करने की जरूरत है। संतोष इस बात पर किया जा सकता है कि ऐसा कदम उठाने वाले इन अति समृद्धशालियों की संख्या पिछले साल की तुलना में लगभग एक हजार कम है। लेकिन यह संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। भारत के दृष्टिकोण से इस तथ्य का विश्लेषण ज्यादा जरूरी हो जाता है। जानना यह भी जरूरी है कि बचपन से जवानी तक का एक-एक पल देश में गुजारने और यहीं अमीर बनने का सफर तय करने के बाद देश से मोह भंग होने के कारण आखिर क्या हो सकते हैं? उम्मीद यह की जाती है कि देश में रहकर समृद्धि हासिल करने वाले समय आने पर देश को लौटाएंगे भी। सवाल यही है कि देश को लौटाने और फायदा देने का वक्त आता है तब एकाएक विदेश में जाकर बसने की ललक कैसे और क्यों पैदा हो रही है? अपने देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने के समय इस तरह की पलायनवादी सोच का उभरना व्यक्तिगत स्वार्थ, सुविधा एवं संकीर्णता को दर्शाता है। बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई, दिल्ली, बेंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं। फिर भी अगर ये भारतीय विदेशी महानगरों को ही चुन रहे हैं, तो तमाम पहलुओं पर विचार भी करना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि यह दौड़ भारतीय महानगरों से विदेशी महानगरों की तरफ ही है।

■ **ललित गर्ग**

आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह त्रासदी

भारत में संविधान का शासन है। संविधान निर्माताओं ने न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका में खूबसूरत अधिकार विभाजन किये हैं। लेकिन आपातकाल आधुनिक इतिहास में संविधान को तहस-नहस करने की भयावह त्रासदी है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आज से 48 वर्ष पूर्व (25 जून 1975) पूरे देश को कैदखाना बना दिया था। संविधान (अनुच्छेद 352) में वाह्य आक्रमणों और देश के भीतर गंभीर आतंरिक अशांति के आधार पर आपातकाल घोषित करने की व्यवस्था थी। लेकिन तब देश में कोई आतंरिक अशांति नहीं थी। प्रधानमंत्री स्वयं आतंरिक अशांति से पीड़ित थीं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून 1975 को उनका संसदीय चुनाव अवैध घोषित कर दिया था। न्यायालय के अनुसार वे अनुचित साधनों द्वारा चुनाव जीती थीं। रायबरेली (उत्तर प्रदेश) की उनकी संसदीय सीट रिक्त घोषित कर दी गई थी। सत्ता पक्ष का एक धड़ा और संपूर्ण विपक्ष त्यागपत्र मांग रहा था। उन्होंने पद से न हटने का निश्चय किया। आपातकालीन प्राविधान का दुरुपयोग किया और आपातकाल थोप दिया। संविधान के रास्ते तानाशाही थोपने का ऐसा ही कृत्य एडोल्फ हिटलर ने 28 फरवरी 1933 को जर्मनी में किया था। हिटलर जर्मनी के चांसलर (सत्ता प्रमुख) थे। आपातकाल पर जर्मनी की संसद में मतदान हुआ। संसद का बहुमत हिटलर के पक्ष में था। 444 मत आपातकाल के पक्ष में पड़े। विपक्ष में 94 वोट पड़े। 109 लोगों ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। इसी तरह भारत में भी सत्ता पक्ष प्रधानमंत्री के पक्ष में था। जान पड़ता है कि श्रीमती गांधी हिटलर से प्रेरित थीं। यहां पूरा विपक्ष जेल में डाल दिया गया था। जर्मनी की तर्ज पर यहां कांग्रेस संसदीय दल और पार्टी ने इस तानाशाही का समर्थन किया। कांग्रेस अध्यक्ष ने इंदिरा को इंडिया बताया और इंडिया को इंदिरा। स्वाधीनता आंदोलन के महान नेता जयप्रकाश नारायण को भी गिरफ्तार किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी सहित सभी राष्ट्रवादी नेता भी जेल में थे। मानवता कुचली गई। पुलिस अंग्रेजी शासन की पुलिस की भूमिका में थी। विचार अभिव्यक्ति का गला घोट दिया गया। प्रतिष्ठित पत्रकार पीड़ित किये गये। प्रधानमंत्री न्यायालयों की शक्ति पर आक्रामक थीं। श्रीमती गांधी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। लेकिन उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की प्रतीक्षा नहीं की। संविधान में हास्यास्पद संशोधन हुआ। प्रधानमंत्री के संसदीय चुनाव को न्यायायिक निर्वचन से मुक्त कराने का संशोधन कराया गया और इस संविधान संशोधन को पिछली तारीखों से लागू कराया गया। आपातकाल का बयालिसवां संशोधन ध्यान देने योग्य है। संविधान में संसदीय अधिनियम पर भी न्यायायिक पुनर्विलोकन की व्यवस्था है। लेकिन आपातकाल में संविधान के उल्लंघन के आधार पर चुनौती देने के लिए संघ और राज्यों के कानूनों में भेद किया गया। यह व्यवस्था की गई कि सर्वोच्च न्यायपीठ अनुच्छेद 32 के अधीन अपनी अधिकारिता में किसी राज्य के कानून को तब तक असंवैधानिक घोषित नहीं कर सकता जब तक ऐसी कार्यवाहियों में केन्द्रीय विधि भी प्रश्नवाचक न हो। व्यवस्था की गई कि नीति निदेशक तत्वों को लागू करने के लिए अधिनियमित कानूनों को मौलिक अधिकारों के आधार पर चुनौती नहीं दी जायेगी। इसी तरह उच्च न्यायालयों को केन्द्रीय विधि की असंवैधानिकता के विरुद्ध सुनवाई से रोक दिया गया। किसी कानून को असंवैधानिक घोषित करने के लिए न्यायमूर्तियों के विशेष बहुमत की अपेक्षा के प्राविधान किये गये। ऐसे सारे संशोधन न्यायपालिका का गला घोंटने वाले थे। न्यायालय के पास संविधान संशोधनों को भी संविधान की मूल भावना के विपरीत होने अथवा अन्य कारणों से असंवैधानिक घोषित करने की शक्ति है। आपातकाल में संविधान संशोधन के अनुच्छेद 368 का भी संशोधन किया गया। व्यवस्था की गई कि संविधान संशोधन विधि के नाम से घोषित विधि को किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अकारण जेल भेजा गया। लाखों कार्यकर्ता जेल में थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विशेष निशाने पर था। न्याय का नैसर्गिक सिद्धांत कुचला गया। किसी भी व्यक्ति को किसी भी आरोप में जेल भेजने के बाद अदालत उसका पक्ष सुनती है। लेकिन आपातकाल में कुख्यात मेंटेनेंस ऑफ इंटर्नल सिक्योरिटी एक्ट (मीसा) में नैसर्गिक कानून का यह सूत्र नहीं था। मीसा में जिला प्रशासन द्वारा व्यक्ति को उठाकर जेल भेज दिया जाता था। न्यायालय में उसका मुकदमा नहीं चलता था। ऐसा कानून दुनिया के किसी भी सभ्य देश में नहीं है। लेकिन भारत में पुलिस राज था। पुलिस अनावश्यक रूप से पीटती थी। हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं के अंग भंग किये गये। संविधान संशोधनों की झड़ी लग गई। 53 अनुच्छेद एक साथ बदले गये। सातवीं अनुसूची बदली गई। प्रेस का मुंह कुचल दिया गया था। सब तरफ उत्पीड़न व सरकार प्रायोजित हिंसा का चीत्कार था। मौलिक अधिकार भारत की संवैधानिक व्यवस्था के प्राण हैं। वे स्थापित सरकार के अत्याचारों से रक्षा करने के उपकरण हैं। राज व्यवस्था की निरंकुशता से संरक्षण देने के लिए मौलिक अधिकार अधिनियमित किये गये थे। श्रीमती इंदिरा गांधी मौलिक अधिकारों में भी काट छांट कर रहीं थीं। संविधान (भाग 4) में उल्लिखित राज्य के नीति निदेशक तत्वों को क्रियान्वित करने के बहाने बनाई गई विधियों को न्यायायिक निर्वचन से अलग रख दिया गया था। सरकारी अत्याचारों से देश उबल रहा था। मुझे मीसा बंदी के रूप में उत्पीड़न का अनुभव है। उस समय लागू डिफेन्स ऑफ इंडिया रूल (डीआईआर) का भी अनुभव है।

रायबरेली की उनकी संसदीय सीट रिक्त घोषित कर दी गई थी। सत्ता पक्ष का एक धड़ा और संपूर्ण विपक्ष त्यागपत्र मांग रहा था। उन्होंने पद से न हटने का निश्चय किया। आपातकालीन प्राविधान का दुरुपयोग किया और आपातकाल थोप दिया। संविधान के रास्ते तानाशाही थोपने का ऐसा ही कृत्य एडोल्फ हिटलर ने 28 फरवरी 1933 को जर्मनी में किया था।

इन दिनों

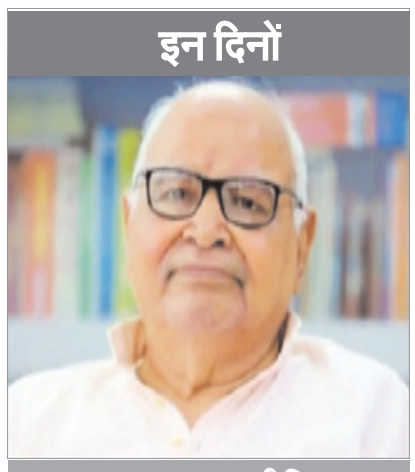

हृदयनारायण दीक्षित

लोकतंत्र पर जबरदस्त आघात

सत्ता की ताकत का दुरुपयोग कैसे किया जाता है, इसका उदाहरण कांग्रेस सरकार द्वारा 1975 में देश पर तानाशाही पूर्वक लगाया गया आपातकाल है। जिसमें अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही समाप्त कर दिया था। इसे एक प्रकार से देश की आजादी को छीनने का दुस्साहसिक प्रयास भी माना जा सकता है। क्योंकि इंदिरा शासन द्वारा देश पर थोपे गए आपातकाल में सरकार के विरोध में आवाज उठाने को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया था। यहां तक कि सरकार ने विपक्ष की राजनीति करने वालों के साथ ही उन समाजसेवियों और राष्ट्रीय विचार के प्रति समर्पित उन संस्थाओं के व्यक्तियों को जेल में ठूंस दिया था, जो सरकार की कमियों के विरोध में लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठा रहे थे। सरकार के इस कदम को पूरी तरह से अलोकतांत्रिक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपनी सरकार के खिलाफ उठने वाली हर उस आवाज को दबाने का प्रयास किया, जो लोकतांत्रिक रूप से भी सही थी। वैसे देखा जाए तो कांग्रेस शासन का यही चरित्र रहा है कि उनके खिलाफ उठने वाली आवाज को किसी भी प्रकार से शांत किया जाय। आज भी कांग्रेस ठीक इसी पद्धति से काम करती हुई दिखाई दे रही है। कांग्रेस में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की बलि दी जाती रही है। इसे कांग्रेस का स्वभाव ही माना जा सकता है कि उसने देश को मजबूत करने वाली आवाज को मुखर नहीं होने दिया। इसके विपरीत देश के विरोध में उठने वाली आवाज को बिना सोचे समझे अभिव्यक्ति की आजादी कहकर समर्थन किया। सीधे शब्दों में निरूपित किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस को अपने विरोध में कही गई कोई बात जरा भी पसंद नहीं है। इसी कारण नेशनल हेराल्ड में जब जांच की बात आती है तो कांग्रेस के नेता एकजुट होकर ऐसा प्रदर्शन करते हैं, जैसे वही सही हैं और बाकी सभी गलत। कांग्रेस पार्टी ने एक नहीं कई बार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्र विरोधी ताकतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने काम किया है, लेकिन जो कांग्रेस गाहे बगाहे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करती रही है, उसने ही 25 और 26 जून 1975 की रात को आपातकाल लगाने के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पूरी तरह गला घोंट दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किस प्रकार कुठाराघात किया जाता है, इस तथ्य को जानने के लिए कांग्रेस के नेताओं को आपातकाल के काले अध्याय का अध्ययन करना चाहिए। आपातकाल के नाम पर कांग्रेस ने अंग्रेजों से भी भयंकर यातनाएं देते हुए देश भक्तों पर कहर बरपाया। जिसके स्मरण मात्र से दिल में सिरहन दौड़ जाती है। जिन लोगों ने इस काली रात का साक्षात्कार किया, उनके अनुभव सुनने मात्र से ही लगता है कि इन्होंने आपातकाल को किस कदर भोगा होगा। आपातकाल लगाने के पीछे के कारणों पर दृष्टिपात किया जाए तो यही तथ्य सामने आते हैं कि उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पूरी तरह से तानाशाह शासक की भूमिका में दिखाई दीं। उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को ठेंगा बताते हुए अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया, यह प्रकार से सत्ता का दुरुपयोग ही था। वह निर्णय क्या था? इसकी जड़ में 1971 में हुए लोकसभा चुनाव था, जिसमें उन्होंने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राजनारायण को पराजित किया था, लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त कर उन पर छह साल तक चुनाव न लड़ने का प्रतिबंध लगा दिया और उनके मुकाबले हारे और श्रीमती गांधी के चिर प्रतिद्वंद्वी राजनारायण सिंह को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। राजनारायण सिंह की दलील थी कि इंदिरा गांधी ने चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, तय सीमा से अधिक पैसा खर्च किया और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया। न्यायालय ने इन आरोपों को सही ठहराया था। इसके बावजूद श्रीमती गांधी ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया और देश में आपातकाल घोषित कर दिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के साथ ही गुजरात में चिमनभाई पटेल के विरुद्ध विपक्षी जनता मोर्चे को भारी विजय मिली। इस दोहरी चोट से इंदिरा गांधी बौखला गईं। इन्दिरा गांधी ने न्यायालय के इस निर्णय को मानने से इनकार करते हुए सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की घोषणा की और 26 जून को आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी गई। इंदिरा गांधी का यह कदम न्यायालय के आदेश का अपमान करने वाला ही था। आपातकाल के नाम पर केवल उन्हीं लोगों को जेल में जबरदस्ती बंद किया था, जो सरकार के विरोधी थे। देश भर में इंदिरा शासन के विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन खड़ा किया। आपातकाल में शासन, प्रशासन ने लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन में हिस्सा लेने वाले हर उस व्यक्ति को प्रताड़ना दी, जो लोकतांत्रिक तरीके सरकार के विरोध में आवाज उठा रहे थे। विपक्षी राजनेताओं ने देश में केन्द्र सरकार के विरोध में ऐसा वातावरण बनाया कि इंदिरा गांधी को अपना सिंहासन हिलता हुआ दिखाई दिया। जॉर्ज फर्नांडीज को लोहे की जंजीरों से बांधकर यातनाएं दी गईं। देश के जितने भी बड़े नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए। एक तरह से जेलें राजनीतिक पाठशाला बन गईं। जिन लोगों ने यह दृश्य देखा, उनका यही कहना था कि ऐसा दृश्य तो अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं दिखा।

■ **सुरेश हिंदुस्थानी**

है न विचित्र बात !

प्राण का तकिया कलाम व गेटअप

अपने किरदारों को यादगार तथा फिल्म इंडस्ट्री में लंबे समय तक अपनी मांग और लोकप्रियता बनाए रखने के लिए प्राण ने अपने मेकअप (रूप सज्जा), गेटअप (वस्त्र सज्जा) और बोलने के ढंग (लहजे) पर विशेष मेहनत तो की ही, यह भी ध्यान रखा कि इनमें दोहराव न हो। इन सब की प्रेरणा वे अपने आसपास के लोगों से लेते या पत्र-पत्रिकाओं में छपी तस्वीरों और उसके विवरण से। बोलने के खास लहजे या 'तकिया कलाम' की बात करें तो फिल्म 'पत्थर के सनम (1960) में उनके द्वारा इस्तेमाल किया गया तकिया कलाम था- क्यों? ठीक है ना ठीक ?' यह तकिया कलाम उन्होंने लाहौर में फिल्में करते समय रूप के शौरी के मामाजी से लिया था जो उनके स्टूडियो की देखभाल किया करते थे। फिल्म दस लाख (1966) में उन्होंने अपनी हर बात को दुबारा गलत अंग्रेजी में बोलकर हास्य का पुट भरा तो फिल्म 'कश्मीर की कली' (1964) में 'स' को श बोलकर -'शताले, शताले शम्पा कभी तो मेरा शमय भी आएगा' ने भी दर्शकों को खूब हंसाया। फिल्म कसौटी (1974) में की गई नेपाली गोरखे की भूमिका में नेपाली लहजे में बोला गया तकिया कलाम हम बोलेगा तो बोलेंगे कि बोलता है भी काफी लोकप्रिय हुआ था। अपनी खलनायकी को खूंखार और डरावना बनाने के लिए उन्होंने कई फिल्मों में सिगरेट या बीड़ी पीने तथा पान खाने के अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया। फिल्म मयादां (1971) में उन्होंने जलती हुई सिगरेट को जीभ द्वारा मुंह के अंदर ले जाकर जीभ या होठ जलाए बिना दोबारा उसी तरह होठों पर लाने का करिश्मा किया (आमिर बान ने इस तरीके की नकल फिल्म गुलाम में की)। फिल्म 'दिल तेरा दीवाना' (1962) फिल्म में वह अपने मुंह में दबाई बीड़ी को बोलते समय जीभ के निचले होठ से एक सिरे से दूसरे सिरे तक घुमाते रहते थे। अपनी बेटी के डांस टीचर जो कि विकलांग थे और खास तरीके से चलते थे की नकल उन्होंने 'हीर-रांझा' (1970) में लंगड़े की भूमिका करते हुए की। फिल्म 'चोर के घर चोर (1978) में एक पागल के किरदार के लिए उन्होंने उस पागल का गेटअप लिया जिसे वे बांद्रा में अक्सर देखा करते थे और जो मिलिट्री की पोशाक और उस पर मेडल लगाकर सीटी बजाता रहता था। उनके विग और गेटअप हमेशा कुछ अलग होते थे और दर्शकों को बेहद पसंद आते थे। विश्व प्रसिद्ध हस्तियों के प्रति विशेष आकर्षण के चलते उन्होंने खानदान (1966) फिल्म में हिटलर की तरह छोटी मूछें और बाल रखे। अमर अकबर एंथोनी में उनकी दाड़ी और कपड़े अब्राहम लिंकन जैसे थे। फिल्म जुगनू (1973) में प्रोफेसर की भूमिका के लिए उन्होंने शेख मुजीबुरहमान जैसा मेकअप और गेटअप किया था। यानी उन्हीं के जैसी कुर्ता, विग, मोटे फ्रेम का चश्मा और मूंछें। बाद की फिल्मों निगाहें (1989) में उन्होंने सैम पित्रोदा की तरह दाड़ी और फिल्म जोशीले (1973) में शशि कपूर के ससुर ज्योफ्री केंडल की तरह दाढ़ी रखी। वेशभूषा की सत्यता के लिए प्राण जिस धर्म का किरदार निभा रहे होते तो उसी समुदाय के किसी भी व्यक्ति से सहयोग लेने में नहीं हिचकते थे। फिल्म 'कसौटी' में उन्होंने एक नेपाली गोरखे की भूमिका के लिए अपने मित्र से गोरखाओं जैसे कपड़े तो मंगाए ही साथ ही उनके द्वारा साथ रखी जाने वाली खुखरी तक मंगाई और उसे शूटिंग में भी ले गए। फिल्म आंसू बन गये फूल (1969) में उन्होंने मोहल्ले के दादा का मराठी किरदार निभाया था। इसके लिए उन्होंने अपने मराठी इलेक्ट्रिशियन से कुछ चुने हुए मराठी शब्द याद कर अपने संवादों में शामिल किए। **चलते-चलते :** जिस देश में गंगा बहती है (1960) फिल्म में प्राण ने एक क्रूर डाकू 'राका' की उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

■ **अजय कुमार शर्मा**

बराक ओबामा भारत को सुरक्षा की सीख न दें

देखा जाये तो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के इस साक्षात्कार की टाइमिंग को लेकर तो सवाल उठे ही हैं साथ ही इसके जरिये वह टूलकिट भी सामने आ गयी है जिसके जरिये मोदी को अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे को लेकर निशाने पर लेने का प्रयास किया जाता है। अमेरिका के राजकीय दौरे पर गये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत में जब राष्ट्रपति जो बाइडन तथा उनका पूरा प्रशासन पलक पांवड़े बिछा रहा था उसी समय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सीएनएन को दिये एक साक्षात्कार के जरिये सनसनी फैला दी। इस साक्षात्कार में उन्होंने भारत के मुसलमानों की स्थिति पर चिंता जताई। साक्षात्कार में ओबामा ने कहा कि अगर मैं प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत करता तो मैं उनसे कहता कि अगर वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा नहीं करेंगे, तो भारत के टूटने की संभावना बनी रहेगी। ओबामा ने राष्ट्रपति जो बाइडन को भी सलाह दी कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के दौरान उनसे भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर बात करें। देखा जाये तो ओबामा के इस साक्षात्कार की टाइमिंग को लेकर तो सवाल उठे ही हैं साथ ही इसके जरिये वह टूलकिट भी सामने आ गयी है जिसके जरिये मोदी को अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे को लेकर निशाने पर लेने का प्रयास किया जाता है। विदेशी मीडिया का इस संबंध में खूब सहारा लिया जाता है। बीबीसी गुजरात दंगों के 20 साल बाद उस पर डॉक्यूमेंट्री बनाती है। अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट जनरल की पत्रकार सबरीना सिद्दीकी को भारत में हो रहे विकास या मजबूत होती भारतीय अर्थव्यवस्था के संबंध में प्रश्न पूछने की बजाय सिर्फ अल्पसंख्यकों की चिंता सताती है। आप जरा सभी घटनाओं को जोड़ कर देखेंगे तो आपको सारी कड़ियां जुड़ी हुई नजर आयेंगी। भारतीय प्रधानमंत्री की घेराबंदी करने के लिए धर्म का धंधा करने वाले टूलकिट से जुड़े लोगों ने मोदी के अमेरिका आगमन से पहले कुछ भारत विरोधी अमेरिकी सांसदों से एक पत्र अमेरिकी राष्ट्रपति को लिखवाया और उनसे मानवाधिकारों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का मुद्दा उठाने का आग्रह किया। भारत विरोधी कुछ अमेरिकी सांसदों ने मोदी के स्वागत समारोह और अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र में मोदी के संबोधन का बहिष्कार भी किया। यह लोग मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान ट्वीट और अन्य सोशल मीडिया मंचों पर पोस्ट भी करते रहे ताकि मोदी विरोधी अभियान को गति मिलती रहे। इसके अलावा, एक ओर उमर खालिद को रिहा करने की मांग संबंधी पोस्टर अमेरिका में लहराये गये तो दूसरी ओर खालिस्तान समर्थकों ने भी भारत विरोधी नारे लगाये। इस बीच, सबके सुर से सुर मिलाते हुए बराक ओबामा ने सीएनएन को साक्षात्कार देकर माहौल गमार्ने का प्रयास कर अपना भी योगदान दे दिया। देखा जाये तो बराक हुसैन ओबामा के मन में मोदी विरोधी भावना आज से नहीं बल्कि शुरू से ही है। ओबामा को 2014 में यह कतई नहीं भाया था कि आम चुनावों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की इतनी प्रचंड विजय हुई कि गुजरात के मुख्यमंत्री पद से सीधे मोदी भारत के प्रधानमंत्री बन गये। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ओबामा प्रशासन इस बात के लिए मजबूर हो गया था कि वह भारत के प्रधानमंत्री को अमेरिका यात्रा का वीजा प्रदान करे। यही नहीं, 2015 में गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में जब ओबामा भारत आये तो अपने एक संबोधन में मोदी सरकार को मानवाधिकारों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर उपदेश देना नहीं भूले थे। अमेरिका में जब डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बने तो मोदी से उनकी गहरी दोस्ती ओबामा को कतई पसंद नहीं आती थी इसलिए 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ओबामा ने जो बाइडन के लिए जमकर प्रचार भी किया। जो बाइडन को अमेरिका स्थित मुस्लिम संगठनों का पूरा समर्थन दिलाने में भी ओबामा की बड़ी भूमिका रही थी। ओबामा को उम्मीद थी कि बाइडन के कार्यकाल में मोदी विरोधी अभियान आगे बढ़ेगा लेकिन बाइडन तो मोदी से दोस्ती के मामले में ट्रंप से भी आगे बढ़ गये। ओबामा देखते रहे गये कि उनके कार्यकाल में उपराष्ट्रपति रहे बाइडन कैसे मोदी से लगातार मुलाकातें कर रहे हैं और वैश्विक नेता के रूप में मोदी को मान्यता दे रहे हैं। इसलिए जब मोदी को अमेरिका की पहली राजकीय यात्रा का निमंत्रण मिला तो ओबामा की खीझ स्वाभाविक थी। जहां तक ओबामा की ओर से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का मुद्दा बार-बार उठाये जाने और भारत को नसीहत देने की बात है तो इस बारे में कहा जा सकता है कि ओबामा को पहले यह सीख अपने देश को देनी चाहिए। देखा जाये तो बराक हुसैन ओबामा बहुत बड़े ढोंगी हैं। उनके कार्यकाल पर नजर डालेंगे तो पायेंगे कि अपने पूर्ववर्ती जॉर्ज डब्ल्यू बुश के मुकाबले अपने कार्यकाल में ओबामा ने दस गुना ज्यादा एअर स्ट्राइक करवायीं। बुश के कार्यकाल में कुल 57 हवाई हमले हुए थे जबकि ओबामा के कार्यकाल में 563 हवाई हमले हुए। जो हवाई हमले हुए वह सभी मुस्लिम देशों पर हुए जिनमें पाकिस्तान, सोमालिया, यमन, अफगानिस्तान और सीरिया आदि शामिल हैं। ओबामा के आदेश पर हुए हवाई हमलों में सिर्फ आतंकवादी ही नहीं मारे गये बल्कि हजारों की संख्या में आम नागरिक भी हताहत हुए। इसके अलावा, जिस अमेरिका में सबसे ज्यादा नस्लवाद या रंग के आधार पर भेदभाव की घटनाएं सामने आती हैं वह दूसरों को सीख देने से पहले यदि अपने अंतर्मन में झांके तो बेहतर रहेगा। सीएनएन पर ओबामा का पूरा साक्षात्कार पढ़ेंगे तो यह भी पता चलेगा कि उन्होंने बुझे मन से प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका में अगवानी की थी। अपने साक्षात्कार में ओबामा ने कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के समक्ष कई बार यह मजबूरी होती है कि हम जिन्हें पसंद नहीं करते उनका भी स्वागत करना पड़ता है और उनसे बात करनी पड़ती है। बहरहाल, ओबामा के साक्षात्कार को पढ़ कर लगता है कि उन्हें अब भी यह भ्रम है कि वह अमेरिका के राष्ट्रपति हैं और विश्व के मामलों में उनकी कोई भूमिका है। देखा जाये तो ओबामा अपने कार्यकाल में दुनिया को तमाम समस्याएं ही देकर गये हैं जिनकी भरपाई अमेरिका सहित अन्य देश कर रहे हैं। मानवाधिकार प्रेमी का मुखौटा लगाये इस शख्स के कार्यकाल में गलत नीतियों की वजह से जितने आम नागरिक मारे गये उसके लिए इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

■ **नीरज कुमार दुबे**

विदेशी मीडिया का इस संबंध में खूब सहारा लिया जाता है। बीबीसी गुजरात दंगों के 20 साल बाद उस पर डॉक्यूमेंट्री बनाती है। अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट जनरल की पत्रकार सबरीना सिद्दीकी को भारत में हो रहे विकास या मजबूत होती भारतीय अर्थव्यवस्था के संबंध में प्रश्न पूछने की बजाय सिर्फ अल्पसंख्यकों की चिंता सताती है।

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. की ओर से 502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 222539, फैक्स नंबर : 06562-241176/ 231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-2283384, फैक्स नंबर : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25, निचली मंजिल, तानसेन मार्ग, (बंगाली बाजार), नई दिल्ली-1, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com।

छुट्टियों के दिन ट्रेन में कंफर्म सीट के लिए मारा मारी

गर्मियों में छुट्टियां मनाने के लिए लोगों का घूमने जाने का सिलसिला शुरू हो गया है। गर्मियों की छुट्टी में परिजनों एवं बच्चों को किसी दूसरे शहर में घुमाने जाना है, लेकिन उन्हें ट्रेन में कंफर्म सीट नहीं मिल पायी। इस पर उन्होंने बस की मदद ली तो उसमें भी काफी भीड़ थी। गर्मी में भीड़ को देख उन्होंने घूमने का कार्यक्रम ही टाल दिया और वापस घर चले गए। यह तो एक मात्र उदाहरण है। ऐसा ही दूसरे यात्रियों के साथ देखने को मिल रहा है और वे छुट्टियों का आंनद लेने के लिए बाहर नहीं जा पा रहे हैं अथवा उन्हें ट्रेवल्स एजेंसियों के जरिए बस, कार आदि महंगे किराये पर सफर तय करने को मजबूर होना पड़ रहा है। गर्मी की छुट्टियों में हर किसी को कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। चाहे वह वयस्क हो या बच्चे। बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताने का मौका मिलता है साथ ही उन्हें समझने और उनके साथ मस्ती करने का मौका मिलता है। गर्मी की छुट्टियों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को गर्मी के मौसम में असहनीय गर्मी से कुछ राहत देना है। गर्मी के मौसम में पलामू सहित पूरे भारत में वातावरण अत्यधिक गर्म हो जाता है, जो विद्यार्थियों को हानि पहुंचा सकता है। इसलिए गर्मी की छुट्टियां उनके लिए पढ़ाई और गर्मी से राहत पाने का एक बहुत अच्छा विकल्प है। गर्मियों की छुट्टियां आमतौर पर छात्रों के जीवन का सबसे सुखद समय होता है। यह उनके लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि उन्हें अपने दैनिक स्कूल की दिनचर्या से आराम करने के लिए कुछ समय मिलता है। गर्मी की छुट्टियों के साथ-साथ इसका उद्देश्य छात्रों को साल भर की पढ़ाई और अंतिम परीक्षा के बाद एक लंबा ब्रेक देना भी है। वार्षिक परीक्षा समाप्त होने के बाद, छात्र थका हुआ महसूस करते हैं और अध्ययन में रुचि खो देते हैं, इसलिए, उन्हें अध्ययन के एक लंबे वर्ष के बाद अपने स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए आराम की आवश्यकता होती है। अधिकांश बच्चे और छात्र गर्मी की छुट्टियों की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि यह एक संतोषजनक अवसर होता है जब वे आराम से अपनी दिनचर्या में बदलाव कर सकते हैं और अपने परिवार और दोस्तों के साथ ऑनलाइन टिकट व्यवस्था करने के लिए रेलवे स्टेशन पर तत्काल कोटे की तलाश में पहुंच रहे हैं। यह टिकट एक दिन पहले ही निर्धारित होता है। खिड़की खुलने के एक घंटे के अंदर टिकट मिल गया तो ठीक वरना नहीं मिल पाता। जून में अकसर ही ट्रेनों में यह स्थिति रहती है। यात्रियों की सुविधा के लिए। कालका मेल, जम्मूतवी एक्सप्रेस, गंगासुतलेज एक्सप्रेस, कर्नाटका एक्सप्रेस व अन्य ट्रेनों में जून माह को 2-एस में वेटिंग 44, स्लीपर में 104, थर्ड एसी में 58 व सेकेंड एसी में 29 है। यह स्थिति छह, सात, आठ, नौ, दस, 11, 28 जून तक है। गर्मी की छुट्टी में ट्रेनों में आरक्षित सीटों के लिए मारामारी के हालात हैं। 28 जून तक लंबी दूरी की अधिकांश ट्रेनों में सीट नहीं होने के साथ वेटिंग लगभग 175 तक चली गई है। गर्मियों की छुट्टियों के साथ ही ट्रेनों में आरक्षित सीटों के लिए जद्दोजहद शुरू हो गई है। 28 जून तक ज्यादातर ट्रेनों में सीट नहीं मिल पा रही हैं। कई ट्रेनों में तो वेटिंग 108 से लेकर 175 तक जा रही है। इससे ट्रेनों और बसों में भीड़ बढ़ गई है। इस दौरान सफर करने वाले यात्रियों को कंफर्म सीट न मिलने से बेहद दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मजबूरी में उन्हें सामान्य कोच में भारी भीड़ के बीच सफर तय करना पड़ रहा है अथवा दूसरे वाहनों में सफर करने को

मजबूर होना पड़ रहा है। स्कूल-कॉलेजों में गर्मी की छुट्टी हो जाने के बाद परिजन घर से घूमने जाने लगे हैं। कोरोना संक्रमण के चलते पिछले दो सालों से लोग गर्मियों की छुट्टियों का आनंद उठाने के लिए कहीं घूमने-फिरने नहीं जा पा रहे हैं। अधिकांश लोग शिमला जैसी पहाड़ी एवं ठंडे स्थानों पर घूमने जाना चाहते हैं। दूसरी पसंद माता वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जम्मू-कटरा आदि जाने की है, लेकिन ट्रेनों में काफी भीड़ होने के चलते उन्हें सीट नहीं मिल पा रही है। टिकट आरक्षित कराने के लिए लोग परेशान हैं। तत्काल में भी उन्हें रिजर्वेशन नहीं मिल पा रहा है। वेटिंग सूची भी काफी लंबी है। ऐसे में लोग मन मारकर अपना घूमने का कार्यक्रम टाल रहे हैं।

❖ वेद प्रकाश

ट्रेन टिकट में ऑनलाइन माध्यम में बदलाव

गर्मी की छुट्टियां में रेलवे स्टेशनों पर भी भारी भीड़ जुटती है। ट्रेनों में कंफर्म सीट का टिकट को मिलना मुश्किल हो जाता है। टिकट प्रणाली ऑनलाइन माध्यम में बदल गई है, अब किसी भी स्थान पर ऑनलाइन द्वारा आसानी से टिकट बुक किया जा सकता है। रेलवे में SL क्लास का मतलब स्लीपर क्लास होता है और ये भारतीय ट्रेन में सबसे लोकप्रिय केटेगरी में से एक है। इस वर्ग में ज्यादातर लोग यात्रा करते हैं। ज्यादातर मामलों में स्लीपर क्लास में 72 से 78 सीटें होती हैं और सीट कॉन्फि गरेशन 3 + 3 + 2 जैसा होता है। इसका मतलब है कि डिब्बे के दोनों ओर तीन सीटें हैं और डिब्बे के गलियारे वाली साइड दो सीटें हैं। ये केटेगरी यात्रियों के बजट में भी होती है। 1ए क्लास को ही फर्स्ट क्लास एसी का नाम दिया गया है। इसे शताब्दी एक्सप्रेस में एग्जीक्यूटिव क्लास या ईसी के नाम से भी जाना जाता है। यह टिकट का सबसे प्रीमियम वर्ग है। जिसे आप बुक कर सकते हैं और इस टिकट का किराया अक्सर फ्लाइट टिकट की तुलना में ज्यादा होता है। यहां के कोच केबिन में बंटे होते हैं और ज्यादातर केबिन में 4 सीटें होती हैं। ध्यान रखने वाली बात ये है कि अगर आप 1 ए में सीट बुक कर रहे हैं तो यात्रा शुरू होने से पहले टीटीई आपको सीटें देगा। इस कोच में सीटें काफी आरामदायक होती हैं। यहां तक कि इस कोच में खाना भी काफी वैरायटी में मिलता है। 2A, AC 2 Tier का दूसरा नाम है या आप इसे निकनेम नाम भी बोल सकते हैं, जो AC 3 Tier और AC 1 Tier के बीच में आती है। इस क्लास की सीटें भी काफी आरामदायक होती हैं और दोनों तरफ दो-दो सीटें होती हैं। गलियारे की तरफ भी दो सीटें

होती हैं। इसमें भी टिकट थोड़ी महंगी होती है, लेकिन आरामदायक सफर आपको बिल्कुल भी अफसोस नहीं होंगे देगा। यह 3 टियर एसी के लिए है और यह स्लीपर क्लास में एसी कोच में उपलब्ध सबसे किफायती टिकट है। यहां सीटों की संख्या कोच के हिसाब से बदलती रहती है, जहां एक बोगी में न्यूनतम सीटें 64 और अधिकतम 72 सीटें हो सकती हैं। हमारी लिस्ट में अगली केटेगरी सेकेंड सिटिंग है और ये सिटिंग क्लास में उपलब्ध सबसे सस्ती टिकट है। सीटें काफी आरामदायक नहीं होती हैं, लेकिन अगर आप कम दूरी की यात्रा कर रहे हैं, तो आप ये सीट को चुन सकते हैं। इस रो में 6 सीटें हैं सीटें एक-दूसरे के आमने-सामने रहती हैं। 2एस में सीटों की कुल संख्या 108 सीट प्रति बोगी है। ट्रेनों की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी, आगमन और प्रस्थान का समय, अब स्टेशनों पर बड़ी स्क्रीन पर आसानी से उपलब्ध है। स्टेशनों पर टिकट मशीनें लगा दी गई हैं। डिजिटलाइजेशन की ओर बढ़ रहे रेलवे स्टेशनों की सेवाओं में उन्नति में दिखाई दे रही है। रेलवे स्टेशन यात्रा मानदंड के संबंध में यात्रियों को विभिन्न सुविधायें देने वाला एक स्थान हैं। पहले की स्थिति से वर्तमान की स्थितियों और सेवाओं में बहुत कुछ सुधार हुआ है। यात्रियों की सुविधाजनक यात्रा और इस प्रकार डिजिटलाइजेशन की ओर बढ़ने के लिए भारतीय रेलवे विभिन्न तकनीकों को समायोजित करने के लिए अपने स्तर पर पूरी कोशिश कर रहा है। तकनीकी प्रगति द्वारा सेवाओं में निरंतर सुधार, यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित, सुविधाजनक और पर्यावरण के अनुकूल बना रहा है रेलवे स्टेशन बहुत अधिक भीड़ वाले स्थान होते हैं। यहां का परिदृश्य काफी अलग होता है। लोग यहां पर दिन-रात चलते रहते हैं। कई अपने गंतव्यों की तरफ यात्रा कर रहे होते हैं तो उनमे से कुछ अपने गंतव्य पर पहुंच रहे होते हैं। सामान भी एक स्थान से दुसरे स्थान तक लाया ले जाया जाता है, माल लोड या अनलोड किया जाता है। कुल मिलाकर यह एक महत्वपूर्ण स्थान है जो कई बुनियादी जरूरतों और गतिविधियों की पूर्ति करता है। रेलवे स्टेशन पर कितनी और किस स्तर की सुविधाएं हैं यह उसके स्थान पर निर्भर करती हैं। यदि यह एक छोटा स्टेशन है, तो यहां पर आपको कुछ बुनियादी सुविधाएं जैसे कि छोटी चाय की दुकान, बेंच, वॉशरूम और टिकट काउंटर ही मिलते हैं। लेकिन बड़ा रेलवे स्टेशन कई तरह की सुविधाएं प्रदान करता है जैसे शौचालय, एटीएम मशीन, रेस्तरां, विभिन्न खाद्य स्टाल, और भी बहुत कुछ। बड़े रेलवे स्टेशन कम संख्या में हैं। रेलवे स्टेशनों के अस्तित्व से लोग लाभान्वित होते हैं। हर दिन लाखों लोग यात्रा करते हैं। रेलवे स्टेशन लोगों को अपनी निर्धारित ट्रेन की प्रतीक्षा करने के लिए एक स्थान प्रदान करते हैं। कैशलेस लेन-देन को बढ़ावा देते हुए, प्रत्येक और हर तरह की फूड ऑर्डरिंग सेवाएं ऑनलाइन लागू होती हैं। अधिकांश स्टेशन जैव-शौचालयों से सुसज्जित हैं। ट्रेन भारतीय रेलवे के लिए एक बड़ी उपलब्धि रही है रेलवे स्टेशन सीसीटीवी कैमरों, वाई-फाई और साथ ही विभिन्न सुरक्षा उपायों जैसी सुविधाओं से सुसज्जित हैं। वर्तमान स्थिति में आने पर, जब पूरी दुनिया कोरोना महामारी से प्रभावित हुई, तब यात्रियों के लिए रेलवे स्टेशनों पर सुविधाओं में सुधार किया गया। डिजिटल रूप से अलग-अलग ऑटोमैटिक सैनिटाइजेशन मशीनें लगाई गई, परीक्षण सुविधाएं, मास्क और अन्य सुरक्षा सेवाएं सुनिश्चित की गई हैं।

❖ ओपी

रेल में सफर करना सुलभ

गर्मी छुट्टी में ट्रेन से यात्रा करना अविश्वसनीय रूप से दर्शनीय हो सकता है। रेलवे स्टेशन एक ऐसी जगह है जहां विभिन्न ट्रेनें आती हैं और प्रस्थान करती हैं और कुछ ऐसा ही यात्रियों और सामानों के साथ भी होता है। किसी यात्री की यात्रा एक रेलवे स्टेशन से शुरू होती है और रेलवे स्टेशन पर ही समाप्त भी होती है, इस प्रकार यह स्टेशन ट्रेनों के साथ यात्रा करने के लिए अनिवार्य हो जाता है। यहां कई ट्रैक होते हैं जो विभिन्न ट्रेनों के लिए अलग-अलग मार्ग हैं। स्टेशन पटरियों के साथ थोड़ी ऊंचाई पर बना होता है। यह स्थान तमाम तरह की सुविधाओं से सुसज्जित होता है। ट्रेन यात्रा बस हवाई और कारकी तुलना में एक बेहतर, अधिक आराम का अनुभव करवाती है। ट्रेन की यात्रा बहुत ही शानदार होती है क्योंकि यह आपको वास्तविक प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने का मौका देती है। आज की तारीख में, गांव व देशभर में लगभग 1000 से भी अधिक रेलवे स्टेशनों को पूरी तरह से विद्युतीकृत किया गया है। यह सब सौर ऊर्जा का उपयोग करके किया जाता है। यह स्थिरता की दिशा में एक सफल कदम है और निश्चित रूप से सतत विकास लक्ष्य को पूरा करने में मदद करेगा। इसके इस्तेमाल से कार्बन उत्सर्जन भी कम हो जाएगा।लंबे पथ और रात भर मुसाफरी के लिए ट्रेन सबसे सुरक्षित परिवहन में से एक है। गर्मी के छुट्टियों में छोटे बच्चों के साथ रेल में सफर करना अधिक सुलभ हो जाता है। रेलयात्रा के कई सारे लाभ है। ट्रेन की मुसाफरी सबसे सस्ती और आरामदायक होती है। प्रतिकूल मौसम की स्थिति का रेलयात्रा पर कम प्रभाव पड़ता है। रेल यात्रा सुरक्षित होती है।क्योंकि चोरी या डकैती की संभावना कम होती है।छोटे बच्चों और सीनियर सिटीजन के लिए ट्रेन में कई व्यस्था है।जैसे भोजन और चाय के

स्टॉल, शौचालय, टिकट काउंटर, आदि। ट्रेन का इन्तजार कर रहे यात्रियों के लिए या वहां पहुंचने वाले लोगों के लिए यह एक फायदेमंद सुविधा साबित होती है। बहुत से यात्री अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए यहां से अपनी संबंधित ट्रेनों में सवार होते हैं। कुल मिलाकर यह जगह चारों ओर चहल-पहल से भरा हुआ होता है।किताबें पढ़कर, खेल खेलकर, संगीत को सुनते हुए आप अपना समय सफर के दौरान आराम से काट सकते हो। ट्रेन में चढ़ने वाले विक्रेता बच्चों के अनुकूल स्नैक्स बेचते हैं। नमकीन मूंगफली, चॉकलेट और काजू बच्चों के लिए खुशी का एक बड़ा स्रोत हैं। यहां का परिदृश्य भी काफी मनभावन होता है। यहां पर विभिन्न क्षेत्रों के लोग देखे जा सकते हैं। कई रेलवे स्टेशनों पर विभिन्न श्रेणियों के लिए एक प्रतीक्षालय भी है। लोग अपने भारी भरकम सामान के साथ, प्लेटफार्म की ओर बढ़ते रहते हैं। आपराधिक गतिविधियों की जांच के लिए रेलवे पुलिस के साथ सुरक्षा सेवाएं भी मौजूद होती हैं।

❖ गुड्डू कुमार

यात्रा हमें जीवन के कई सबक सिखाती है

गर्मी छुट्टियों में यात्रियों की भीड़ भाड़ खूब नजर आ रहे हैं। एक रेल यात्रा निश्चित रूप से एक शानदार खुशी का अवसर देता है। इसके अलावा, रेल की यात्रा व्यक्तियों को तीव्र उत्साह की भावना से भर देती है। यात्रा की दूरी लंबी होने पर यात्रा का यह तरीका सबसे अच्छा है। एक रेल यात्रा एक ऐसी आभा बनाती है जिसे अन्य प्रकार की यात्रा के साथ अनुभव नहीं किया जा सकता है। रेलवेज हमेशा से देश की आर्थिक प्रगति में अहम भूमिका निभाती हैं। हमारे देश की अधिकतम आय इसी क्षेत्र से आती है। हर देश के प्रगति का पथ निर्धारित करती है, रेलवे। अन्य साधनों से बेहद सस्ती और आरामदायक होने से हर तबके के लोग इससे यात्रा करना बेहतर समझते है। हमारी देश की गरीब जनता का इसके बिना काम ही नहीं चल सकता। ट्रेन का सफर कई मायनों में अनोखा होता है। ट्रेन की यात्रा हमें जीवन के कई सबक सिखाती है। सफर के द्वारा हुए अनुभव और सीखे गए सबक जिंदगी के लिए काफी मूल्यवान हैं। यह हमें प्रकृति के करीब लाती है। व्यस्त प्लेटफॉर्म और खूबसूरत नजारें हमें ऐसी यादें देती हैं जिन्हें हम हमेशा संजो कर रखेंगे। सभी लोगों को अपनी जिंदगी में एक बार रेलयात्रा जरूर करनी चाहिए। क्योंकि गमीयों के छुट्टियों में रेल यात्रा के दौरान हम बाहरी वातावरण का भी अनुभव कर सकते हैं और आनंद पूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से पहुंच सकते हैं। मैं अपने माता-पिता के साथ दिल्ली घूमने गया था पहले हम टैक्सी लेकर रेलवे स्टेशन गए। हमने टिकट खरीदे और प्लेटफॉर्म पर ट्रेन का इंतजार करने लगे। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर समय अनुकूल आ चुकी और हम करीब रात को दिल्ली के लिए निकल गए। हम भाग्यशाली थे कि हमें अच्छी सीटें मिलीं। हमने रास्ते में टी.टी.सी. आया और हमारे टिकट चेक किए। हमने रात का भोजन ट्रेन में ही किया। ट्रेन का भोजन काफी स्वादिष्ट था और हमने इस स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया। रात में सोने के लिए हमें ट्रेन की तरफ से चादर ,तकिया और कंबल भी दिया गया। हम दूसरे दिन दोपहर के दिल्ली पहुंचे। हमने सफर के दौरान काफी मजे किये। रास्ते में हमें पहाड़ियां,जंगल और नदियों का भी आंनद उठाया। सफर के दौरान हम लोगों से मिले, किताबें पढ़ी और बैठकर कई खेल भी खेले। सच में रेलयात्रा का मेरा अनुभव काफी शानदार रहा।ट्रेन यात्रा हम सभी लोगों के लिए अन्य परिवहन साधनों की अपेक्षा अधिक सस्ता होता है और हमें आराम का अनुभव कराता है। रेल में यात्रा करते समय हम कई व्यक्तियों से मिलते हैं जिससे हमारी दोस्ती भी हो जाती है तथा यात्रा के दौरान हमारे परिचय के कई लोग मिलते हैं जिससे बातें करते हुए हम आसानी से अपने तय किए गए दूरी तक पहुंच जाते हैं। हमें रेल यात्रा के दौरान चोरों, जेब कतरों, लुटेरों आदि से सावधान रहना चाहिए। हमें रेल यात्रा के दौरान अपने हाथ या फोन को बाहर नहीं निकालना चाहिए। हमें अपने टिकट को हमेशा अपने साथ रखना चाहिए।रेल के सफर में कई तरह के अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, रेल एक मिलनसार वातावरण प्रदान करती है। रेल की यात्रा में, यात्रियों के बीच बातचीत लगभग हमेशा होती रहती है। हम सभी को सावधानियां बरतते हुए रेल यात्रा का आनंद लेना चाहिए।

❖ बजरंगी कुमार

पहली ट्रेन यात्रा बाबा अजमेर शरीफ की

मैंने बस से तो कई बार यात्रा की है लेकिन रेलगाड़ी से एक बार भी यात्रा नहीं की है। मनुष्य की जिज्ञासा कभी भी एक ही स्थान पर और एक ही उद्देश्य तक सीमित नहीं रहती है।
गर्मी के समय में मेरे पिता जी ने अजमेर शरीफ दरगाह जाने का कार्यक्रम बनाया। इस सुनहरे अवसर पर हम सभी ने रेलगाड़ी द्वारा अजमेर जाने की योजना बनाई थी। यह ट्रेन से यात्रा करने का मेरा पहला अनुभव करने जा रही थी। लेकिन काफी खूबसूरत था। जैसे ही गार्ड ने सीटी बजाई, ट्रेन स्टेशन से दूर होती चली गई। यह कहा जा सकता है कि रेलवे स्टेशन उन जगहों पर महत्वपूर्ण हैं जहां दैनिक आधार पर विभिन्न गतिविधियां की जाती हैं। लोग इन स्टेशनों के कारण यात्रा के दौरान खुद को मैं बहुत आनंदित था कि मैं अपनी पहली यात्रा को पूर्ण करने जा रहा था। अजमेर शरीफ जाने के लिए हम सभी लोगों में तैयारी के लिए भाग-दौड़ शुरू हो गयी थी। हमारी माता जी ने हमारे पहनने और खाने के लिए बहुत सा सामान रख लिया था। मां पिताजी से अधिक हम अपनी पहली यात्रा पर उत्सुक होते हैं। लोगों को दूर की यात्रा में बस की जगह रेल अधिक आनंद देती है। बस में सोने, इधर-उधर धुमने-फिरने की सुविधा नहीं होती है लेकिन रेल में सभी सुविधाएं होती हैं। किसी भी यात्रा का अपना अलग सुख होता है। यात्रा करना बहुत लोगों को पसंद होता है। स्थल यातायात में रेलगाड़ी का बहुत महत्व होता है। हमारे पलामू में सारे देशों को रेल लाईनों से जोड़ा गया है। मेरी पहली यात्रा 2016 में पूरी हुई थी। उस समय मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था। मैं अपने परिवार के साथ गर्मी की

छुट्टियों में बाबा अजमेर शरीफ दरगाह गया था। यात्रा तो बहुत लोग करते हैं लेकिन पहली यात्रा का अनुभव बहुत खास होता है। रेल यात्रा करते समय हमारे दोस्त भी बन जाते हैं जो हमसे दूर रहते हैं क्योंकि यात्रा करने के लिए बहुत से लोग बहुत दूर-दूर से यात्रा करने के लिए आते हैं। रेलवे प्लेटफार्म से हम खाने-पीने और रोमांचक वस्तुएं खरीद सकते हैं। प्लेटफार्म पर हम मेले जैसा अनुभव करते हैं। हम पूरे तीन लोग थे मेरे माता-पिता और मैं था। पहली यात्रा के समय बहुत आनंदित था। हम सभी जरूरतमंद सामान लेकर ऑटो द्वारा रेलगाड़ी के स्टेशन पहुंचे थे। हमारी पहली यात्रा की शुरूआत स्टेशन से हुई थी। हम लोगों ने अपनी टिकट स्टेशन से खरीदी। स्टेशन से हम जो चाहें खरीद सकते हैं। उस दिन हम लोग बहुत जल्दी स्टेशन पर पहुंच गये थे। डाल्टेनगंज प्लेटफार्म पर बैठने के लिए बेंचों की सुविधा थी जिस पर हम सभी आरामपूर्वक बैठ गये। बाबा अजमेर शरीफ दरगाह जाने वाली गाड़ी को रात को आना था लेकिन एक ध्वनी प्रसारण की मदद से हमें यह पता चला कि अजमेर जाने वाली रेलगाड़ी आज 2 घंटा देर से आएगी। हम लोग प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने लगे और खेल खेलना शुरू कर दिया। हम लोग प्रतीक्षा करने के लिए समाचार पत्र और पत्रिकाओं का अध्धयन भी किया। मैंने रेलगाड़ी में पढ़ने के लिए एक पत्रिका खरीदी वह बहुत ही ज्ञानवर्धक पत्रिका थी जिसमें सभी जानकारी की बातें छपी हुईं थीं। रेलगाड़ी झुक-झुक करती हुई अपने प्लेटफार्म पर पहुंची। फिर हम ट्रेन पर सवार हो गए। फिर हम सभी ने अपनी-अपनी सीटों पर सूती चादर बिछाई और उस पर लेट गये। पिता जी ने पहले से ही दो तकियों को खरीद लिया था। जिन्हें मैंने मुंह से हवा भरकर फुलाया था। जब मैंने अपनी आंखों को बंद किया तो रेलगाड़ी के चलने की लयात्मक ध्वनी को सुनकर मुझे बहुत आनंद मिल रहा था। कुछ देर बाद हमें नींद आ गयी।
हम सभी लोग अपनी पहली यात्रा करते समय बहुत खुश थे। मैं अपनी निर्धारित जगह पर बैठकर रेलगाड़ी से बाहर के दृश्य का आनंद ले रहा था। खिड़की से बाहर सभी तरह के दृश्य सामने आ रहे थे और वो अपने दर्शन देकर पीछे दूर जाकर छिप जाते थे। उन दृश्यों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे साथ आंख-मिचोली खेल रहे हों। मुझे अपनी पहली रेल यात्रा में बहुत आनंद आ रहा है। मुझे बाहर के दृश्य अत्यंत ही मोह लेने वाले लग रहे हैं। रेलगाड़ी से बाहर हरियाली से भरे खेतों का और महल तथा अट्टालिकाओं से भरे शहर का दृश्य बहुत ही मनमोहक लग रहा था। हम एक पल खेतों से गुजर रहे होते हैं तो एक पल शहर से गुजर रहे होते हैं। इतने कम समय में इतनी विविधता मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। हमारी रेलगाड़ी बड़े-बड़े शहरों, नगरों, खेतों, नदियों, और जंगलों को पार करती हुई तीसरे दिन सुबह बाबा अजमेर शरीफ दरगाह पहुंची थी।

❖ कुमारी रिया

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति

रिकी पोंटिंग ने दूसरे टेस्ट के लिए प्लेइंग इलेवन की भविष्यवाणी की

एजेंसी। दुबई

पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने भविष्यवाणी की है कि अपरिवर्तित ऑस्ट्रेलिया लॉर्डस में दूसरे एशेज टेस्ट में अपने आक्रमण में एक अलग संतुलन के साथ इंग्लैंड की टीम से भिड़ेगा। पैट कमिंस ने एजबस्टन में नए आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र के पहले टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया को दो विकेट से प्रसिद्ध जीत दिलाई, जिससे मेहमान टीम पांच मैचों की श्रृंखला में 1-0 से आगे हो गयी। आईसीसी ने कहा, दूसरा टेस्ट 28 जून को लॉर्डस में शुरू होगा और पोंटिंग का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया अपनी अंतिम एकादश में बदलाव तभी करेगा यदि गेंदबाजी आक्रमण में कुछ खिलाड़ी चोटिल होते हैं।

पोंटिंग ने आईसीसी से कहा, चूंकि इन दोनों मैचों के बीच आठ दिन का ब्रेक है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि वे कोई बदलाव करेंगे। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीमों ने इतिहास में विजेता टीमों और जीत के फॉर्मूले को बदलना पसंद नहीं किया है। मुझे एकमात्र चिंता यह है कि (जोश) हेजलवुड ने मैच के दौरान बहुत अधिक गेंदबाजी नहीं की। मुझे यकीन नहीं है कि क्या वे इस पहले टेस्ट के दौरान उसे प्रशिक्षित करने की कोशिश कर रहे थे, या अगर इसमें थोड़ी सी भी गड़बड़ी है तो यह बिल्कुल सही नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, मैंने देखा, ऐसा लग रहा था कि ऐसे कुछ मौके हो सकते थे जहां हेजलवुड अधिक गेंदबाजी कर सकते थे और उन्होंने ऐसा करने का विकल्प नहीं चुना। वास्तव में कैमरून ग्रीन के साथ भी बिल्कुल वैसा ही है। मैं इस बात से थोड़ा आश्चर्यचकित था कि इस मैच के दौरान उन्होंने कितनी कम गेंदबाजी की, खासकर दूसरी पारी में। इसलिए मैं किसी बदलाव की उम्मीद नहीं कर रहा हूं, लेकिन उन दोनों ने कितनी कम गेंदबाजी की, इसे देखते हुए मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। हालाँकि, पोंटिंग को उम्मीद है कि लॉर्डस के लिए इंग्लैंड अपनी टीम में एक महत्वपूर्ण बदलाव करेगा।

स्पिनर मोईन अली को लगभग दो साल बाद इंग्लैंड के लिए पहली बार लाल गेंद से खेलते हुए उंगली में चोट लग गई, जिससे दूसरे टेस्ट में उनकी भागीदारी संदेह में है। इंग्लैंड एकादश में मोईन की जगह कौन लेता है यह दूसरे टेस्ट से पहले बड़ी चयन कॉलों में से एक है। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि चार तेज गेंदबाज खेलें और जो रूट को अपने स्पिनिंग विकल्प के रूप में इस्तेमाल करें। जो लगातार 13 या 14 ओवर फेंकने में सक्षम था, उन्होंने एक विकेट लिया, अपनी ही गेंदबाजी पर एक और मौका गंवा दिया। तो यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में वे सोच सकें।

पोंटिंग चार तेज गेंदबाज चुनने का विकल्प चुनकर इंग्लैंड की ओर झुक रहे हैं और इसका एक कारण मार्क वुड की अतिरिक्त गति को शामिल करना होगा, विशेष रूप से इंग्लैंड में शॉर्ट-बॉल रणनीति को लागू करने के लिए 'एनफोर्सर' की कमी को देखते हुए।

विशेष ओलंपिक विश्व खेल : भारत पदक शतक के करीब

एजेंसी। बर्लिन

ऐसे दिन जब मौसम ने खराब खेल दिखाया, लगातार बारिश के कारण विशेष ओलंपिक विश्व खेल 2023 में लगभग सभी आउटडोर कार्यक्रम रद्द और स्थगित हो गए, भारत के रोलरस्केटर्स गिनती जारी रखने के लिए पदकों के बीच दौड़ पड़े। शुक्रवार के अंत तक, भारत ने अपने पदकों की संख्या 95 (स्वर्ण : 33; रजतः 37; कांस्यः 25) पहुंचा दी।

रोलर-स्केटिंग क्षेत्र में, भारतीय दल ने नौ पदक (3 स्वर्ण, 5 रजत, 1 कांस्य) जोड़े। स्वर्ण पदक विजेताओं में मोहम्मद निसार (30 मीटर स्लैलम) और आर्यन और अभिजीत, 2 गुना 100 रिले की युगल जोड़ी थे। रोलर स्केटिंग भारतीय दल के लिए सबसे उपयोगी सफलताओं में से एक साबित हुआ है और बाहर भारी बारिश के बावजूद, उन्होंने निराश नहीं किया।

जूडो शुक्रवार को भारत के लिए एक और खुशी का मैदान साबित हुआ। एक दिन पहले, सुहालिया परवीन के रजत ने भारत को खेल में अपना पदक खाता खोलने में मदद की थी। 24 घंटे बाद मैट पर उनके साथ दो और पदक विजेता शामिल हो गए। पुरुष लेवल 2 वर्ग में प्रिंस सोलंकी ने कांस्य पदक जीता, जबकि महिला लेवल 3 वर्ग में मुस्कान ने स्वर्ण पदक जीता। मुस्कान ने विश्व खेल 2023 में जूडो में देश का पहला स्वर्ण लाने के लिए अपने दोनों मुकाबले बड़े पैमाने पर जीते। टेबल टेनिस मैदान भारतीय दल के लिए एक और उपयोगी मैदान साबित हुआ, जहां उस दिन खेल से तीन पदक पक्के हो गए। अंडर 21 डी 3 में एक अखिल भारतीय फाइनल में, विघ्नेश लोकेश्वर नाइक ने गुनोसेन सिंह बेदी को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। महिला एकल 30-डी3 में अलीवेलम्मा गुज्जला ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया । चार मैचों के दौरान, अलीवेलम्मा ने स्वर्ण पदक जीतने के सफर में सिर्फ एक गेम गंवाया। पॉवरलिफ्टिंग में भारत के खाते में चार और पदक तालिका में जुड़े। 93 किग्रा वर्ग में, अनुराग प्रसाद ने बेंच प्रेस में तीन स्वर्ण (स्क्वाट, डेडलिफ्ट, संयुक्त) और एक रजत जीता। बर्लिन में शुक्रवार के अंत तक, भारत ने अपने पदकों की संख्या 95 (स्वर्णः 33; रजतः 37; कांस्यः 25) तक पहुंचा दी। भारत की महिला यूनिफाइड वॉलीबॉल टीम ने एसओ केन्या को 25-12, 25-16 से हराकर एफए प्रतियोगिता के फाइनल में प्रवेश किया और संयुक्त अरब अमीरात के साथ खिताबी भिड़ंत तय की। पूरे मैच के दौरान भारत ने अपना दबदबा बनाए रखा, लेकिन फिनिश लाइन के सामने थोड़ा सा लड़खड़ा गया।

इंग्लैंड का पारी घोषित करने का फैसला अहंकारपूर्ण : ब्रेट गीव्स

एजेंसी। लंदन

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट गीव्स ने एजबेस्टन में पहले एशेज टेस्ट के पहले दिन 393/8 पर पारी घोषित करने के इंग्लैंड के फैसले को 'बेहद अहंकारी' बताया है और कहा है कि मेजबान टीम का अति-आक्रामक धृष्टिकोण इस बहुप्रतीक्षित श्रृंखला में नहीं टिक पायेगा। एशेज में एजबस्टन टेस्ट के पहले दिन इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स के 393/8 पर पारी घोषित करने के फैसले को, जिसमें जो रूट ने नाबाद 118 रन बनाए, कुछ विशेषज्ञों ने मेजबान टीम के दो-विकेट से हारने के पीछे का मुख्य कारण बताया है।

एसईएन रेडियो से गीव्स ने कहा, यह उन्हें (इंग्लैंड) असफल होने के लिए तैयार करता है और मुझे ऐसा लगता है कि भले ही हम हार जाएं, हम सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खेल रहे हैं और हम वैसे भी जीत गए हैं। यह इस तरह काम नहीं करता है। विशेष रूप से एशेज में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ। ग्रीव्स ने कहा, विशेष रूप से अगर इंग्लैंड में जंगली अहंकार की मानसिकता है और यही वह घोषणा थी। यह सोचना बहुत ही अहंकारपूर्ण था कि पहली पारी में बहुत सपाट विकेट पर (8/393) ही काफी है। गीव्स का मानना है कि इंग्लैंड की आश्चर्यजनक घोषणा ने ऑस्ट्रेलिया के मैच जीतने में भूमिका निभाई, आखिरी दिन के खेल में 281 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए कप्तान पैट कमिंस 44 रन बनाकर नाबाद रहे। बिल्कुल, उन्होंने (ऑस्ट्रेलिया ने) इंग्लैंड की हास्यास्पद मूर्खतापूर्ण घोषणा के आधार पर गेम जीता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंग्लैंड ने उनकी जीत में भूमिका निभाई। वे अगले दिन वापस आ सकते थे और 50 या 60 रनों के लिए बल्लेबाजी करने की कोशिश कर सकते थे, जिससे ऑस्ट्रेलिया को मैच से बाहर होना पड़ता, केवल एक टीम मैच जीतने में सक्षम होती अगर उन्होंने 450 या 460 रन बनाए होते और वह इंग्लैंड थी। और यह खेल के प्रति उनके धृष्टिकोण को लेकर अहंकार के कारण है। 8/393 घोषित, आप टेस्ट मैच क्रिकेट में ऐसा नहीं करते हैं। आप पांच दिवसीय मैच में ऐसा नहीं करते हैं जब जो रूट 118 रन पर नाबाद होते हैं। अब 1-0 से पीछे, इंग्लैंड 28 जून से लॉर्डस में शुरू होने वाले दूसरे एशेज टेस्ट में वापसी करने का लक्ष्य रखेगा। गीव्स, जिन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में लंबे घरेलू करियर के अलावा एक वनडे और दो टी20 खेले, इससे प्रभावित नहीं थे इंग्लैंड के कोच ब्रेंडन मैकुलम ने खिलाड़ियों से कहा कि एजबस्टन में हार के बावजूद उन्हें उन पर गर्व है। एक लेख था जो मैं पढ़ रहा था जिसमें ब्रेंडन मैकुलम को उनके नुकसान के संदर्भ में उद्धत किया गया था, वे चेंजरूम में थे और ब्रेंडन ने सबसे पहले बात की और उन्होंने कहा; दोस्तों, मुझे आपके द्वारा किए गए प्रयास पर बेहद गर्व है।

पीटरसन ने मैकुलम के पास जाकर पारी घोषित करने पर जवाब मांगा

एजेंसी। लंदन

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन ने एजबस्टन में पहले एशेज टेस्ट में मेजबान टीम की पहली पारी 393/8 पर घोषित करने की रणनीति पर सवाल उठाया है और कहा है कि वह मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम के पास गए और उनसे उस आश्चर्यजनक रणनीति के पीछे के स्पष्टीकरण की मांग की। । एजबस्टन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले एशेज टेस्ट में इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी 393/8 पर घोषित करने का साहसिक निर्णय लिया। इस निर्णय ने कई विशेषज्ञों को आश्चर्यचकित कर दिया, पहले दिन के खेल में कुछ ओवर शेष रहने के बावजूद, उनके प्रमुख बल्लेबाज जो रूट 118 रन बनाकर नाबाद थे, और मेजबान टीम के पास अभी भी दो विकेट बाकी थे।

डेली मेल ने पीटरसन के हवाले से कहा, हम ऐसे समय में हैं जहां टेस्ट क्रिकेट को खुद में बदलाव लाने के लिए कुछ करने की जरूरत है क्योंकि इसमें बहुत प्रतिस्पर्धा है। लेकिन मैं इसका जवाब धीरे-धीरे दे रहा हूं क्योंकि मैं अभी भी 100 प्रतिशत निश्चित नहीं हूं, नहीं, मैंने कभी घोषणा नहीं की होगी। क्योंकि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ, एशेज का पहला दिन, 393, सोच रहा हूं कि सपाट विकेट पर आपने काफी कुछ कर लिया है। " पीटरसन ने नासिर हुसैन से बातचीत में कहा, मुझे सकारात्मकता पसंद है। लेकिन यह सिर्फ एक श्रृंखला है, विशेष रूप से, कि मुझे अभी भी अपना दिमाग लगाने की जरूरत है। मैं वास्तव में शनिवार को मैकुलम के पास गया और कहा, 'कृपया मुझे यह समझाएं क्योंकि मैं इसे नहीं समझता हूं कि मैंने अपने पूरे करियर में ऐसा किया है।

बल्लेबाजी विफलताओं के लिए पुजारा को बलि का बकरा क्यों बनाया : गावस्कर

एजेंसी। नई दिल्ली

भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डब्ल्यूटीसी फाइनल में भारत की बल्लेबाजी की विफलता के बाद अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा को गलत तरीके से निशाना बनाया गया और उन्हें वेस्टइंडीज दौरे के लिए टीम से बाहर कर दिया गया। गावस्कर ने स्पोर्ट्स टुडे से कहा, उन्हें क्यों हटा दिया गया है? उन्हें हमारी बल्लेबाजी विफलताओं के लिए बलि का बकरा क्यों बनाया गया है। वह भारतीय क्रिकेट के एक वफादार सेवक रहे हैं। एक वफादार और शांत सेवक। एक वफादार और शांत उपलब्धि हासिल करने वाला। लेकिन क्योंकि उनके लाखों अनुयायी नहीं हैं।

उन्होंने कहा, यह समझ से परे की बात है। उन्हें बाहर करने और फेल होने वाले अन्य लोगों को रखने का मानदंड क्या है? मुझे नहीं पता क्योंकि आजकल, चयन समिति के अध्यक्ष के साथ मीडिया की कोई बातचीत नहीं होती है।

गावस्कर का मानना है कि पुजारा को सिर्फ उनकी उम्र की वजह से भारतीय टेस्ट टीम से बाहर नहीं किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा,वह देशी क्रिकेट खेल रहे हैं। इसलिए, उन्होंने काफी रेड-कॉल क्रिकेट खेला है और वह जानते हैं कि यह किस बारे में है। आज, लोग 39-40 साल की उम्र तक खेल सकते हैं और जब तक आप रन बना रहे हैं, तब तक खेल सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि उम्र कोई कारक होनी चाहिए। (अजिंक्य) रहाणे के अलावा, बल्लेबाजी पूरी तरह से विफल रही। पुजारा को कमजोर खिलाड़ी क्यों बनाया गया, यह चयनकर्ताओं को बताना होगा।

शीर्ष वरीय क्रेजिकोवा बर्मिंघम क्लासिक के फाइनल में

एजेंसी। बर्मिंघम (यूके)

शीर्ष वरीयता प्राप्त चेक गणराज्य की बारबोरा क्रेजिकोवा ने शनिवार को यहां चीन की झू लिन पर 6-3, 6-2 से जीत के साथ बर्मिंघम क्लासिक के फाइनल में प्रवेश कर लिया। अपने करियर की पहली भिड़ंत में 12वीं रैंकिंग वाली क्रेजिकोवा को वर्ल्ड नंबर 39 झू को हराने में 1 घंटा 32 मिनट का समय लगा। फरवरी में डब्ल्यूटीए 1000 दुबई में खिताब जीतने के बाद, क्रेजिकोवा ने सीजन के अपने दूसरे फाइनल में प्रवेश किया। इस जीत के साथ, क्रेजिकोवा ने टूर-स्तरीय सेमीफाइनल में अपनी भारी सफलता जारी रखी। चेक ने अब अपने डब्ल्यूटीए टूर करियर में 11 सेमीफाइनल मैचों में से 10 जीते हैं। क्रेजिसिकोवा ने बर्मिंघम में पूरे सप्ताह एक भी सेट नहीं गंवाया है। शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ने झू के खिलाफ अपना ठोस प्रदर्शन जारी रखा, चार ऐस लगाए और झू की पहली सर्विस लौटाते हुए आधे से अधिक अंक जीते। 2021 रौलां गैरो चैंपियन क्रेजिकोवा को अब नंबर 2 सीड जेलेना ओस्टापेंको और नंबर 4 सीड अनस्तासिया पोटापोवा के बीच दिन के दूसरे सेमीफाइनल के विजेता का इंतजार है। क्रेजिसिकोवा ने कभी भी पोटापोवा का सामना नहीं किया है, और वह ओस्टापेंको के साथ अपनी छह मुकाबलों में से चार हार चुकी है।

सैफ चैंपियनशिप : नेपाल के खिलाफ लय बरकरार रखना चाहेगा भारत

एजेंसी। बेंगलुरु

भारतीय पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम शनिवार को यहां श्री कांतिरवा स्टेडियम में जब नेपाल से भिड़ेगी तो उसका इरादा जीत की लय बरकरार रखने और सैफ चैंपियनशिप के सेमीफाइनल के करीब पहुंचने का होगा। ब्लू टाइगर्स ने बुधवार को अपने पहले ग्रुप-स्टेज मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 4-0 से हराया, इसके बाद टूर्नामेंट के शुरूआती मैच में कुवैत ने नेपाल को 3-1 से हराया। इगोर स्टिमैक की टीम ने एएफसी एशियन कप के लिए बड़ी ऊर्जा के साथ अपनी तैयारी शुरू कर दी है और उनका लक्ष्य नेपाल के खिलाफ एक और प्रभावशाली प्रदर्शन के साथ अपना आत्मविश्वास बढ़ाना होगा। दूसरी ओर, गोरखालिस को फॉर्म में चल रहे मेजबानों के खिलाफ कड़ी मेहनत करनी होगी क्योंकि वे प्रतियोगिता में अपनी पहली जीत हासिल करना चाहते हैं। आमने-सामने के रिकॉर्ड के मामले में दक्षिण एशियाई क्षेत्रों के अपने विरोधियों पर भारत का पलड़ा भारी है। दोनों टीमें पहले 15 बार एक-दूसरे का सामना कर चुकी हैं, जिसमें ब्लू टाइगर्स 10 बार विजयी रहे हैं, जबकि नेपाल केवल एक बार जीतने में कामयाब रहा है। बाकी चार मैच ड्रॉ पर खत्म हुए है। हालिया पांच मुकाबलों में, ब्लू टाइगर्स ने चार बार जीत हासिल की है, जबकि दूसरा गेम ड्रॉ रहा। दोनों टीमों के बीच नवीनतम मुकाबला 2021 में सैफ चैंपियनशिप फाइनल के दौरान हुआ, जहां भारत 3-0 के ठोस स्कोर के साथ विजयी रहा था।

यादगार टी20 विश्व कप जीत में और 2011 विश्व कप के दौरान

धोनी को मुझ पर भरोसा था : युवराज

एजेंसी। नई दिल्ली

युवराज सिंह...एक ऐसा नाम जिसने भारतीय क्रिकेट टीम को 2007 टी20 विश्व कप और 2011 वनडे विश्व कप दिलाने में अहम भूमिका निभाई। बल्ले के साथ-साथ गेंद से भी वह चमके। उन्होंने 10 जून, 2019 को अपने शानदार करियर को अलविदा कह दिया था। युवराज ने 40 टेस्ट, 304 वनडे और 58 टी20आई मैच खेले और 2000 में भारत की अंडर-19 विश्व कप जीत, फिर उसी साल आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी का भी हिस्सा भी रहे। 2007 में भारत की टी20 विश्व कप जीत में और 2011 विश्व कप के दौरान युवराज का योगदान हमेशा क्रिकेट प्रशंसकों की यादों में रहेगा। युवराज, जिन्होंने कैंसर से लड़ाई लड़ी और क्रिकेट के मैदान पर वापसी की, ने हाल ही में एक इंटरव्यू में खुलासा किया कि वह 2019 विश्व कप भी खेलना चाहते थे, लेकिन तब के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने उन्हें बता दिया था कि वो योजनाओं में शामिल नहीं हैं।

इसके अलावा युवराज ने बताया कि 2011 वर्ल्ड कप तक धोनी को उन पर बहुत भरोसा था, लेकिन बाद में चीजें बदल गईं। युवराज सिंह और एमएस धोनी ने भारत के लिए कुछ यादगार साझेदारियां कीं। धोनी ने युवराज की अंशकालिक गेंदबाजी से भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराया। धोनी के नेतृत्व में युवराज ने 2011 विश्व कप में 15 विकेट लिए थे। 2011 तक भारतीय टीम के अहम सदस्य रहे युवराज को कैंसर से वापसी के बाद उसी प्रदर्शन को दोहराना मुश्किल हो गया।

41 वर्षीय युवराज ने कहा, 2011 विश्व कप तक, एमएस को मुझ पर बहुत भरोसा था और वह मुझसे कहते थे कि 'तुम मेरे मुख्य खिलाड़ी हो'। लेकिन बीमारी से वापस आने के बाद खेल बदल गया और टीम में बहुत सारे बदलाव हुए। जहां तक 2015 विश्व कप का सवाल है, आप वास्तव में किसी चीज पर सटीक इशारा नहीं कर सकते। इसलिए यह एक बहुत ही व्यक्तिगत कॉल है। युवराज ने कहा, रतो मैं समझ गया कि एक कप्तान के रूप में कभी-कभी आप हर चीज को सही नहीं ठहरा सकते क्योंकि दिन के अंत में आपको यह देखना होता है कि देश कैसा प्रदर्शन करता है।

इसके अलावा उन्होंने 2017 में टीम में वापसी की तो तत्कालीन कप्तान विराट कोहली ने उनका समर्थन कैसे किया। युवराज 2019 विश्व कप में खेलना चाहते थे लेकिन उन्हें टीम की ओर से 2017 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के तुरंत बाद बाहर कर दिया गया। युवराज ने कहा, जब मैंने वापसी की तो विराट कोहली ने मेरा समर्थन किया। अगर उन्होंने मेरा समर्थन नहीं किया होता तो मैं वापसी नहीं कर पाता। लेकिन तब वह धोनी ही थे जिन्होंने मुझे 2019 विश्व कप के बारे में सही तस्वीर दिखाई कि चयनकर्ता आपकी ओर नहीं देख रहे हैं। उसने मुझे असली तस्वीर दिखाई। उसने मुझे स्पष्टता दी। वह जितना कर सकता था उसने उतना किया।

NEWS इन ब्रीफ

ह्वाइट हाउस के डिनर में सिर्फ तीन भारतीय कारोबारी आमंत्रित

नई दिल्ली। ह्वाइट हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सम्मान में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा आयोजित राजकीय रात्रिभोज में केवल तीन भारतीय व्यवसायियों मुकेश अंबानी, आनंद महिंद्रा और निखिल कामथ को निमंत्रण भेजा गया था। डेडलाइन की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए ह्वाइट हाउस राजकीय डिनर की अतिथि सूची में कई मनोरंजन और मीडिया हस्तियां शामिल हैं, जिनमें नेटफ्लिक्स की बेला बजारिया, यूनिवर्सल की डोना लैंगली, निर्देशक एम. नाइट श्यामलन, वासरमैन मीडिया ग्रुप के के.सी. वासरमैन और जेम्स मडरेक शामिल हैं। इसके अलावा सूची में ओपनएआई के सीईओ सैम अल्टमैन, एप्पल के सीईओ टिम कुक और गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई का भी नाम है।

पंजाब नेशनल बैंक से 100 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का मामला

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) से संबद्ध 100.30 करोड़ रुपये की कथित धोखाधड़ी के संबंध में आईएलएंडएफएस एनर्जी डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड के खिलाफ मामला दर्ज कर तीन शहरों में उसके परिसरों पर छापे मारे। अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया, सीबीआई ने आपराधिक षड्यंत्र, धोखाधड़ी और बैंक से प्राप्त ऋणों के उपयोग में धन के हेरफेर और अन्य अनियमितताओं के लिए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के प्रावधानों के तहत कंपनी और उसके निदेशकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

भारत को वैश्विक डिजिटल इनोवेशन हब के रूप में मजबूत करेगा यूएस : नैसकॉम

एजेंसी। नई दिल्ली

विकासशील देशों में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) के विकास और तैनाती को सक्षम करने के लिए अमेरिका और भारत के बीच साझेदारी भारत को एक वैश्विक डिजिटल इनोवेशन हब के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर प्रदान करेगी। यह अन्य देशों के लिए अनुकरणीय मॉडल है। यह बात नैसकॉम की ओर से कही गई है। संस्था की ओर से कहा गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी समावेशी विकास, प्रतिस्पर्धी बाजारों को बढ़ावा देने और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा के लिए डीपीआई के कार्यान्वयन के लिए वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने के लिए मिलकर काम करने का इरादा रखते हैं। नैसकॉम ने एक बयान में कहा, यह साझेदारी भारत के सफल कार्यान्वयन का लाभ उठाते हुए विकासशील देशों में डीपीआई के विकास और तैनाती के माध्यम से खुली और समावेशी डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। अमेरिका और भारत गोपनीयता, डेटा सुरक्षा और बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए उचित सुरक्षा उपायों सहित मजबूत डीपीआई के विकास और तैनाती को आगे बढ़ाने के लिए एक साथ साझेदारी करने और प्रयासों को संरेखित करने का पता लगाएंगे। भारतीय आईटी उद्योग के शीर्ष निकाय ने कहा कि दोनों देश जिम्मेदार एआई की दिशा में काम करेंगे, इसका लक्ष्य एआई शिक्षा को आगे बढ़ाना, व्यावसायिक अवसरों को बढ़ावा देना और भेदभाव और पूर्वाग्रह से संबंधित चिंताओं का समाधान करना है। नैसकॉम एआई के नेतृत्व वाली तकनीकी प्रगति का लाभ उठाने और उसे आगे बढ़ाने, सभी क्षेत्रों में नवाचार और विकास को बढ़ावा देने के लिए पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ मिलकर काम कर रहा है। इसमें कहा गया है, अत्यधिक कुशल पेशेवरों की प्रचुरता, संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और दूरदर्शी मानसिकता के साथ, भारत एआई प्रगति में अग्रणी बन गया है। जनरेटिव एआई के जिम्मेदार उपयोग पर नैसकॉम के व्यापक दिशानिर्देश एआई के क्षेत्र में नैतिक और जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देने भारत की प्रतिबद्धता का उदाहरण हैं।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 596 अरब डॉलर के पार

नई दिल्ली। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 16 जून को समाप्त सप्ताह में 2.35 अरब डॉलर बढ़कर 596.098 अरब डॉलर पर पहुंच गया। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के शुक्रवार को जारी आंकड़ों में यह बात सामने आई है। इससे पहले के सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 1.318 अरब डॉलर घट गया था। आंकड़ों के अनुसार, 16 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति भी 2.578 अरब डॉलर बढ़कर 527.651 अरब डॉलर पर पहुंच गई। वहीं, 9 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति में 1.128 अरब डॉलर की गिरावट रही थी।

कच्चा तेल 74 डॉलर प्रति बैरल के करीब

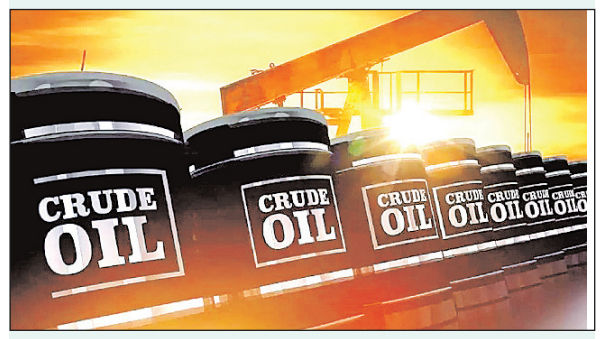

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव जारी है। ब्रेंट क्रूड का भाव 74 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 70 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शनिवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के अंतिम दिन ब्रेंट क्रूड 73.85 डॉलर प्रति बैरल और वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 69.16 डॉलर प्रति बैरल पर स्थिर है।

बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस पहला जनरल इंश्योरेंस फेस्टिवल ऑफ इंडिया को आयोजित करेगा

रांची। भारत के प्रमुख निजी सामान्य बीमाकर्ताओं में से एक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस, जनरल इंश्योरेंस फेस्टिवल ऑफ इंडिया (जी.आई.एफ.आई.) की मेजबानी करेगा, जो बीमा उद्योग में आयोजित होने वाला अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है। इस एक दिवसीय आयोजन में प्रसिद्ध वक्ताओं द्वारा प्रेरक सत्र, एक लाइफस्टाइल क्षेत्र, प्रसिद्ध संगीतकार प्रीतम द्वारा लाइव कार्यक्रम, कॉमेडियन सुनील ग्रोवर द्वारा एक मनोरंजन का वर्ग और कई अन्य अनुभवात्मक गतिविधियों जैसी विभिन्न इंटरैक्टिव गतिविधियां शामिल होंगी। फेस्टिवल के हिस्से के रूप में, कंपनी ने सामान्य बीमा एजेंटों के लिए जी.आई.एफ.आई. अवाड्र्स नामक एक पुरस्कार समारोह की भी घोषणा की है, जहाँ पूरे उद्योग में स्वास्थ्य और सामान्य बीमा सलाहकार खुद को जी.आई.एफ.आई. पुरस्कारों के लिए नामांकित कर सकते हैं। यह कार्यक्रम 3 जुलाई 2023 को पुणे में आयोजित किया जायेगा। यह कंपनी भारत में उच्चतम श्रेणी के सामान्य बीमा एजेंटों को मान्यता प्रदान करने और सामान्य बीमा उद्योग के प्रति उनकी कड़ी मेहनत और जुनून का सम्मान करने के लिए भारत में जी.आई.एफ.आई. अवाड्र्स प्रदान करने वाली पहली कंपनी होगी। इस आयोजन के निर्णायक डॉ. एस प्रकाश, प्रबंध निदेशक, स्टार हेल्थ इंश्योरेंस, श्रीमती एलिस जी वैद्यन, पूर्व अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, और श्री नीलेश साठे, पूर्व सदस्य, आई.आर.डी.ए.आई. होंगे। कंपनी नीचे सूचीबद्ध श्रेणियों के लिए स्वयं को नामांकित करने के लिए पूरे भारत के सामान्य एवं स्वास्थ्य बीमा उद्योग के सलाहकारों को आमंत्रित कर रही है:1. भारत का सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य बीमा सलाहकार 2. भारत का सर्वश्रेष्ठ वाहन बीमा सलाहकार 3. भारत में सर्वश्रेष्ठ संपत्ति बीमा सलाहकार 4. भारत में सर्वश्रेष्ठ मल्टीलाइन बीमा सलाहकार 5. भारत में सर्वश्रेष्ठ महिला बीमा सलाहकार।

3 करोड़ के पैकेज के साथ एलपीयू ने बनाया प्लेसमेंट का एक और रिकॉर्ड

नई दिल्ली। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एलपीयू) की 2018 की कक्षा के छात्र यासिर एम. ने 3 करोड़ रुपए हासिल कर इतिहास रच दिया है। वह एआई/एमएल परियोजनाओं पर काम करेंगे, जो उद्योग में अत्यधिक प्रतिष्ठित क्षेत्र है। एलपीयू से ग्रेजुएशन करने के बाद उन्होंने कोई और डिग्री हासिल नहीं की। वह अपनी सफलता का श्रेय एलपीयू में मिले मजबूत फंडामेंटल्स को देते हैं। यह उपलब्धि एलपीयू द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता का प्रमाण है। यासिर की सफलता कोई अकेली सफलता नहीं है, क्योंकि एलपीयू के हजारों पूर्व छात्र भी अच्छे पैकेज पर काम कर रहे हैं। दुनिया भर की अन्य फॉर्च्यून 500 कंपनियों जैसी कंपनियों में 1 करोड़ और उससे अधिक का पैकेज पर एलपीयू के पूर्व छात्र कार्यरत हैं।

एयरलाइन को फिर से उड़ान भरने के लिए चाहिए 425 करोड़ रुपये

एजेंसी। नई दिल्ली

गो फर्स्ट के समाधान पेशेवर शैलेंद्र अजमेरा ने एयरलाइंस फाइनेंसरों से अंतरिम वित्त में 425 करोड़ रुपये की मांग की है, ताकि एक पुनरुद्धार योजना बनाई जा सके और एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने में मदद मिल सके। बता दें कि गो फर्स्ट के दिवालिया मामले में शैलेंद्र अजमेरा को समाधान पेशेवर (आरपी) के रूप में नियुक्त किया गया है। संकट में फंसी विमानन कंपनी के कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) ने यह फैसला किया है। ऋणदाताओं ने उन्हें गो फर्स्ट के लिए आरपी (समाधान पेशवर) बनाने के लिए एनसीएलटी से मंजूरी ली है। सूत्रों ने हवाले से मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि भविष्य में विमानों के लिए दुरुस्त इंजनों की उपलब्धता और टिकट रद्द होने जैसी कुछ आकस्मिकताओं के आधार पर वित्तपोषण की जरूरत और बढ़ सकती है। बताया गया है कि सप्ताह की शुरूआत में हुई एक बैठक में गो फर्स्ट के लेनदारों की समिति के समक्ष वित्त पोषण से जुड़ा यह प्रस्ताव रखा गया। बता दें कि गो फर्स्ट के कर्जदाताओं की समिति में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, आईडीबीआई बैंक और ड्यूश बैंक शामिल हैं। अजमेरा जो कर्जदाताओं की समति की ओर से समर्थित है ने अब तक इस मामले में आधिकारिक तौर पर कोई टिप्पणी नहीं है। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया समेत अन्य बैंकों ने भी इस पर फिलहाल कोई टिप्पणी नहीं की है। गो फर्स्ट को देश के विमानन क्षेत्र के नियामक नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से एयरलाइन का परिचालन फिर से शुरू करने के लिए अपनी मंजूरी लेनी है। पर यह मंजूरी एयरलाइन के लिए वित्तपोषण की उपलब्धता सुनिश्चित होने के बाद ही मिल पाएगी।

विदेश

कोविड का जैविक हथियार के रूप में नहीं हुआ इस्तेमाल

न्यूयॉर्क। कोविड-19 की उत्पत्ति पर अमेरिकी सरकार की नई अवगीकृत खुफिया रिपोर्ट में भी यह बात स्पष्ट नहीं हो सकी है कि दुनिया भर में 76.8 करोड़ से अधिक लोगों को संक्रमित करने वाली और 69 लाख से अधिक मौतों के लिए जिम्मेदार महामारी की शुरूआत एक प्रयोगशाला रिसाव का परिणाम थी या किसी संक्रमित जानवर से वायरस इंसानों तक पहुंच गया। हालांकि सभी का मानना है कि इसका जैविक हथियार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया गया। महामारी के दो साल से अधिक समय बाद, कोविड-19 की उत्पत्ति पर अस्पष्टता बनी हुई है। यह वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिकों और राजनेताओं के साथ एक राजनीतिक और वैज्ञानिक बहस का विषय रहा है कि कोरोनोवायरस का स्रोत एक संक्रमित जानवर या प्रयोगशाला की घटना का परिणाम था। रिपोर्ट में कहा गया है कि महत्वपूर्ण बात यह है कि लगभग सभी खुफिया एजेंसियों का आकलन है।

भारत में गूगल 10 अरब डॉलर का निवेश करेगी : सुंदर पिचाई

वाशिंगटन/नई दिल्ली, 24 जून (हि.स.)। अमेरिकी बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी गूगल भारत में डिजिटाइजेशन के लिए 10 अरब डॉलर (करीब 82 हजार करोड़ रुपये) का निवेश करेगी। गूगल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सुंदर पिचाई ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात के बाद यह जानकारी दी। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने घोषणा की है कि कंपनी गुजरात के गिफ्ट सिटी में अपना ग्लोबल फिनटेक ऑपरेशन सेंटर खोलेगी। प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद पिचाई ने कहा कि कंपनी अपने 10 अरब डॉलर के डिजिटलीकरण फंड के माध्यम से भारत में निवेश करना जारी रखेगी। सुंदर पिचाई ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से मिलना उनके लिए सम्मान की बात है। पिचाई ने डिजिटल इंडिया के लिए प्रधानमंत्री के नजरिये की सराहना की। पिचाई ने कहा कि डिजिटल इंडिया के लिए प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण उनके समय से कहीं आगे है। मैं अब इसे एक ब्लूप्रिंट के रूप में देखता हूं, जिसे अन्य देश करना चाह रहे हैं।वहीं, प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने ट्वीट कर बताया कि प्रधानमंत्री मोदी और सुंदर पिचाई के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक और रिसर्च एंड डवलपमेंट को बढ़ावा देने के उपायों पर चर्चा हुई।

मोदी ने अमेरिकी व्यवसायियों से की भारत में निवेश की अपील

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी व्यापारिक समुदाय से सीधी अपील में कहा है कि यह समय भारत में निवेश का है, क्योंकि भारती और अमेरिका की सरकारों ने इसके लिए अनुकूल माहौत तैयार किया है। इसके पहले प्रधान मंत्री ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में टेक्नोलॉजी हैंडशेक कार्यक्रम में राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ अमेरिका और भारत के प्रमुख सीईओ से मुलाकात की। इसमें गूगल के सुंदर पिचाई, माइक्रोसॉफ्ट के सत्या नडेला, ओपनएआई के सैम ऑल्ट, एफएमसी कॉर्पोरेशन के मार्क डगलस, रिलायंस के मुकेश अंबानी, महिंद्रा के आनंद महिंद्रा आदि शामिल थे। कार्यक्रम में दोनों देशों की कंपनियों, व्यवसायों, निमार्ताओं और नवप्रवर्तकों को संदेश दिया गया कि यही वह समय है, जब आप भारत में निवेश कर सकते हैं, क्योंकि इसके लिए अमेरिका व भारत की सरकारों ने अनुकूल कार्य किया है।

ऑस्ट्रेलिया सरकार ने भारतीयों के लिए वीजा नियमों में दी ढील

एजेंसी। सिडनी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे में दोनों मुल्कों के बीच कई अहम समझौते हुए जिनमें इमीग्रेशन के मुद्दे पर विशेष रूप से हस्ताक्षर हुए। ऑस्ट्रेलिया इमीग्रेशन ने भारतीय विद्यार्थियों के लिए 1 जुलाई से वीजा नियमों में कई बदलाव किए हैं। जहां अब तक सालाना 1,60,000 नए वीजा प्रदान करने का लक्ष्य था वहीं अब इसे बढ़ाकर 1,90,000 कर दिया गया है। ताजा एग्रीमैंट के अनुसार भारतीय छात्र जो तृतीयक शिक्षा में ग्रैजुएशन की पढ़ाई कर रहे हैं, वे अब शिक्षा पूर्ण करने के बाद बिना किसी वीजा स्पांसरशिप के आस्ट्रेलिया में 8 साल तक का वर्क परमिट हासिल कर सकेंगे। इसके अलावा टैम्परेरी ग्रैजुएट सब क्लास 485 वीजा धारकों के लिए एक से दो साल के अतिरिक्त पोस्ट स्टडी वर्क राइट्स भी मिलेंगे। पार्ट टाइम काम करने वाले अब 40 घंटे की बजाय 48 घंटे प्रति सप्ताह काम कर सकेंगे। इमीग्रेशन के इस नए पायलट प्रोग्राम को मैट्स नाम से संबोधित किया गया है।

योजना

टीटीपी के ऐलान से उड़ी पाक-चीन की नींद

बलूचिस्तान में बनाएगा अपना नया राज्य

एजेंसी। इस्लामाबाद

पाकिस्तान में आंतकी संगठन व तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने अपने नए कदम से चीन और पाकिस्तान की नींद उड़ा दी है। टीटीपी ने ऐलान किया है कि वह बलूचिस्तान के दक्षिण-पश्चिमी प्रांत में एक समानांतर प्रांत) बनाने की अपनी योजना पर आगे बढ़ रहा है। पिछले हफ्ते मिली चेतावनी से चीन के बीआरआई-सीपीईसी प्रोजेक्ट पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। अगर टीटीपी अपनी योजना को पूरा करता है तो न केवल पाकिस्तान सरकार का सिरदर्द बढ़ेगा बल्कि इससे बीजिंग में भी चिंता बढ़ने की संभावना है क्योंकि बलूचिस्तान बंदरगाह शहर ग्वादर का घर है। टीटीपी की नया प्रांत बनाने की उसकी योजना चीन और पाकिस्तान की योजनाओं को और नुकसान पहुंचाएगी और इससे शी जिनपिंग के नाराज होने की अधिक संभावना है। जिनपिंग ने कई मौकों पर बलूच विद्रोहियों द्वारा चीनी नागरिकों को निशाना बनाए जाने के बाद पाकिस्तान को अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्ती से कहा है। पिछले साल कराची विश्वविद्यालय पर हमले में तीन चीनी शिक्षाविदों की मौत हो गई थी। इस मामले ने खासा तूल पकड़ा था। साथ ही चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पसंदीदा परियोजना, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का भी केंद्र है। निक्केई एशिया ने एक रिपोर्ट में कहा कि पाकिस्तान तालिबान के ऐसे कदम चीन और पाकिस्तान के लिए एक बड़ी समस्या बन जाएंगे। इफ्क के तहत अरबों डॉलर की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को बहाल करते समय मुश्किलें आएंगी। चीनी इंजीनियरों को बलूच अलगाववादियों के हमलों का सामना करना पड़ा है और अब पाकिस्तान तालिबान के एक नए खतरे के रूप में उभरने से उन्हें अपनी सुरक्षा का डर सता रहा है। आर्थिक कारणों से पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियां परियोजनाओं में शामिल नहीं होने वाले चीनी नागरिकों और व्यवसाय चलाने वालों को सुरक्षा प्रदान करने में नाकाम है। 'कलात-मकरान' प्रांत स्थापित करने की योजना रिपोर्ट में कहा गया है कि टीटीपी अपना खुद का 'कलात-मकरान' प्रांत स्थापित करने की योजना बना रहा है और उस क्षेत्र में एक समानांतर सरकार बनाएगा। यदि यह सरकार बनती है, तो यह 760 किलोमीटर की तटरेखा सहित 40% से अधिक बलूचिस्तान-क्षेत्र को कवर करेगी।

चीन ने सूडान से अपने 1,508 नागरिकों को निकाला है

बीजिंग। चीनी विदेश मंत्रालय के कांसुलर मामले विभाग की निदेशक वु शी ने हाल में बताया कि इस अप्रैल में सूडान में सशस्त्र मुठभेड़ शुरू होने के बाद विदेश मंत्रालय आदि विभागों ने आपात अभियान चलाकर सुरक्षित रूप से सूडान से अपने 1508 नागरिकों को निकाला। वु शी ने लिनच्या नंबर 7 नामक सालोन पर नये युग में चीन के कांसुलर कार्य का परिचय देते हुए यह बात कही। वु शी ने बताया कि चीनी नागरिकों के अलावा चीनी पक्ष ने अपनी क्षमता के अंदर सक्रियता से अन्य देशों के नागरिकों की सहायता की और 200 से अधिक पाक नागरिकों समेत अन्य आठ देशों के नागरिकों को निकालने में मदद की। वु शी के अनुसार नये युग के 10 साल में विदेश मंत्रालय ने लगभग 20 बार विदेशों में फंसे चीनी नागरिकों को आपात रूप से निकालने की कार्रवाइयां की हैं। वु शी ने इयह भी बताया कि चीन ने अब 152 देशों के साथ विभिन्न किस्मों के पासपोर्ट के लिए वीजा की छूट संधि पर हस्ताक्षर किये हैं।

ब्लिंकन के बीजिंग दौरे बाद पलटा अमेरिका,रिपोर्ट में कहा

चीन की वुहान लैब से नहीं लीक हुआ कोरोना

एजेंसी। वाशिंगटन

विदेश मंत्री एंटी ब्लिंकन के चीन दौरे के बाद अमेरिकी अधिकारियों ने एक खुफिया रिपोर्ट जारी करके कोविड-19 के चीन की एक प्रयोगशाला से लीक होने के कुछ बिंदुओं को खारिज कर दिया है । रिपोर्ट में दोहराया गया है कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों की राय इसको लेकर विभाजित है कि महामारी शुरूआत कैसे हुई। रिपोर्ट शुक्रवार को अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के कहने पर जारी की गई। कांग्रेस ने मार्च में एक विधेयक पारित करके वुहान विषाणु विज्ञान संस्थान से संबंधित खुफिया रिपोर्ट को खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने के लिए अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी को 90 दिनों का वक्त दिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन के तहत काम करने वाले खुफिया अधिकारियों पर सांसद कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर अधिक जानकारी जारी करने के लिए दबाव बनाते रहे हैं। हालांकि अधिकारियों की दलील रही है कि स्वतंत्र समीक्षा में चीन द्वारा रोड़ा अटकाने की वजह से यह पता लगाना शायद नामुमकिन हो गया है कि महामारी की शुरूआत कैसे हुई थी। नयी रिपोर्ट ने रिपब्लिकन पार्टी से जुड़े कुछ लोगों को नाराज कर दिया है। उनकी दलील है कि प्रशासन गलत तरीके से गुप्त सूचना और अनुसंधानकर्ताओं को रोक रहा है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल के दौरान अमेरिका में राष्ट्रीय गुप्तचर निदेशक रहे जॉन रैटक्लिफ ने बाइडन प्रशासन पर लगातार उलझन में रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि विज्ञान, गुप्तचर और सामान्यबोध वायरस के प्रयोगशाला से लीक होने के सिद्धांत का ही समर्थन करता है। इस साल के शुरू में ऊर्जा विभाग की खुफिया शाखा ने रिपोर्ट जारी करके प्रयोगशाला संबंधी घटना की दलील दी थी। हालांकि शुक्रवार को जारी रिपोर्ट कहती है कि खुफिया समुदाय को इस संबंध में और कोई जानकारी नहीं मिली है। चार एजेंसियों का अभी भी मानना है कि वायरस पशु से मनुष्य में फैला जबकि ऊर्जा विभाग और संघीय जांच एजेंसी (एफबीआई) का मानना है कि वायरस प्रयोगशाला से लीक हुआ। सीआईए और अन्य खुफिया एजेंसी ने इस बारे में कोई आकलन नहीं किया है।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

NEWS इन ब्रीफ

फोगाट हत्याकांड मामले में सुधीर सागवान को मिली जमानत

पणजी। गोवा की एक अदालत ने हरियाणा की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता सोनाली फोगाट की हत्या के मामले में मुख्य आरोपी सुधीर सागवान को जमानत दे दी है। पिछले साल अगस्त में फोगाट (43) अपने दो सहयोगियों के साथ पार्टी करने के बाद अंजुना गांव में मृत मिली थी। दोनों पर आरोप है कि उन्होंने फोगाट को प्रतिबंधित मादक पदार्थ खिला दिया था। जिला एवं सत्र अदालत ने सागवान को शुक्रवार को जमानत दे दी और उसे एक लाख रुपये का मुचलका पेश करने का निर्देश दिया है। सांगवान के वकील ने कहा कि अदालत ने उनके मुवक्किल को राज्य नहीं छोड़कर जाने और हर शुक्रवार को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के समक्ष पेश होने को कहा है। गोवा पुलिस ने सागवान और उसके साथी सुखविंदर सिंह को इस मामले के संबंध में पिछले साल गिरफ्तार किया था।

महबूबा मुफ्ती ने पटना साहिब में मत्था टेका

पटना (बिहार)। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती शनिवार को पटना साहिब पहुंचीं। उन्होंने तख्त श्री हरमंदिर गुरुद्वारा में मत्था टेका और आशीर्वाद लिया। गुरुद्वारा के प्रबंधन कमेटी के सदस्यों ने अंग वस्त्र एवं सिरोपा देकर उन्हें सम्मानित किया। महबूबा मुफ्ती ने आधे घंटे तक गुरुद्वारा धूमा और यहां किए जा रहे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की। मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि भारतवर्ष एक ऐसा देश है, जहां सभी समुदाय हिंदू, मुसलमान, सिख ईसाई सभी एक साथ मिलकर रहते हैं और एक दूसरे के पर्व त्योहार में साथ मिलकर खुशियां मनाते हैं।

बीएसएफ ने भारत-पाक सीमा पर बरामद की दो किलो हेरोइन

बीकानेर। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने राजस्थान के बीकानेर सेक्टर से लगी भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रावला में दो किलोग्राम हेरोइन बरामद की। इसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब 10 करोड़ रुपये आंकी गई है। बीएसएफ सूत्रों के अनुसार शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात यहां तैनात जवानों को पाकिस्तान की ओर से आ रहे ड्रोन की आवाज सुनाई दी। तत्काल प्रभाव से जवानों ने ड्रोन की दिशा में फायरिंग कर इलाके की सर्चिंग शुरू की। इस दौरान दो पैकेटों में हेरोइन बरामद की गई।

15 दल मिले पर दिल किसी का नहीं मिला : अनुराग ठाकुर

एजेंसी। चंडीगढ़

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने देश में महागठबंधन की सभी संभावनाओं को खारिज करते हुए कहा है कि पटना में 15 दल एक साथ तो आए, लेकिन दिल किसी के नहीं मिल पाए। जो लोग खुद एक-दूसरे के खिलाफ हैं वह देश को स्थिर सरकार नहीं दे सकते। अनुराग ठाकुर मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने के अवसर पर शनिवार को पानीपत में करनाल लोकसभा स्तर की रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन पूरी तरह से निजी स्वार्थों से भरा हुआ है। जो लोग निजी स्वार्थों को आगे रखकर काम कर रहे हों, वह देश का भला कैसे कर सकते हैं। अनुराग ठाकुर ने कहा कि देश की जनता वर्ष 2024 में एक

बार फिर से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए तैयार है। हरियाणा की पूर्व हुड्डा सरकार पर कटाक्ष करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि कांग्रेसी जीजा को हरियाणा की पूर्व सरकार ने सबसे अधिक लाभ दिया है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह देश विश्व शक्ति के रूप में उभरा है। उन्होंने मोदी सरकार में हुए विकास कार्यों तथा केंद्र की योजनाओं से हरियाणा को मिले लाभ के बारे में रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने विदेश में भी देश का मान बढ़ाया है जबकि कांग्रेस ने सदा नीचा दिखाने की कोशिश की है।इस अवसर पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में मौजूदा सरकार ने कई योजनाएं लागू की हैं। जिसका लाभ लोगों को मिल रहा है। इस अवसर पर करनाल के सांसद संजय भाटिया, जिला अध्यक्ष अर्चना गुप्ता, राज्य सभा सांसद कृष्णलाल पंवार, प्रदेश महामंत्री वेदपाल एडवोकेट, संदीप जोशी करनाल संसदीय क्षेत्र के सभी विधायक एवं नेता मौजूद थे।

2024 के चुनाव में चेहरा नहीं, जनता के मुद्दे हावी रहेंगे : तेजस्वी यादव

एजेंसी। पटना

बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने शनिवार को कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव किसी एक व्यक्ति के चेहरे पर नहीं बल्कि आम लोगों के मुद्दों पर लड़ा जाएगा। तेजस्वी यादव ने बिहार की समृद्ध विरासत की सराहना करते हुए कहा कि बिहार लोकतंत्र की जन्मभूमि है और यहां कई आंदोलन शुरू हुए।

तेजस्वी यादव ने आगे कहा कि बिहार लोकतंत्र की जन्मस्थली है, जहां बड़े-बड़े आंदोलन हुए हैं। आपातकाल के दौरान देश को दिशा दिखाने का बीड़ा बिहार ने उठाया था। आज जब देश ऐसे ही हालात

से जूझ रहा है तो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के शीर्ष नेताओं का पटना में विपक्ष की बैठक के लिए एक साथ आना बड़ी बात थी। हम यहां अपने लिए इकट्ठा नहीं हुए हैं, बल्कि आम आदमी के हितों के लिए लड़ने और फासीवादी ताकतों को हराने के लिए एकजुट हुए हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि हमारा लक्ष्य देश को एकजुट करना है। अगला चुनाव किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होगा बल्कि यह जनता का चुनाव है।

जब तेजस्वी यादव से पूछा गया कि क्या सीएम अरविंद केजरीवाल इस बैठक से खुश नहीं हैं। इसके जवाब में तेजस्वी यादव ने कहा कि कोई भी असंतुष्ट नहीं है। बता दें कि शुक्रवार को पटना में विपक्षी दलों की बैठक हुई। इस बैठक में समान विचारधार वाले 20 दल एक मंच पर आए। इस बैठक में 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को हराने को लेकर मंथन हुआ।

मणिपुर : 1,095 हथियार, 13,702 गोला-बारूद और 250 बम बरामद

एजेंसी। इंफाल

हिंसा प्रभावित मणिपुर में सुरक्षा बलों की तलाशी अभियान के दौरान अबतक 1,095 हथियार, 13,702 गोला-बारूद और विभिन्न प्रकार के 250 बम बरामद किए गए हैं। मणिपुर पुलिस के केंद्रीय नियंत्रण कक्ष ने यह जानकारी दी। यह हथियार और गोला-बारूद 03 मई की हिंसा के बाद विभिन्न थानों से उपद्रवियों ने लूट लिये थे। एक रिपोर्ट के मुताबिक मणिपुर के विभिन्न पुलिस थानों से उपद्रवियों ने 4,000 से अधिक हथियार लूट लिये थे। पुलिस के अनुसार कुछ स्थानों को छोड़कर अधिकतर जिलों में स्थिति सामान्य है, जहां छिटपुट घटनाओं की खबरें हैं। जिलों में नियमित रूप से जिला सुरक्षा समन्वय समिति की बैठकें आयोजित की जा रही हैं। संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त, फ्लैग मार्च, घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस के अनुसार केंद्रीय बलों की विभिन्न संयुक्त टीमों द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष रूप से पहाड़ी और घाटी जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में जोरदार तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। बिष्णुपुर जिले के तोरबुंग, मामांग, लेइकाई और काकचिंग जिले के जोउ वेंग, टी मुनोमजांग, सुगनू ट्राइबल एवं सेरू पार्ट-3 गांवों में तलाशी अभियान चलाया गया।

जीआर इंफ्रा कंपनी के बनाए जा रहे गंभीरगढ़ में निर्माणाधीन पुल धंसा

एजेंसी। किशनगंज

जिले में ठाकुरगंज प्रखंड अंतर्गत गंभीरगढ़ में निर्माणाधीन पुल, धंस गया। जिसे देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी परी। मामला ठाकुरगंज प्रखंड अंतर्गत गंभीरगढ़ का है। जहां जीआर इंफ्रा कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा (1590 करोड़ की लागत से) अररिया गलगलिया सड़क निर्माण कार्य चल रहा था।स्थानीय लोगो ने बताया कि इसी रूट में कंपनी द्वारा कई पुल का निर्माण भी कराया जा रहा है। जो जांच का विषय है। लोगो ने बताया कि मामले का खुलासा उस वक्त हुआ जब निर्माणाधीन पुल का पाया धंसने के पश्चात आसपास के लोगों की भीड़ धंसे हुए पुल को देखने के लिए पहुंची। पुल धंसने से

संबंधित सवालों से कंपनी में काम कर रहे लोगों से जब कंपनी का नाम और वजह पूछने का प्रयास किया गया तो लोग टालमटोल करने लगे और सवाल से भागने लगे।मौजूद एक व्यक्ति ने कुछ भी बताने से मना कर दिया और आपस में ही बात कर रहे थे कि आखिर किस तरीके से धंसे हुए पुल को ऊपर किया जा सकेगा। इसको भ्रष्टाचार न समझा जाए तो और क्या समझा जाए।

निर्माणाधीन पुल धंसने से क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है और कंपनी द्वारा कराए जा रहे कार्य में गुणवत्ता को लेकर के भी कई सवाल खड़े हो रहे हैं। अब देखने वाली दिलचस्प बात यह रहेगी कि आखिर जांच के बाद किन दोषियों पर कार्रवाई होगी।

नहीं थम रही हरक सिंह और हरीश रावत की जुबानी जंग

एजेंसी। देहरादून

कांग्रेस के दो वरिष्ठ नेता हरीश रावत और हरक सिंह रावत के बीच जुबानी जंग जारी है। इस बार हरीश रावत पर हरक सिंह रावत ने हमला बोला है। हरक सिंह रावत ने हरीश रावत को 'कलयुगी राम' और खुद को 'कलयुगी भरत' बता डाला है। दरअसल, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत का स्टिंग प्रकरण एक बार फिर से चचाओं में है। साल 2016 का बहुचर्चित स्टिंग ऑपरेशन मामला एक बार फिर से सामने आने के बाद उत्तराखंड की सियासत में हलचल तेज हो गई है। इस बहुचर्चित स्टिंग प्रकरण में सीबीआई ने हरीश रावत, हरक सिंह रावत, उमेश कुमार और मदन बिष्ट को नोटिस जारी किया है।

सीबीआई ने हाईकोर्ट में चारों के वॉयस सैंपल लेने की अनुमति के लिए प्रार्थना पत्र दिया था। वहीं, जबसे यह पूरा प्रकरण हुआ है तब से आज तक हरीश रावत और हरक सिंह रावत के बीच सब कुछ सामान्य नहीं हो पाया है। समय-समय पर दोनों बड़े नेता एक-दूसरे पर निशाना साधते रहते हैं। कुछ दिन पहले ही हरीश रावत ने खुद को 'राम' और हरक सिंह रावत को 'भरत' बताते हुए कहा था कि 'भरत' ने कभी 'राम' की सरकार गिराने की कोशिश नहीं की।

बीजेपी नौ साल की उपलब्धियों का करेगी बखान, जुलाई में मेगा इवेंट, कहा

लोस क्षेत्रों में कलस्टर बना जनसंपर्क अभियान चलाएगी

एजेंसी। जयपुर

बीजेपी ने 2024 के लोकसभा चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है और पार्टी के वरिष्ठ नेता मोदी सरकार की नौ साल की उपलब्धियों पर बात करने के लिए अलग-अलग राज्यों का दौरा कर रहे हैं। राजस्थान भी 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए तैयार हो रहा है। हाल ही में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और सांसद पूनम महाजन, पिछले नौ वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए, जयपुर में थे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री अमित शाह और राजनाथ सिंह सहित पार्टी और सरकार के शीर्ष अधिकारियों का

एक महीने के भीतर रेगिस्तानी राज्य में दौरा तय किया गया है, जहां वे जनता से जुड़ेंगे और मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाएंगे। पीएम मोदी पिछले आठ महीनों में छह दौरे कर चुके हैं, जिससे पता चलता है कि नेतृत्व राजस्थान को लेकर कितना गंभीर है, जहां दिसंबर 2023 में विधानसभा चुनाव भी होने हैं। पार्टी सूत्रों ने बताया कि लोकसभा चुनाव की तैयारी के साथ-साथ बीजेपी की नजर विधानसभा चुनाव पर भी है और उसकी योजना जातीय समीकरणों को दुरुस्त कर उन क्षेत्रों में अपनी स्थिति सुधारने की है, जहां वह कमजोर है। अगर पीएम मोदी के राजस्थान दौरों की समीक्षा की जाए तो वह लगभग हर डेढ़ महीने में राज्य का दौरा कर रहे हैं और जनसभाओं को संबोधित कर रहे हैं। वे पहली बार 2022 में 30 सितंबर को आबू रोड आए थे। लेकिन, रात दस बजे के बाद लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध के कारण उन्होंने बिना माइक से अपना भाषण दिया। आबू रोड के बाद वे 1 नवंबर को बांसवाड़ा जिले के मानगढ़ धाम आए और एक जनसभा को संबोधित किया। इसके बाद इसी साल 28 जनवरी को उन्होंने आसींद में देवनारायण मंदिर के दर्शन किए। यह गुर्जरों को लुभाने की कोशिश थी। इसके बाद 12 फरवरी को पीएम मोदी ने दौसा के धनावड़ में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के उद्घाटन समारोह में एक जनसभा को संबोधित किया था।

FILMY हलचल

कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' की रिलीज डेट आई सामने

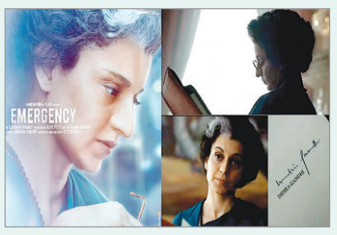

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत की आने वाली फिल्म इमरजेंसी 24 नवंबर को रिलीज होगी। कंगना रनौत ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म 'इमरजेंसी' की रिलीज डेट की घोषणा की है। यह फिल्म 24 नवंबर 2023 को रिलीज की जाएगी। कंगना रनौत ने बताया, इमरजेंसी हमारे इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और डार्केस्ट चैप्टर में से एक है जिसे युवा भारत को जानना जरूरी है। यह एक महत्वपूर्ण कहानी है ,और मैं इस रचनात्मक यात्रा को एक साथ शुरू करने के लिए, प्रतिभाशाली अभिनेता, स्वर्गीय सतीश कौशिक जी, अनुपम जी, श्रेयश, महिमा और मिलिंद की शुक्रगुजार हूं । मैं भारत के इतिहास के इस उल्लेखनीय प्रसंग को बड़े पर्दे पर लाने के लिए उत्साहित हूं। जयहिंद! मणिकर्णिका फिल्म्स प्रस्तुत इमरजेंसी, जिसका निर्देशन और निर्माण कंगना रनौत ने किया है।

शादी के बंधन में बंधे एक्टर कबीर दुहन सिंह

आखिरकर शादी के बंधन में बंध गए एक्टर कबीर दुहन सिंह। क्रीम शेरवानी में दूल्हे बन कबीर अपने जीवन की नई पारी की शुरूआत के लिए काफी खुश नजर आ रहे हैं। लाल रंग के जोड़े में कबीर की हमसफर सीमा भी बेहद खूबसूरत लग रही हैं। फरीदाबाद के एक नामी होटल में परिवारवालों और दोस्तों के बीच हुई इस शादी में हरियाणा की काफी नामीगिरामी हस्तियां शामिल थी। कबीर और उनकी पत्नी सीमा ने मीडिया के सामने अपने फैंस का आभार व्यक्त किया। कबीर ने कहा कि, मैं बहुत खुशी महसूस कर रहा हूं।

सावधान व्हाट्सएप व टेलीग्राम जैसे सोशल मैसेजिंग एप से लोगों को बना रहे शिकार

नौकरी देने का वादा कर लूट रहे साइबर ठग

आरएनएम। नई दिल्ली

साइबर ठगों के भी अच्छे दिन आ गये हैं। बीते माह से तो और भी ज्यादा। साइबर ठगों ने दिल्ली में एक महिला डॉक्टर को 4.47 करोड़ रुपये का चूना लगाया। ये व्हाट्सएप व टेलीग्राम जैसे सोशल मैसेजिंग एप के मार्फत निर्दोष लोगों को निशाना बना रहे हैं। इसी तरह गुरुग्राम के एक युवक को टेलीग्राम चैनल के माध्यम से पार्ट टाइम नौकरी का लालच देकर 25 लाख रुपये ठग लिये। गुरुग्राम के सेक्टर 57 में रहने वाले सुब्रत घोष नामक व्यक्ति युवक को टेलीग्राम एप पर नौकरी का ऑफर मिला था। जब उसने ऑफर में रुचि दिखाई, तो उन्हें एक व्यक्ति का फोन आया। उस व्यक्ति ने सुब्रत घोष से कहा कि उसे हर दिन 'कार्य' मिलेंगे और उसे बस उन लिंक को पांच सितारा रेटिंग देनी होगी जो उसे भेजे जाएंगे।रेटिंग के बदले पैसे

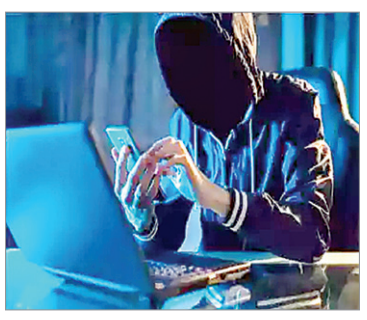

दिये जाएँगे। युवक ने बताया कि फोन करने वाले ने कहा कि हर दिन उसे कुछ टास्क दिए जाएंगे जिसमें फाइव-स्टार रेटिंग देनी होगी, जिसके बदले मुझे पैसे मिलेंगे। कुछ प्रीपेड टास्क भी दिए जाएंगे जिनमें निवेश करना फायदेमंद रहेगा। युवक ने अपनी पुलिस शिकायत में कहा, 10,000 रुपये का निवेश करने और उसके बाद 30 लिंक पर पांच सितारा रेटिंग देने के लिए कहा गया था। जैसा कि ज्यादातर घोटालों में होता है, जब युवक को काम पूरा करने के बाद कुछ पैसे मिले तो उसने साइबर ठगों पर भरोसा कर लिया। फिर साइबर ठगों / स्कैमर्स ने उसे बड़ी रकम निवेश करने के लिए मना लिया, यह कहते हुए कि रिटर्न अधिक होगा। जब घोष ने इस पर संदेह व्यक्त किया, तो घोटालेबाजों ने उन्हें बताया कि उनका अकाउंट फ्रीज कर दिया जाएगा, और उन्हें अब तक कमाई की गई कोई भी राशि नहीं मिलेगी। मैं पैसे नहीं निकाल पाऊंगा। रिपोर्ट के अनुसार युवक ने अपनी शिकायत में कहा, इसी तरह, मैंने 25,29,176 रुपये का निवेश किया था, लेकिन आरोपियों ने मुझे राशि निकालने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने यह भी धमकी दी कि यदि मैंने 12 लाख रुपये और जमा नहीं किए, तो मेरा बैंक अकाउंट हैक कर लिया जाएगा। इसके बाद मैं पुलिस के पास गया। इस तरह की तमाम घटनाएं सामने आ रही हैं जिनमें साइबर धोखेबाजों ने झूठे वादे कर लोगों से उनकी मेहनत की कमाई ठग ली। इसलिए ऑनलाइन पैसा निवेश करने से पहले बेहद सावधान रहना चाहिए और जब पैसे की बात आती है ,तो किसी भी अजनबी पर भरोसा करने से पहले उसका बैकग्राउंड अच्छे से जांच करना हमेशा बुद्धिमानी होती है। इस बारे में जहां रहते हैं वहाँ के साइबर पुलिस से भी राय ले लेना चाहिए ताकि आपके साथ कुछ धोखा - धड़ी हो इसके पहले ही आप सावधान हो जाएँ , बच जाएँ। और हां, किसी भी हालत में किसी को अपनी बैंक संबंधी जानकारी और ओटीपी शेयर न करें। अनजान नंबर से आने वाले कॉल, जो फ्री गिफ्ट या ऑफर देने का दावा करते हैं, उनसे तो बहुत ही सावधान रहिए ।

प्रदीप सिंह की फिल्म 'देवरानी जेठानी' का हुआ धमाकेदार ट्रेलर आउट

भोजपुरी सिने प्रेमियों के लिए एक शानदार फिल्म 'देवरानी जेठानी' का ट्रेलर आउट हो गया है। यह ट्रेलर बी फॉर यू भोजपुरी के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया है जो बेहद आकर्षक और मनोरंजक है। इस फिल्म में केंद्रीय भूमिका दिग्गज अभिनेत्री रिंकू घोष और काजल राघवानी निभा रही हैं, फिल्म में गौरव झा और देव सिंह भी मुख्य भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं। फिल्म के निमार्ता प्रदीप सिंह और प्रतीक सिंह है और निर्देशक अजय कुमार झा हैं। बी फॉर यू मोशन पिक्चर्स और वर्ल्ड वाइड फिल्म प्रोडक्शन कृत फिल्म 'देवरानी जेठानी' के ट्रेलर की बात करें तो इसमें रिंकू घोष जेठानी की भूमिका में नजर आ रही हैं जबकि काजल राघवानी देवरानी बनी है। फिल्म महिला प्रधान है। इसकी कहानी घर-परिवार और संस्कार से जुड़ी हुई है। 3:30 मिनट की इस फिल्म के ट्रेलर की शुरूआत रिंकू घोष से होती है जो शादी कर अपने पति देव सिंह के घर आती है। देव सिंह इस फिल्म में रिंकू सिंह के पति के किरदार में है जबकि गौरव झा का किरदार उनके देवर का है।